www.thearyasamaj.org

आर्य जीवन

Fortnightly per copy Rs. 12/- only 18th March 2017

हैदराबाद का राष्ट्रीय आर्य बुद्धिजीवी एवं विद्वत् सम्मेलन नई आशा और उत्साह के साथ सम्पन्न

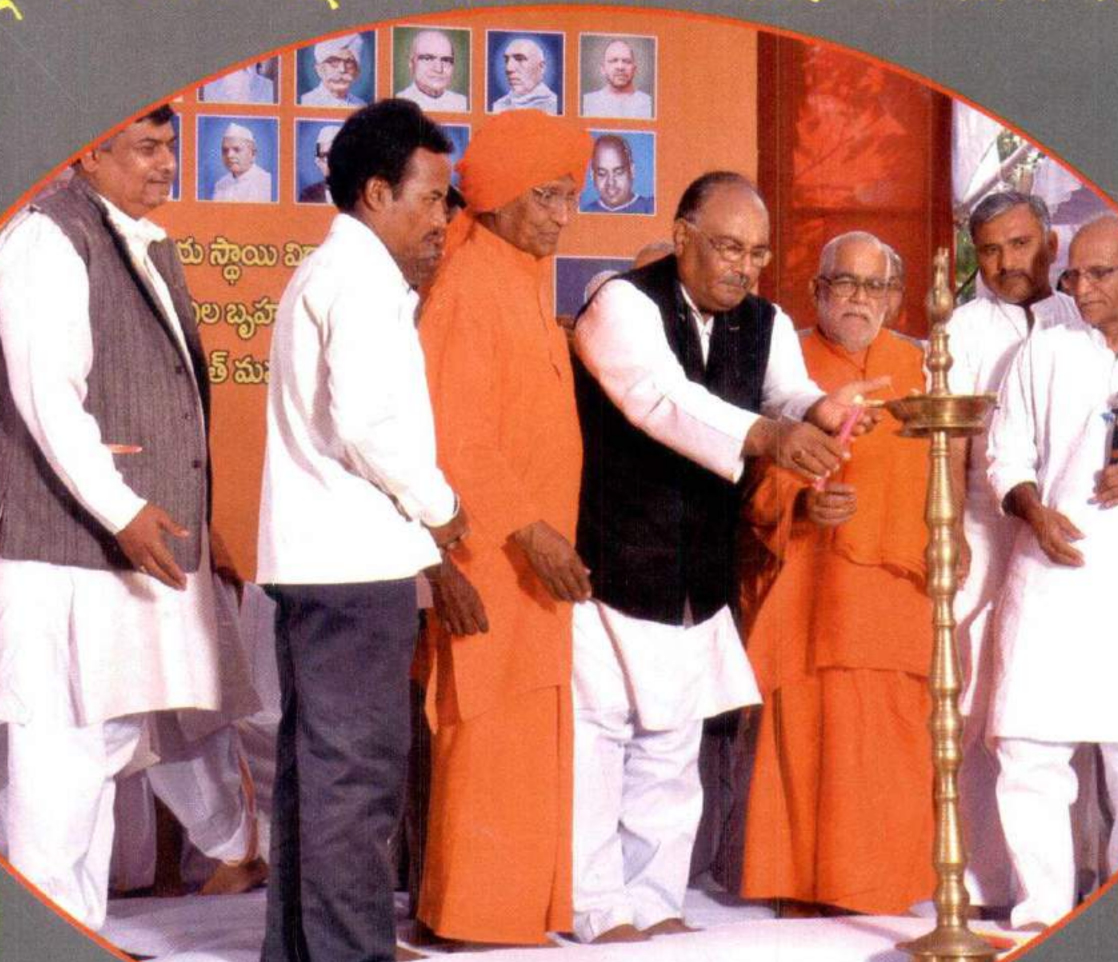

www.thearyasamaj.org

तेलंगाना राज्य व राष्ट्र की समृद्धि के लिए

राष्ट्रभृत् महायज्ञ

ओ३म्

आर्य जीवन

संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प

ఆర్య జీవన్

హిందీ-తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-तेलंगाना
हैदराबाद का मुख पत्र

वर्ष : २५ अंक : ६
दयानन्दाब्द : १९३
सृष्टि संवत् : १९६०८५३११७
वि.सं. : २०७३
दुर्मुखि नाम संवत्सर फाल्गुण मास कृष्ण पक्ष
१८-०३-२०१७

प्रधान सम्पादक
विट्ठलराव आर्य

सम्पादक मण्डल
लक्ष्मण सिंह ठाकुर
डॉ. वसुधा शास्त्री
हरिकिशन वेदालंकार
डॉ. सी.एच. चन्द्रय्या
रामचन्द्र कुमार
अशोक श्रीवास्तव

वार्षिक मूल्य रू. 250-00

कार्यालय
आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-तेलंगाना
महर्षि दयानन्द मार्ग, सुल्तान बाजार, हैदराबाद
दूरभाषः 040-24753827, 66758707, 24756983
फ्याक्सः 040-24557946, 24760030

Email :
aryapratinidhisabhaaptelangana@gmail.com
acharyavithal@gmail.com
aryavithal@yahoo.co.in
Mobile No. : 09849560691

Editor : Vithal Rao Arya
Annual subscription: Rs.250/-

THE VIEWS & THE NEWS PUBLISHED IN THIS ISSUE MAY NOT NECESSARILY BE AGREEABLE TO THE EDITOR

प्रत्येक मनुष्य को पुरुषार्थ पर ध्यान देना चाहिए। इसी के द्वारा क्रियामाण, संचित और प्रारब्ध कर्म की स्थिति सुधरती है। इसी से मनुष्य उत्तम स्थिति को प्राप्त हो कर उन्नति के पात्र बनते है।

हैदराबाद घोषणा

राष्ट्रीय आर्य बुद्धिजीवी एवं विद्वत् सम्मेलन

हैदराबाद का घोषणा पत्र

१. आर्य समाज के विद्वानों एवं बुद्धिजीवियों का हैदराबाद में आयोजित सम्मेलन घोषित करता है कि आर्य समाज देश में पूर्ण शराबबन्दी आन्दोलन चलायेगा। इसके लिए पूरे देश में जन-जागृति अभियान चलाकर व्यापक जन-समर्थन जुटाकर केन्द्र सरकार पर दबाव बनायेगा कि वह पूर्ण शराबबन्दी के लिए राष्ट्रीय नीति घोषित करे और पूरे देश में एक साथ पूर्ण शराब बन्दी लागू करे। आर्य समाज विभिन्न प्रान्तों की सरकारों को भी पूर्ण शराबबन्दी लागू करने के लिए बाध्य करेगा।

२. निरन्तर बढ़ते जा रहे धार्मिक पाखण्ड और अन्धविश्वास के कारण धर्म परायण जनता का शोषण हो रहा है जो भारतीय संविधान की भावना के भी विपरीत है। आर्य समाज धर्म के नाम पर प्रचलित पाखण्ड एवं अन्धविश्वास के विरुद्ध प्रचण्ड अभियान चलायेगा और शास्त्रार्थ परम्परा को पुनर्जीवित करेगा।

३. नर-नारी समता आर्य समाज का महत्त्वपूर्ण विषय रहा है। अतः हर स्तर पर हो रहे नारी उत्पीड़न जैसे कन्या भ्रूण हत्या, दहेज हत्या, बलात्कार, घरेलू हिंसा तथा नारी के अपमान के विरुद्ध आर्य समाज व्यापक जन-जागृति अभियान चलायेगा।

४. अपनी उदरपूर्ति एवं जिह्वा के स्वाद के लिए गौ एवं अन्य पशु-पक्षियों की निर्मम हत्या करके मांस भक्षण से मानव समाज में बढ़ती हुई हिंसा की प्रवृत्ति के विरुद्ध आर्य समाज अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अभियान चलायेगा तथा शाकाहार का व्यापक प्रचार करेगा।

५. आर्य समाज की प्रारम्भिक इकाई अर्थात् स्थानीय आर्य समाज, आर्य समाज के गुरुकुल एवं विद्यालय तथा युवा संगठनों को सक्रिय करने के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, प्रान्तीय सभाओं के माध्यम से महत्त्वाकांक्षी योजना तैयार करेगी और लाखों युवाओं (युवक युवतियों) को आर्य समाज का सदस्य बनाया जायेगा। आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संग एवं वार्षिकोत्सवों में उपस्थिति को प्रभावी बनाने के लिए महिलाओं एवं दलितों को विशेष प्रयत्न करके आर्य समाज में सम्मिलित किया जायेगा।

उपरोक्त हैदराबाद घोषणा पत्र को भारत एवं भारत से बाहर अन्य देशों में कार्य कर रही आर्य समाजों को अपने स्तर पर क्रियान्वित करने के लिए सक्रिय किया जायेगा। क्योंकि इस घोषणा पत्र से आर्य समाज एक बार फिर अपने तेजस्वी स्वरूप में आम आदमी तक पहुँच सकेगा।

हैदराबाद का राष्ट्रीय आर्य बुद्धिजीवी एवं विद्वत् सम्मेलन नई आशा और उत्साह के साथ सम्पन्न

आर्य समाज में नई ऊर्जा व प्राण फूंकने में सम्मेलन सफल रहा

सम्मेलन के विहंगम दृश्य एवं विवरण

आर्य समाज का जन्म वैदिक संस्कृति के संरक्षण और पोषण के लिए हुआ था। आर्य समाज का यह विशाल संगठन महर्षि दयानन्द सरस्वती के गूढ़ चिन्तन और गम्भीर प्रयासों

का ही प्रतिफल है। महर्षि के प्रत्येक विचार का प्रत्यक्ष या परोक्ष सम्बन्ध वेद की संस्कृति पर जाकर मिलता है। इसी संस्कृति का संचार हमारी जीवनचर्या में ठीक वैसे ही होता है जैसे किसी शरीर में रक्त का। इस संस्कृति पर आधारित सिद्धान्त ही हमारे जीवन का मूलाधार है। यहाँ तक कि हमारी राष्ट्रवाद की कल्पना भी भूमण्डलीय संस्कृति पर टिकी है। महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना के साथ ही हम सबको समाज की बुराईयों से लड़ने की प्रेरणा प्रदान की थी तथा एक उत्कृष्ट समाज की परिकल्पना की थी जिसमें बुराई, कटुता, अज्ञान, लेशमात्र न हो। समाज को सर्वांगीण सुन्दर और सुखमय बनाने का माध्यम आर्य समाज को बनाया गया था। सामाजिक बुराईयों, समस्याओं को दूर करना ही आर्य समाज का उद्देश्य है इसीलिए स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज के छठे नियम में स्पष्ट कहा कि "संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है।" लेकिन आज जातिवाद, साम्प्रदायिकता, भ्रष्टाचार, नशाखोरी, कन्या भ्रूण हत्या, महिलाओं पर अत्याचार, धार्मिक

पाखण्ड, शोषण जैसी समस्याओं से समाज त्रस्त है अतः हमें इन समस्याओं पर गम्भीरता से विचार करना है। इन समस्याओं से समाज को कैसे मुक्ति दिलाई जा सकती है इस पर निर्णय करना है और फिर कार्य रूप में परिणत करना है। एक बात तो निश्चित है कि यह कार्य केवल और केवल आर्य समाज ही कर सकता है क्योंकि अन्य कोई भी संस्था इन मुद्दों पर गम्भीर नहीं है।

आज आवश्यकता है उपयोगी आर्य समाजों के निर्माण की अर्थात् आर्य समाज केवल यज्ञ एवं साप्ताहिक सत्संग तक ही सीमित न हों बल्कि वहाँ संस्कृत शिक्षण, संस्कार शिविर, योग शिविर, स्वास्थ्य शिविर एवं पुस्तकालय आदि की गतिविधियाँ

नियमित रूप से चलें। गौहत्या, कन्या भ्रूण हत्या, नशाखोरी, जातिवाद, भ्रष्टाचार जैसी ज्वलन्त समस्याओं पर चिन्तन बैठकें हों। आर्य समाज की आज देश को पहले से भी अधिक आवश्यकता है। अपने लक्ष्य की पूर्ति के लिए अतीत से प्रेरणा लेकर उज्ज्वल वर्तमान और भविष्य का निर्माण करना हमारा लक्ष्य होगा तभी हम महर्षि के स्वप्न को साकार कर सकेंगे। आर्य समाज के कार्यों को सुचारू रूप से चलाने के लिए संगठन का सुदृढ़ होना उसी प्रकार आवश्यक है जैसे आत्मा को अपने कार्य सम्पन्न करने के लिए एक निरोगी शरीर की आवश्यकता पड़ती है। शरीर की समस्त इन्द्रियाँ समन्वय पूर्वक एवं पुष्ट रूप से कार्य करें तभी शरीर को सुदृढ़ माना जा सकता है। आर्य समाज अपने पवित्र दायित्व का तभी निर्वहन कर पायेगा जब हम सबलोग मिलकर संकल्प व्यक्त करें कि स्वार्थी भावनाओं का इस संगठन में कोई स्थान नहीं बनने देंगे। आर्य समाज के कार्यों को अधिक से अधिक शक्ति प्राप्त हो इस उद्देश्य की पूर्ति के

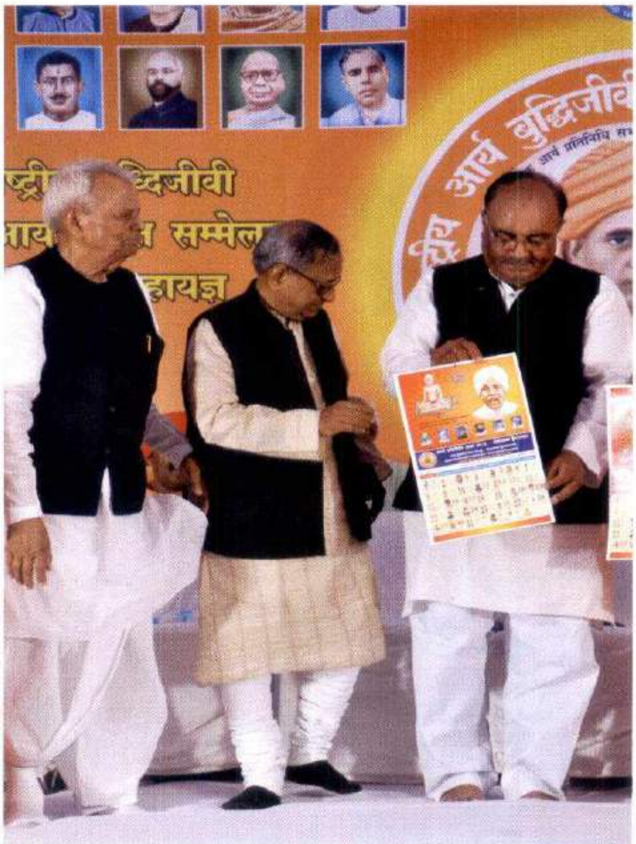

लिए तथा आर्य समाज को सक्रिय, तेजस्वी और प्रभावशाली बनाने के लिए

हैदराबाद की ऐतिहासिक तथा पवित्र भूमि पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा तथा आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश तेलंगाना के संयुक्त तत्वावधान में 2 से 4 फरवरी, 2017 तक भव्य राष्ट्रीय बुद्धिजीवी एवं विद्वत सम्मेलन का आयोजन किया गया। यह आकर्षक तथा बहुउद्देश्यीय आयोजन हैदराबाद में बेगमपेट क्षेत्र के कुन्दन बाग स्थित वैदिक आश्रम कन्या गुरुकुल के विशाल प्रांगण में आयोजित किया गया। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के निर्देशन, आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश+तेलंगाना के प्रधान एवं सार्वदेशिक सभा के मंत्री जुझारू आर्यनेता प्रो. विठ्ठलराव आर्य की दूरदर्शी सोच और उत्कट कर्मठता तथा प्रसिद्ध वैदिक विद्वान आचार्य सोमदेव शास्त्री के

कुशल संयोजन के कारण यह सम्मेलन अभूतपूर्व सफलता को प्राप्त हुआ।

देश के विभिन्न भागों से पधारे वरिष्ठ आर्य संन्यासी, विद्वान, बुद्धिजीवी, आर्यनेता, पुरोहित, गुरुकुलों के आचार्य व आचार्याएँ एवं कर्मठ कार्यकर्ता इस अभूतपूर्व सम्मेलन के साक्षी बनें। वैदिक आश्रम कन्या गुरुकुल के विशाल प्रांगण में स्थित आयोजन स्थल को आर्य समाज के प्रेरणा स्रोत संन्यासियों, विद्वानों तथा आर्यनेताओं के बड़े चित्रों से सजाया गया था। आयोजन स्थल के प्रत्येक स्थान पर स्वामी बिरजानन्द सरस्वती जी, महर्षि दयानन्द सरस्वती

जी, स्वामी श्रद्धानन्द जी, पं. नरेन्द्र जी, श्री गुरुदत्त विद्यार्थी जी, महात्मा हंसराज जी सरीखे विद्वानों एवं आर्य नेताओं के बड़े–बड़े चित्रों को देखकर आगन्तुक महानुभाव भाव–विभोर हो रहे थे। चारों तरफ रंग–बिरंगी लाइटें तथा विभिन्न प्रकार के फूलों एवं ओ३म ध्वजों और सद्‌वाक्य लिखे हुए बैनरों की छटा देखते ही बनती थी। स्वच्छ धवल शामियानों से पूरे आयोजन स्थल को आच्छादित कर दिया गया था। बड़े–बड़े अनेक टी.वी. स्क्रीनों से तथा

ध्वनि विस्तारक यंत्रों से आयोजन स्थल के हर क्षेत्र को कवर किया गया था। पूरे आयोजन स्थल में प्रत्येक स्थान से मंच की कार्यवाही को देखा तथा सुना जा सकता था। पूरे आयोजन स्थल को धार्मिक वातावरण से सराबोर कर दिया गया था। अनेकों पुस्तक विक्रेताओं ने आयोजन स्थल पर पहुँचकर अभ्यागतों की आध्यात्मिक पिपासा को शान्त करने का सराहनीय प्रयास किया। हजारों की संख्या में पधारे आर्यजन इस विशेष रूप से बनाये गये दयानन्द नगर को अत्यन्त आश्चर्य मिश्रित निगाहों से निहार रहे थे। सारे वातावरण को वेदमय बना दिया गया था। प्रो. विट्ठलराव आर्य जी ने इस सम्मेलन को सर्वतोमुखी सफलता प्राप्त कराने के लिए विभिन्न समितियों का गठन किया था जिन्होंने अपने–अपने कार्य को अत्यन्त निष्ठा तथा परिश्रम करके सफलता तक पहुँचाया। नव–निर्मित भव्य विशाल यज्ञशाला जिसे प्राचीन काल के आश्रम का रूप प्रदान किया गया था को रंग–बिरंगी लाईटों, ओ३मध्वजों तथा फूलों से विशेष प्रकार से सजाया गया था। इसी भव्य यज्ञशाला में सैकड़ों आर्यों की उपस्थिति में राज्य व राष्ट्र की सुख–शांति तथा समृद्धि के लिए राष्ट्रभृत महायज्ञ का आयोजन किया गया।

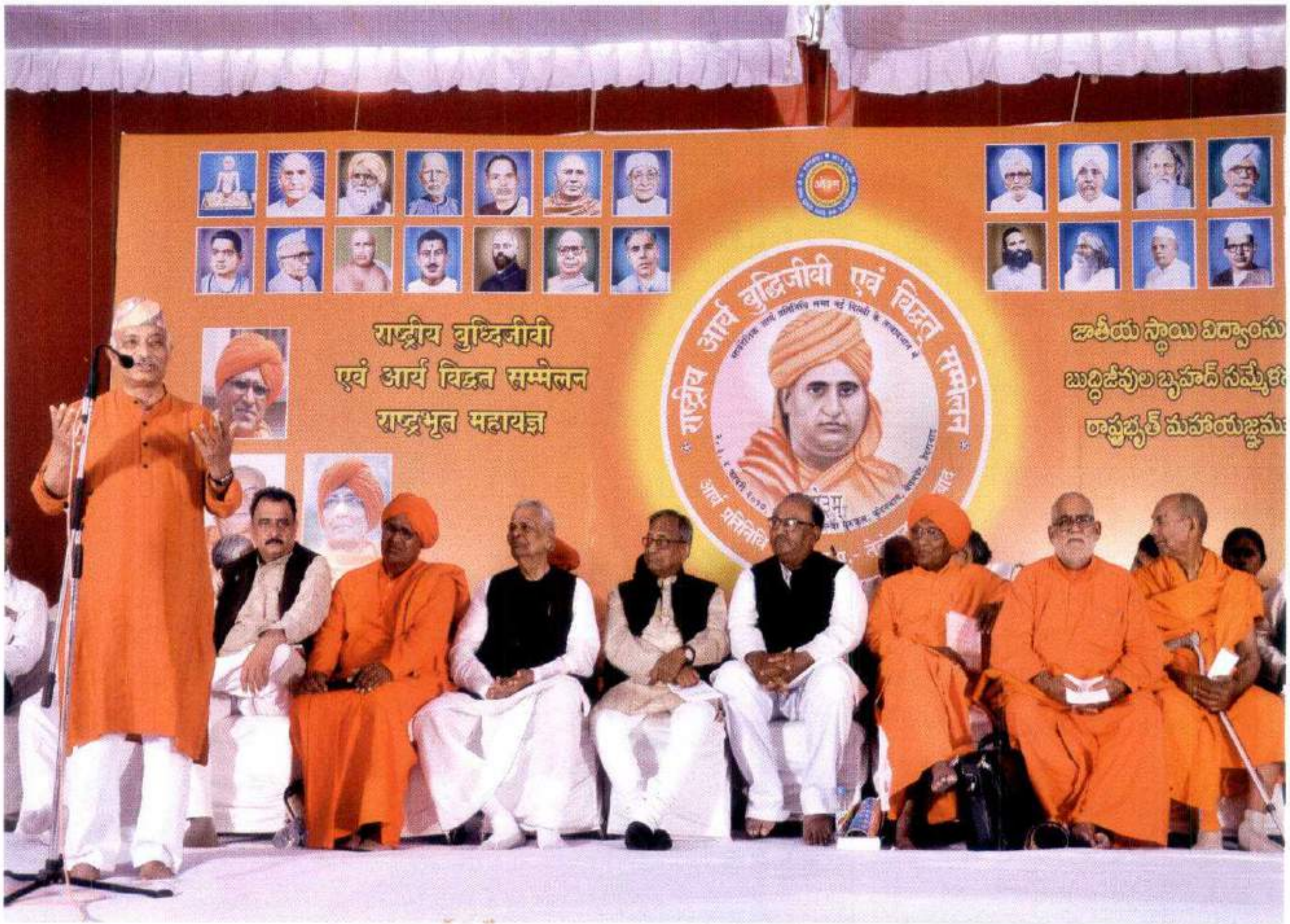

राष्ट्रभृत महायज्ञ

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी, आर्ष शिक्षा के लिए समर्पित एवं अनेकों गुरुकुलों के संचालक स्वामी प्रणवानन्द जी, आदिवासी क्षेत्रों में आर्य समाज का डंका बजा रहे स्वामी धर्मानन्द जी आदि के सान्निध्य तथा आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान तथा

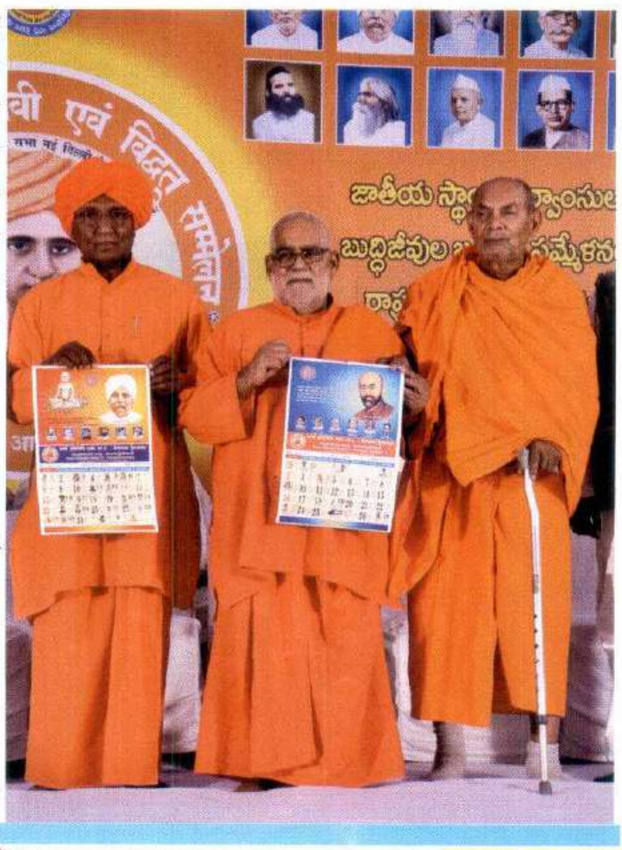

सम्मेलन के संयोजक आचार्य सोमदेव शास्त्री जी के ब्रह्मत्व में राष्ट्रभृत यज्ञ का विशेष आयोजन किया गया। लगभग 50 ब्रह्मचारियों तथा ब्रह्मचारिणियों के संवेत स्वर के वेदपाठ ने सारे वातावरण को वेदमय बना दिया था। ज्ञातव्य हो कि गुरुकुल गौतमनगर दिल्ली, गुरुकुल पौंधा, गुरुकुल मंझावली तथा कन्या गुरुकुल हाथरस की ब्रह्मचारिणियों तथा ब्रह्मचारियों तथा आचार्या शारदा जी उड़ीसा, डॉ. पवित्रा वेदालंकार जी हाथरस तथा वसुधा शास्त्री जी हैदराबाद के नेतृत्व में सस्वर वेदपाठ सम्पन्न हुआ। तीनों दिन पवित्र यज्ञवेदी पर क्रमशः श्री विट्ठल रेड्डी, श्री दयानन्द गौरी, श्री रामदेव, श्री बलराम काले, श्री कृष्णा रेड्डी, श्री प्रवीण भार्गव, श्री जयराज जी आदि ने यजमान पद को सुशोभित किया। यज्ञ के दूसरे दिन योजना आयोग के उपाध्यक्ष श्री निरंजन रेड्डी जी विशेष रूप से यज्ञ में पधारे और उन्होंने यजमान पद को सुशोभित किया।

ब्रह्मा आचार्य सोमदेव शास्त्री जी ने यज्ञ के वैदिक स्वरूप का दिग्दर्शन कराते हुए यज्ञ की वैज्ञानिकता पर विस्तृत प्रकाश डाला तथा अत्यन्त श्रद्धा के साथ यजमानों से आहुतियाँ अर्पित करवाई। उन्होंने पुरोहितों द्वारा मनमाने ढंग से किये जा रहे यज्ञ के क्रिया–कलापों पर भी शास्त्रोक्त विचार प्रस्तुत किये तथा महर्षि दयानन्द जी

द्वारा निर्दिष्ट विधि–विधान को अपनाने की प्रेरणा प्रदान की। तीनों दिन राष्ट्रभृत यज्ञ के उपरान्त स्वामी प्रणवानन्द जी, स्वामी आर्यवेश जी तथा स्वामी धर्मानन्द जी के उपदेशामृत का लाभ श्रोताओं ने उठाया।

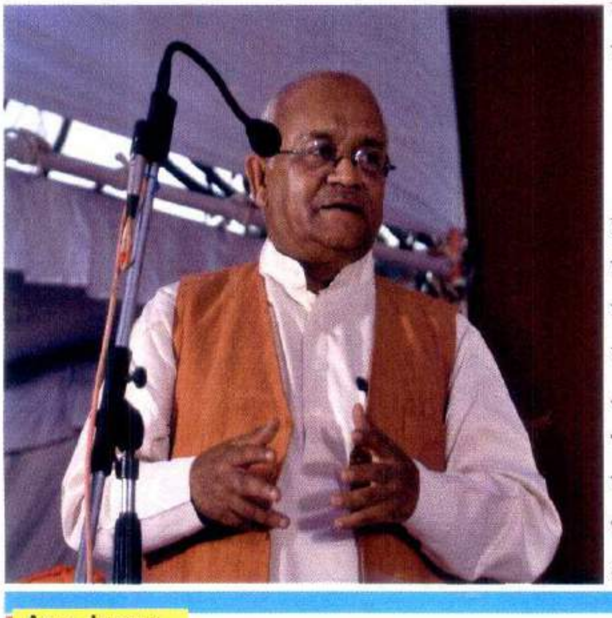

आर्य विद्वत् परिचय सम्मेलन

राष्ट्रीय आर्य बुद्धिजीवी एवं विद्वत् सम्मेलन के अवसर पर सारे देश से वरिष्ठ आर्य संन्यासी, बुद्धिजीवी तथा आर्य नेताओं, पुरोहितों, भजनोपदेशकों व गणमान्य महानुभावों ने भारी संख्या में पधारकर आयोजन की शोभा बढ़ाई। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने सभी गणमान्य महानुभावों का परिचय आम जनता को करवाया। स्वामी जी महाराज द्वारा प्रत्येक विद्वान का जिस तरह से परिचय दिया गया उससे उनके व्यापक सम्पर्क एवं जानकारी से सभी लोग आश्चर्य चकित थे। आर्य जगत के वीतराग संन्यासी स्वामी प्रणवानन्द जी–दिल्ली, स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती–उड़ीसा, विश्व विख्यात संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी, हरियाणा नशाबंदी समिति के अध्यक्ष स्वामी रामवेश जी, आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तर प्रदेश के मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी, स्वामी श्रद्धानन्द जी–पलवल, स्वामी चन्द्रवेश जी, स्वामी विश्वानन्द जी, स्वामी सच्चिदानन्द जी, स्वामी विदेहयोगी जी तीनों सार्वदेशिक सभाओं के वरिष्ठ नेतागण जिनमें श्री सुरेशचन्द्र

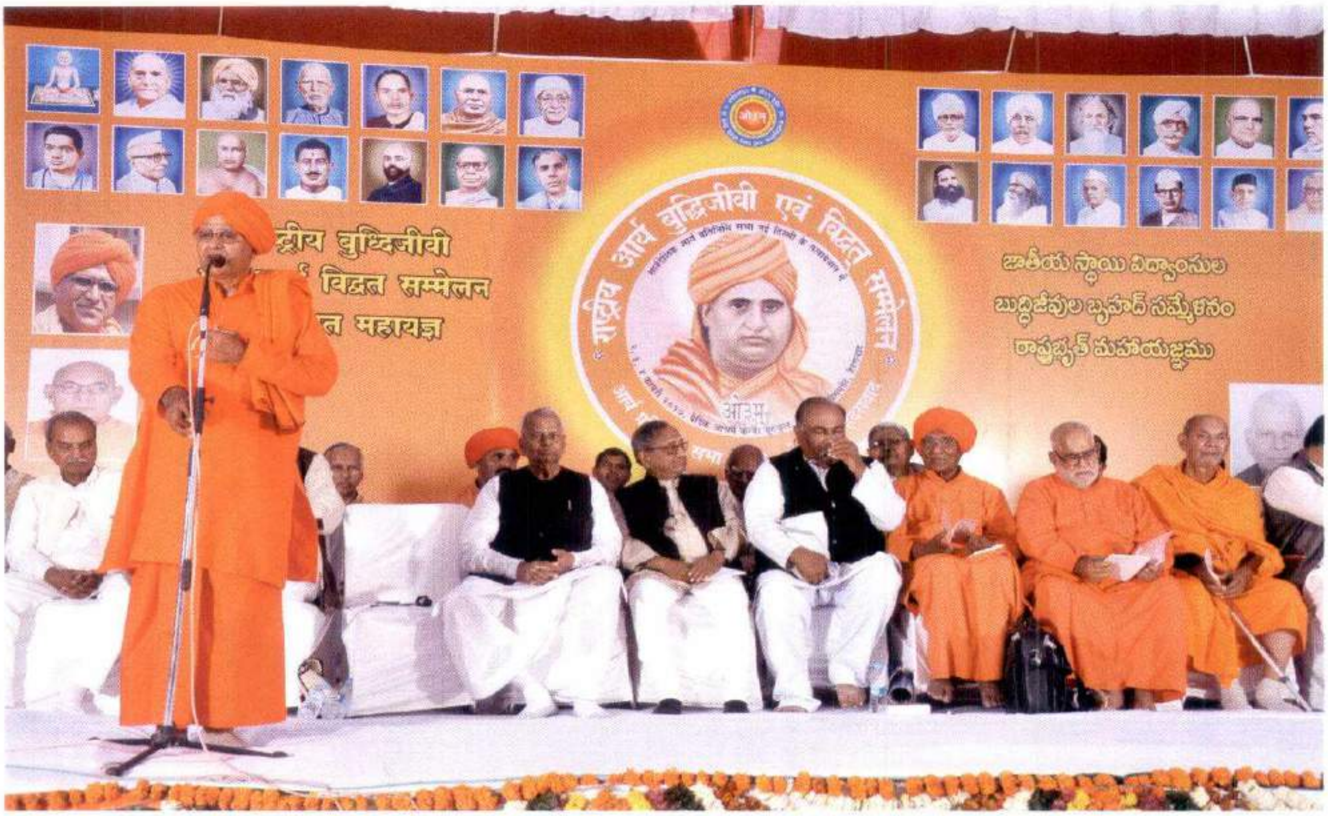

आर्य, श्री मिठाई लाल सिंह, श्री प्रकाश आर्य, श्री अरूण अबरोल मुम्बई, श्री विनय आर्य दिल्ली, श्री सत्यव्रत सामवेदी, पं. माया प्रकाश त्यागी, श्री आनन्द कुमार आर्य कोलकाता, श्री अशोक आर्य–उदयपुर, डॉ. आनन्द कुमार आई.पी.एस., प्रसिद्ध पत्रकार डॉ. वेद प्रताप वैदिक, डॉ. महावीर मीमांसक, डॉ. रघुवीर वेदालंकार, डॉ. जयदेव वेदालंकार हरिद्वार, डॉ. बलवीर आचार्य, पुरोहित सभा के अध्यक्ष आचार्य प्रेमपाल शास्त्री दिल्ली, आचार्य अमरदेव शास्त्री, डॉ. नरेन्द्र वेदालंकार–दिल्ली, गुरुकुल नोएडा के आचार्य डॉ. जयेन्द्र आचार्य, वेद प्रकाश शर्मा पूर्व आई.जी.–मध्य प्रदेश, श्री निरंजन रेड्डी–उपाध्यक्ष योजना आयोग, आचार्य सुभाष जी महाराष्ट्र, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान श्री देवेन्द्र पाल वर्मा व कार्यकारी प्रधान डॉ. धीरज सिंह, डॉ. कमल नारायण आर्य, श्री महेन्द्र सिंह शास्त्री–हरियाणा, श्री मधुर प्रकाश शास्त्री–दिल्ली, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अनिल आर्य, आचार्या पवित्रा वेदालंकार जी, श्री किरणजीत सिंह (शहीदे आजम भगत सिंह के भतीजे), चौ. हरि सिंह सैनी हिसार पूर्व मंत्री हरियाणा सरकार, भारतीय आर्य भजनोपदेशक परिषद् के प्रधान श्री सहदेव बेधड़क, मंत्री डॉ. कैलाश कर्मठ, कोषाध्यक्ष श्री नरेशदत्त आर्य, आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड के प्रधान श्री गोविन्द सिंह भण्डारी, बेटी बचाओ अभियान की अध्यक्षा बहन पूनम आर्या एवं संयोजक बहन प्रवेश आर्या, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के महामंत्री श्री बिरजानन्द एडवोकेट, सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् हरियाणा के अध्यक्ष ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य, प्रसिद्ध दानवीर ठाकुर विक्रम सिंह, श्री बजरंग लाल आर्य हिसार, आचार्य कोमल कुमार छत्तीसगढ़, आचार्य धनंजय जी व आचार्य चन्द्रभूषण जी पौंधा देहरादून, श्री रामसिंह आर्य

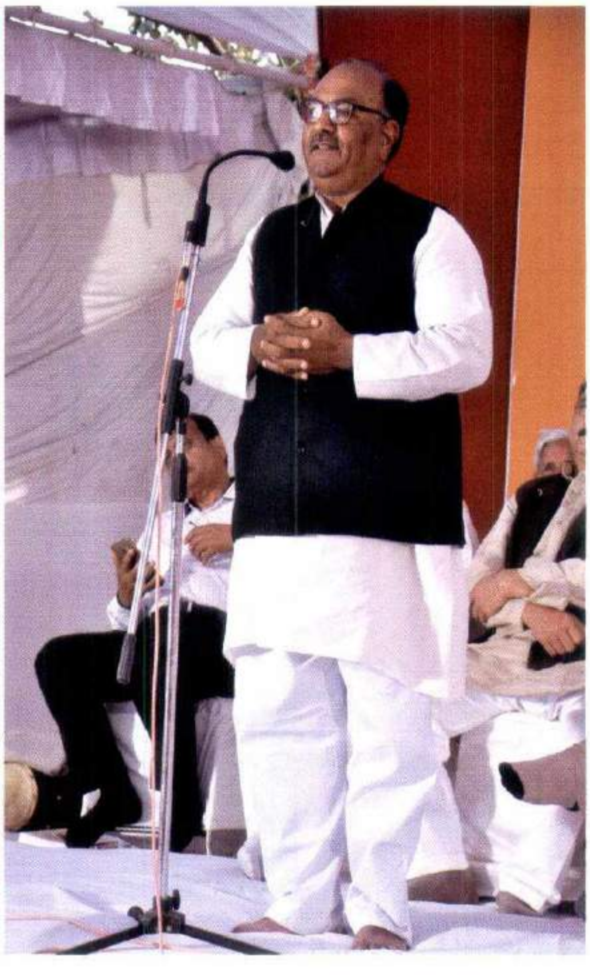

जोधपुर, श्री सुभाष अष्टिकर– कर्नाटक, श्री आर्य कुमार ज्ञानेन्द्र–उड़ीसा, डॉ. शास्त्री–सिलीगुड़ी, डॉ. दीनदयाल–नैरोबी, प्रि. सदाविजय आर्य है उन समस्याओं के विरुद्ध आर्य समाज का प्रत्येक कार्यकर्ता अपना

धर्मेन्द्र कुमार शास्त्री–दिल्ली, डॉ. वीरपाल विद्यालंकार–गाजियाबाद, श्री हरिशंकर जी अग्निहोत्री–आगरा,

आचार्य दयासागर व जीववर्धन शास्त्री छत्तीसगढ़, श्री मधुसूदन जी–महाराष्ट्र, श्री चांदमल जी–जोधपुर, श्री हरदेव सिंह जी–शिवगंज आदि का परिचय करवाया गया।

ज्वलन्त समस्याओं के विरुद्ध आर्य समाज का प्रत्येक कार्यकर्ता अपना नैतिक दायित्व मानकर संघर्ष करे – स्वामी आर्यवेश

इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश जी ने अपने विचार प्रकट करते हुए सम्पूर्ण आर्य जगत् का आह्वान किया कि अब समय आ गया है जब हम सभी को महर्षि दयानन्द जी के सपनों का आर्य समाज बनाना होगा। आर्य समाज का गौरवमयी इतिहास हमें प्रेरित कर रहा है कि हम आर्य समाज को एक तेजस्वी स्वरूप प्रदान करने के लिए इसे आम आदमी के साथ जोड़ने का प्रयत्न करें। आम आदमी की विभिन्न समस्याओं को दूर करने में हम उनके सहयोगी बनें। उनके दुःख–दर्द में उनके साथी बनें और जिन समस्याओं से आम आदमी परेशान है उन समस्याओं के विरुद्ध आर्य समाज का प्रत्येक कार्यकर्ता अपना नैतिक दायित्व मानकर संघर्ष करे। आर्य समाज की प्रत्येक इकाई को

उपयोगी बनाने के लिए ऐसे कार्यक्रम चलायें जायें जिससे प्रत्येक व्यक्ति

को यह आभास हो सके कि आर्य समाज की गतिविधियाँ उनके कल्याण और हित के लिए हैं। यह सब तब सम्भव होगा जब स्थानीय स्तर पर स्थापित आर्य समाजों के अधिकारी, कार्यकर्ता, पुरोहित एवं साधारण सदस्य भी अपनी कथनी और करनी में किसी प्रकार का भेद नहीं रखेंगे, बल्कि बिना किसी भेदभाव के दुःखी जनों की सहायता करेंगे, सेवा करेंगे और उन्हें अपने आचरण एवं व्यवहार से प्रभावित करके आर्य समाज से जोड़ेंगे। स्वामी जी ने आर्य समाज के भविष्य को और अधिक उज्ज्वल और सुरक्षित बनाने

के लिए नई पीढ़ी के बच्चों एवं युवाओं (युवक एवं युवतियों) को आर्य समाज में लाने के लिए विशेष प्रयत्न करने पर बल दिया। राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मानवता के समक्ष चुनौती बनकर खड़ी विभिन्न ज्वलन्त समस्याओं पर आर्य समाज को अपना दृष्टिकोण स्पष्ट रूप से घोषित करना होगा। आज पूरे विश्व में बढ़ते हुए आतंकवाद, नस्लभेद, जातिवाद, साम्प्रदायिक कट्टरता, धार्मिक अन्धविश्वास, आर्थिक गैर–बराबरी, मांसाहार, हिंसा, नारी उत्पीड़न तथा व्यापक भ्रष्टाचार तथा नैतिक पतन की पराकाष्ठा हो चुकी है। इनके सम्बन्ध में हमें अपनी रणनीति कार्यशैली एवं संगठन की भूमिका तय करनी होगी। आर्य समाज के गुरुकुल, विद्यालय, आश्रम, युवा संगठन एवं अन्य प्रकल्पों को सब प्रकार से सक्षम बनाकर समाज परिवर्तन में उन्हें झोंकना होगा। इन समस्त बिन्दुओं पर इस त्रिदिवसीय आर्य विद्वत् सम्मेलन में चिन्तन–मनन करके जो निष्कर्ष निकाला जायेगा उसे आधार बनाकर सम्पूर्ण आर्य जगत् कार्य करे तो आर्य समाज की प्रासंगिकता वर्तमान में और भी अधिक महत्त्वपूर्ण बनकर उभरेगी। जिस प्रकार स्वतंत्रता आन्दोलन में आर्य समाज ने अपने हजारों अनुयायियों को बलिदान के रास्ते पर चलने की प्रेरणा दी थी और पूरे आन्दोलन में सर्वाधिक भूमिका निभाने की प्रशस्ति प्राप्त की थी। एक बार फिर हमें तप, त्याग और संघर्ष के रास्ते पर चलकर अपने महापुरुषों के बलिदान से प्रेरणा लेकर नया इतिहास बनाना चाहिए यही इस महासम्मेलन

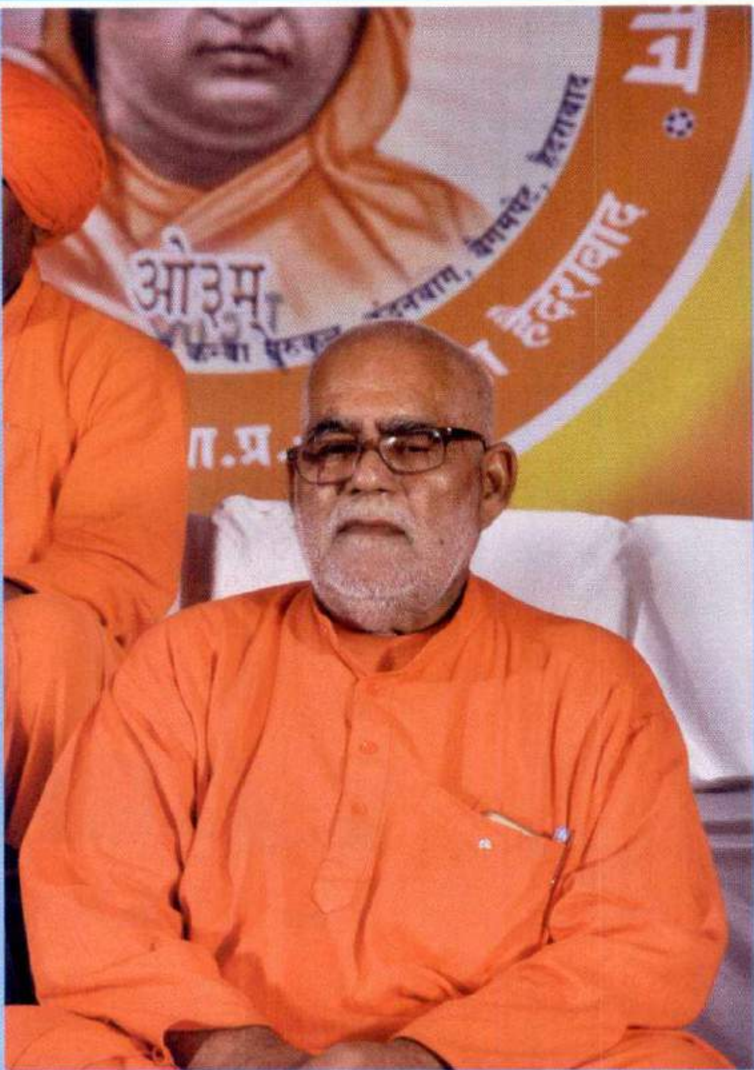

को आयोजित करने के पीछे हमारी भावना है। आशा है परमपिता परमात्मा की कृपा से हम सभी के हृदय में नये संकल्प की अग्नि अवश्य प्रज्ज्वलित होगी।

स्वामी आर्यवेश जी ने सभा मंत्री प्रो. विट्ठलराव आर्य तथा आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश+तेलंगाना के समस्त पदाधिकारियों एवं सदस्यों की मुक्तकंठ से प्रशंसा करते हुए कहा कि जितनी अच्छी भावना से यह महासम्मेलन आयोजित किया गया है उतने ही ऊँचे स्तर की यहाँ समस्त व्यवस्थाएँ की गई हैं जिससे प्रत्येक आगन्तुक महानुभाव अपने को कृत-कृत अनुभव कर रहा है और प्रो. विट्ठलराव और उनके साथियों की भूरि-भूरि प्रशंसा कर रहा है। स्वामी जी ने कहा कि प्रो. विट्ठलराव आर्य जी का व्यक्तित्व पं. नरेन्द्र जी के बाद

एक लौह पुरुष के रूप में स्थापित हो चुका है और उनके नेतृत्व में सम्पूर्ण दक्षिण भारत का आर्य समाज अत्यन्त सक्रिय होकर कार्य कर रहा है। प्रो. विट्ठलराव जी की कार्य क्षमता, सूझ-बूझ एवं कर्मठता अदभुत है। कार्यक्रम की सम्पूर्ण व्यवस्थाओं को अपने दिल और दिमाग में संजोकर जिस प्रकार उन्होंने आयोजन को इतनी ऊँचाइयों तक पहुँचाया है उसके लिए मैं हृदय से उनका साधुवाद करता हूँ और परमपिता परमात्मा से उनके उत्तम स्वास्थ्य और दीर्घायुष्य की कामना करता हूँ। महासम्मेलन में भोजन, आवास, यज्ञवेदी, पण्डाल, मंच, साउण्ड सिस्टम, साज-सज्जा, इतिहास पुरुषों की चित्र प्रदर्शनी आदि निःसंदेह अत्यन्त आकर्षक एवं विशेष रूप से प्रशंसनीय रही।

ध्वजारोहण

2 फरवरी, 2017 को राष्ट्रभृत यज्ञ एवं परिचय सम्मेलन के पश्चात् स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी अग्निवेश जी, स्वामी धर्मानन्द जी, पं. माया प्रकाश त्यागी जी, श्री सत्यव्रत सामवेदी जी, स्वामी रामवेश जी, आचार्य सोमदेव जी, श्री सुरेश चन्द्र आर्य जी, श्री प्रकाश आर्य जी, श्री मिठाई लाल जी, श्री अरुण अबरोल जी तथा सैकड़ों लोगों की उपस्थिति में स्वामी प्रणवानन्द जी ने ध्वजारोहण कर ओ३म पताका फहराई। उपस्थित आर्यजनों ने ओ३म्ध्वज के सामने आर्य समाज को तेजस्वी स्वरूप प्रदान करने का संकल्प लिया।

उद्घाटन समारोह

ध्वजारोहण के उपरान्त विशाल पण्डाल में विशेष रूप से बनाये गये मंच से दीप प्रज्ज्वलित कर

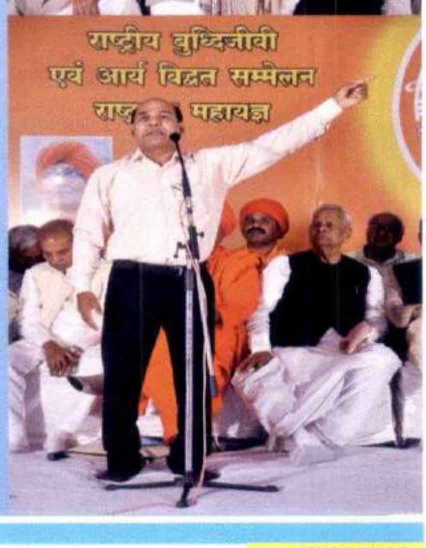

सम्मेलन का विधिवत उद्घाटन किया गया। स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती, स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती, स्वामी अग्निवेश जी, स्वामी आर्यवेश जी, डॉ. वेद प्रताप वैदिक जी, मुख्य अतिथि श्री किरणजीत सिंह जी, श्री सुरेशचन्द्र

आर्य जी, श्री मिठाई लाल सिंह जी, श्री प्रकाश आर्य जी आदि ने मिलकर दीप प्रज्ज्वलित कर उद्घाटन समारोह की शोभा बढ़ाई। तीनों सार्वदेशिक सभाओं के वरिष्ठ पदाधिकारी एक साथ एक मंच पर विराजमान हुए यह इस सम्मेलन की विशेष उपल ब्धि रही। उद्घाटन समारोह प्रसिद्ध आर्य संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी की अध यक्षता में प्रारम्भ हुआ तथा कार्यक्रम का संयोजन आचार्य सोमदेव शास्त्री जी ने किया।

इस अवसर पर मंच पर उपस्थित महानुभावों में श्री सत्यव्रत सामवेदी, श्री अरूण अबरोल, श्री अशोक आर्य, श्री देवेन्द्र पाल वर्मा, पं. माया प्रकाश त्यागी, डॉ. महावीर मीमांसक, डॉ. रघुवीर वेदालंकार, डॉ. जयदेव वेदालंकार जी, श्री हरिसिंह सैनी, श्री आनन्द कुमार आर्य–कलकत्ता, डॉ. आनन्द कुमार आई.पी.एस., श्री वेद प्रकाश शर्मा पूर्व आई.जी., आचार्य प्रेमपाल शास्त्री, डॉ. जयेन्द आचार्य, डॉ. नरेन्द्र वेदालंकार,

आचार्या पवित्रा विद्यालंकार, श्री गोविन्द सिंह भण्डारी, श्री हरिकिशन जी, सुश्री पूनम आर्या एवं सुश्री प्रवेश आर्या तथा श्री सहदेव बेधड़क मुख्य थे।

इस अवसर पर इस बुद्धिजीवी एवं विद्वत् सम्मेलन के सूत्रधार सार्वदेशिक

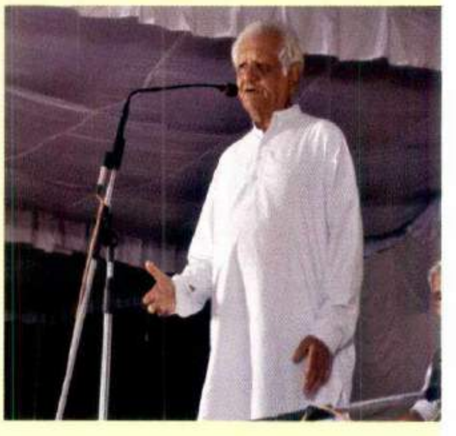

आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री तथा आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश+तेलंगाना के प्रधान प्रो. विट्ठलराव आर्य जी ने उदघाटन सत्र में उपस्थित समस्त बुद्धिजीवियों, विद्वानों, आर्यजनों का अभिनन्दन एवं स्वागत करते हुए महासम्मेलन को आयोजित करने के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आर्य समाज की स्थापना

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने पूरे विश्व को दृष्टिगत रखते हुए की और इसके उद्देश्य को स्पष्ट करते हुए आर्य समाज के छठे नियम में लिखा

है कि "संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना।" इससे स्पष्ट हो जाता है कि महर्षि दयानन्द सम्पूर्ण मानव समाज और इससे भी बढ़कर प्राणीमात्र के कल्याण की भावना को मध्य में रखते हुए आर्य समाज की स्थापना की घोषणा करते हैं। उन्होंने कहा कि आज पूरा विश्व विकास के नाम पर विनाश, शांति के नाम पर अशांति तथा सौहार्द के नाम पर टकराव की तरफ बढ़ रहा है। पूरे विश्व में बिगड़ते हुए पर्यावरण को लेकर चिन्ता एवं तनाव है। वैश्वीकरण के नाम पर भोगवादी संस्कृति तेजी के साथ पनप रही है। नैतिक मूल्य समाप्त होते जा रहे हैं और मनुष्य जीवन विभिन्न समस्याओं से प्रभावित एवं पीड़ित हैं। सैकड़ों करोड़ पशु–पक्षियों की प्रतिदिन हत्या एवं उससे बढ़ती हुई मांसाहार की प्रवृत्ति के कारण मनुष्य के हृदय से करुणा एवं अहिंसा का भाव समाप्त होता जा रहा है। प्राकृतिक संसाधनों यथा जल, जंगल, खनिज, पहाड़ आदि का निर्ममता के साथ दोहन, भयंकर प्राकृतिक आपदाओं की ओर ले जा रहा है। दुनिया में बढ़ती हुई गरीबी, गैर–बराबरी, भुखमरी, अशिक्षा,

सामाजिक अन्याय, साम्प्रदायिकता तथा कट्टरता निरन्तर बढ़ रही है।

ऐसी स्थिति में आर्य समाज क्या करे

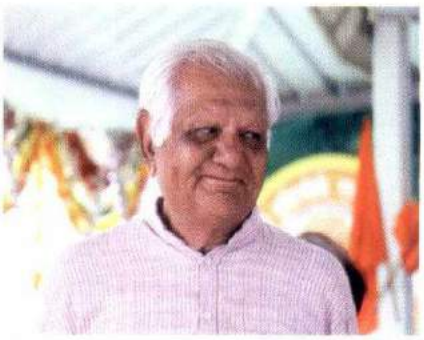

और उसकी भावी कार्यशैली क्या हो,

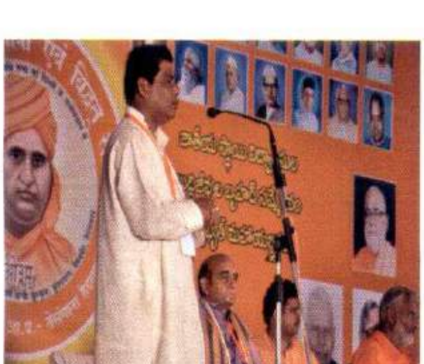

आदि विषयों पर गम्भीर चिन्तन–मनन करने के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि ा सभा एवं आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र

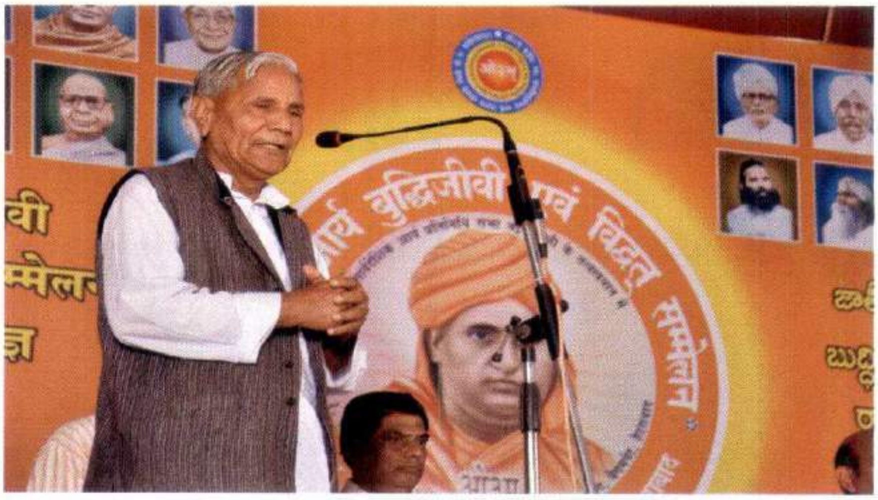

प्रदेश तेलंगाना के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित यह राष्ट्रीय आर्य बुद्धिजीवी एवं विद्वत् सम्मेलन आहूत किया गया है, ताकि आर्य समाज के शीर्षस्थ नेता, वरिष्ठ विद्वान्, संन्यासी, आचार्य तथा आचार्याएँ, पुरोहित, भजनोपदेशक तथा चुने हुए बुद्धिजीवी परस्पर विचार–विमर्श करके एक स्थाई समाधान निकाल सकें।

मुझे बड़ी प्रसन्नता है कि हैदराबाद की इस ऐतिहासिक धरती पर जहाँ आर्य समाज के हुतात्माओं ने निजाम के अत्याचारों एवं तानाशाही के विरुद्ध एक स्वर्णिम इतिहास रचा था वहीं पर एक बार फिर इस महासम्मेलन का होना इतिहास को दोहरा रहा है और मुझे पूरी आशा है कि यहाँ पर जो निर्णय लिये जायेंगे, उसे देश–विदेश में स्थित समस्त आर्य समाजों एवं

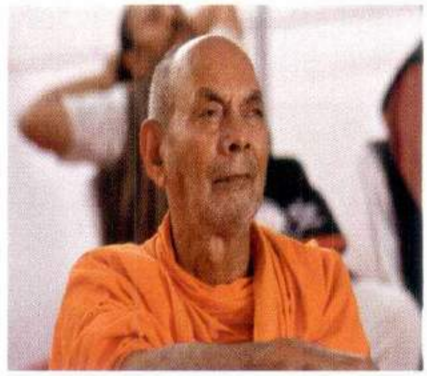

संगठन की इकाईयों के माध्यम से जन–सामान्य तक पहुँचाया जा सकेगा। मुझे सबसे अधिक प्रसन्नता इस बात की है कि आज इस ऐतिहासिक सम्मेलन में सार्वदेशिक सभा के तीनों पक्षों के शीर्षस्थ नेता एक मंच पर विराजमान हैं। माननीय श्री मिठाई लाल सिंह जी, श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी एवं स्वामी आर्यवेश जी तीनों महानुभाव सार्वदेशिक सभाओं के प्रधान के रूप में कार्यरत हैं। किन्तु

इन्होंने बड़ी उदारता के साथ हमारा निमंत्रण स्वीकार करके अपने साथियों के साथ इस महासम्मेलन में सम्मिलित होने का निर्णय लिया जिससे सम्पूर्ण

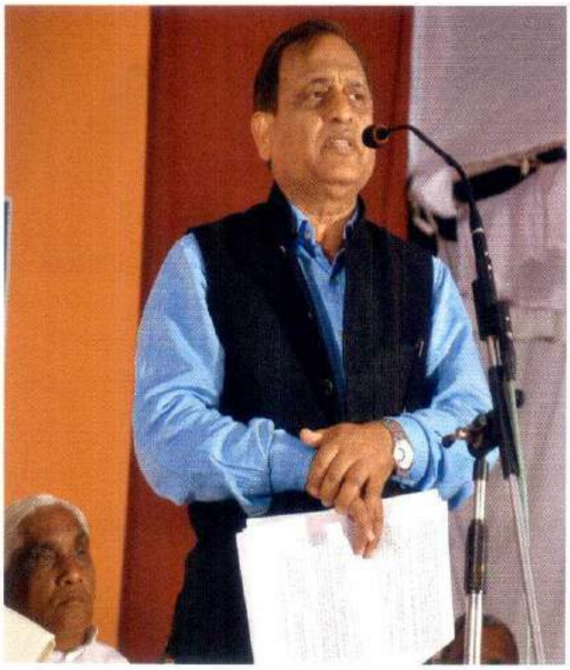

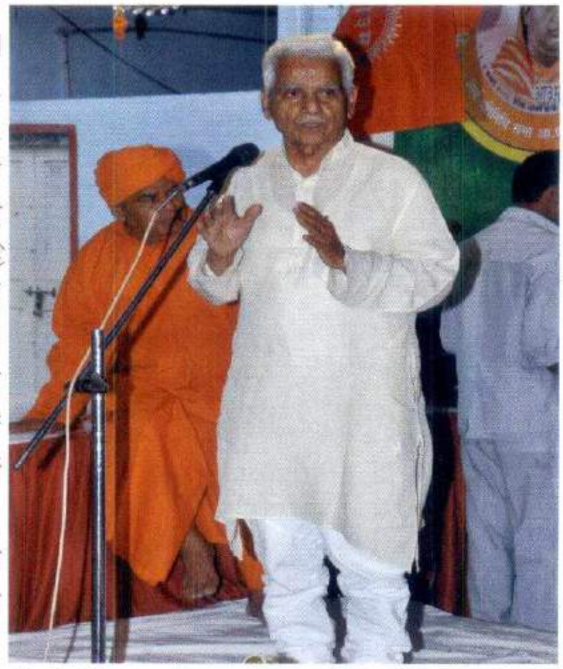

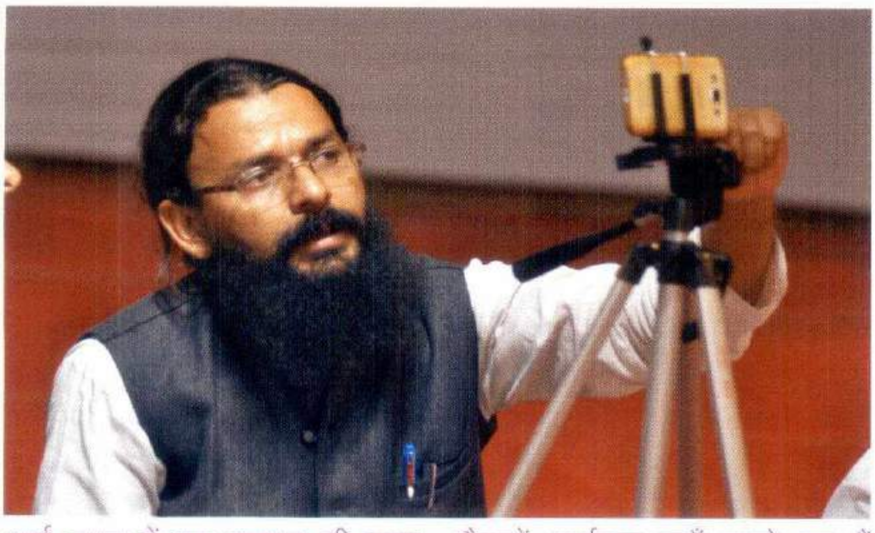

आर्य जगत में एक उत्साह की लहर दौड़ गई है। इसके साथ ही आर्य समाज के समस्त वरिष्ठ संन्यासी, विद्वान्, उपदेशक एवं बुद्धिजीवी भारी संख्या में पधारे हैं। इसके लिए भी मैं सभी का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ और उनका स्वागत करता हूँ। कर्नाटक, मराठवाड़ा, महाराष्ट्र, आन्ध्र प्रदेश और तेलंगाना की अधिकतर आर्य समाजों के प्रतिनिधि एवं आर्यजन हजारों की संख्या में यहाँ उपस्थित हैं, इसके लिए मैं आप सबका भी आभार व्यक्त करता हूँ। देश के अन्य प्रान्तों से भी सैकड़ों आर्यजन यहाँ पधारे हुए हैं जिससे इस महासम्मेलन की गरिमा और अधिक बढ़ गई है। मुझे पूरी आशा है कि यह महासम्मेलन महत्त्वपूर्ण निर्णयों के साथ सम्पन्न होगा। हम अपनी पूरी शक्ति लगाकर आगन्तुक महानुभावों के आतिथ्य के लिए कृत संकल्पित हैं।

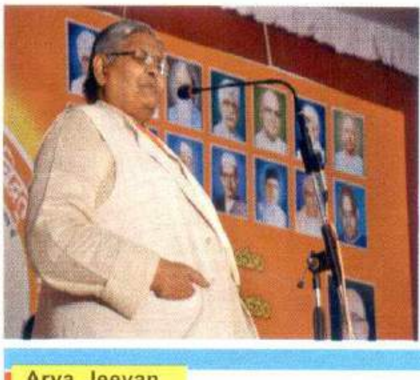

इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश द्वारा एक अति सुन्दर कलेण्डर भी प्रकाशित किया गया था। इस कलेण्डर में समस्त विद्वानों का इतिहास दर्ज किया गया है। इस कलेण्डर का स्वामी आर्यवेश जी, स्वामी अग्निवेश जी, स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती, श्री मिठाई लाल सिंह जी, श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी आदि ने लोकार्पण किया। सम्मेलन में पधारे सभी महानुभावों के लिए भेंटस्वरूप एक सुन्दर बैग तैयार करवाया गया था जिसका लोकार्पण स्वामी प्रणवानन्द जी, श्री सत्यव्रत सामवेदी जी, पं. माया प्रकाश त्यागी जी, डॉ. वेद प्रताप वैदिक जी आदि ने किया। सम्मेलन में पधारे सभी गणमान्य महानुभावों को इस

सम्मेलन की स्मृति ताजा रखने के लिए अत्यन्त आकर्षक स्मृति चिन्ह बनवाया गया था। इसका भी लोकार्पण

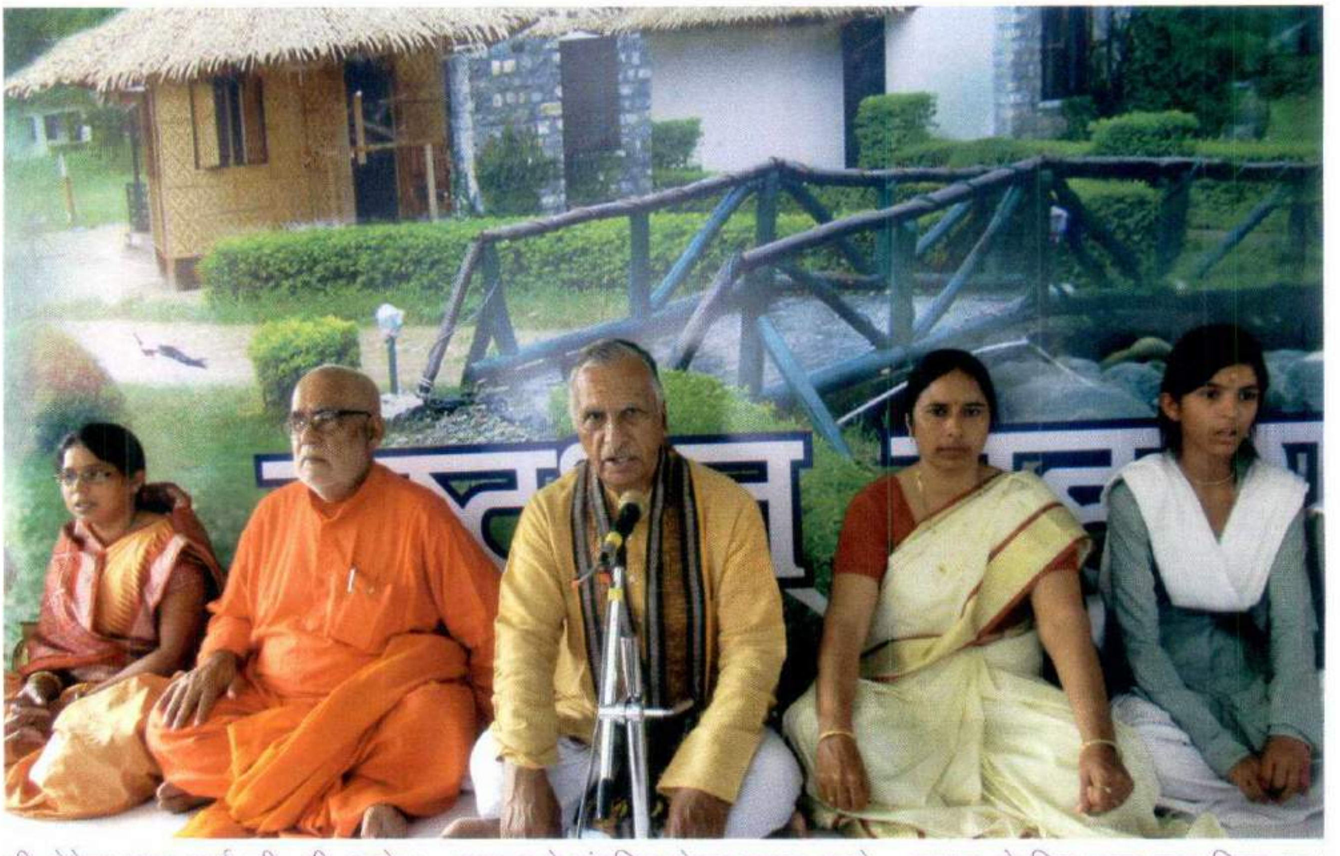

श्री देवेन्द्र पाल वर्मा जी, श्री अशोक आर्य जी, आचार्य सोमदेव शास्त्री जी, डॉ. रघुवीर वेदालंकार जी, डॉ. आनन्द कुमार आदि ने किया।

महर्षि दयानन्द जी सरस्वती एवं शहीद भगत सिंह के सपनों को साकार करने के लिए आर्य समाज संगठित होकर प्रयास करे –किरण जीत सिंह

इस अवसर पर महासम्मेलन के मुख्य अतिथि श्री किरणजीत सिंह (शहीदे आजम भगत सिंह के भतीजे)

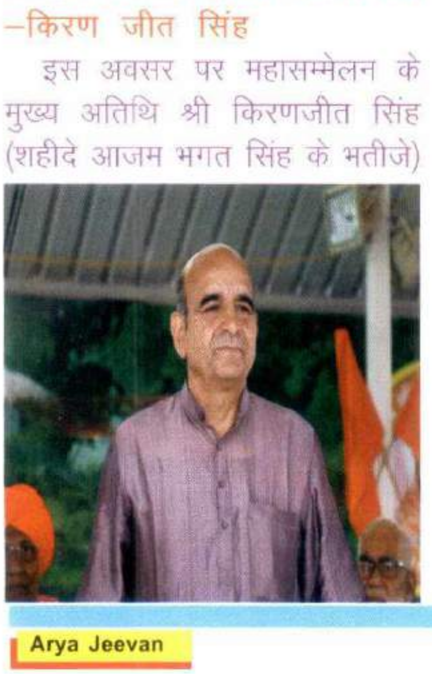

ने अपने उद्‌बोधन में महर्षि दयानन्द जी सरस्वती एवं शहीद भगत सिंह के सपनों को साकार करने के लिए आर्य समाज से संगठित होकर प्रयास करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि शहीद भगत सिंह के दादा जी महर्षि दयानन्द जी से प्रेरणा लेकर आजादी के आन्दोलन में कूद पड़े थे। उनके बाद भगत सिंह जी ने आजादी के लिए अपना जीवन ही बलिदान कर दिया। उन्होंने कहा कि आजादी के आन्दोलन में अनेकों आर्य समाजियों और क्रांतिकारियों ने अपने जीवन की आहुति दे दी। लेकिन आज भी महर्षि दयानन्द सरस्वती जी और भगत सिंह जी के सपने अधूरे हैं। इनके सपनों को साकार करने के लिए आर्य समाज को एकजुटता दिखानी होगी। उन्होंने कहा कि भगत सिंह आजादी के साथ–साथ एक अच्छे समाज को बनाने के लिए भी कृत संकल्पित थे। उन्होंने दबे–कुचले, शोषित लोगों की आवाज बुलन्द करने के लिए अदालत में बम्ब फेंका था। वे अपनी बात को लोगों तक पहुँचाना चाहते थे। उन्होंने कहा कि जब भगत सिंह को फांसी लगी तब वे केवल 23 वर्ष 6 माह के थे और इतनी छोटी आयु में उन्होंने देश तथा समाज के लिए बहुत कुछ किया था। उन्होंने एक भाषा, साम्प्रदायिकता, अछूत समस्या, दंगों आदि पर कई लेख लिखकर समाज में बदलाव की कोशिश की थी। उन्होंने कहा कि शहीदे आजम भगत सिंह के अदम्य साहस और बलिदान की गाथा हमेशा युवाओं को प्रेरणा प्रदान करती रहेगी। धर्म, भाषा, जाति के आधार पर देश को बांटा जा रहा है। इस व्यवस्था में आमूल–चूल परिवर्तन लाने की आवश्यकता है।

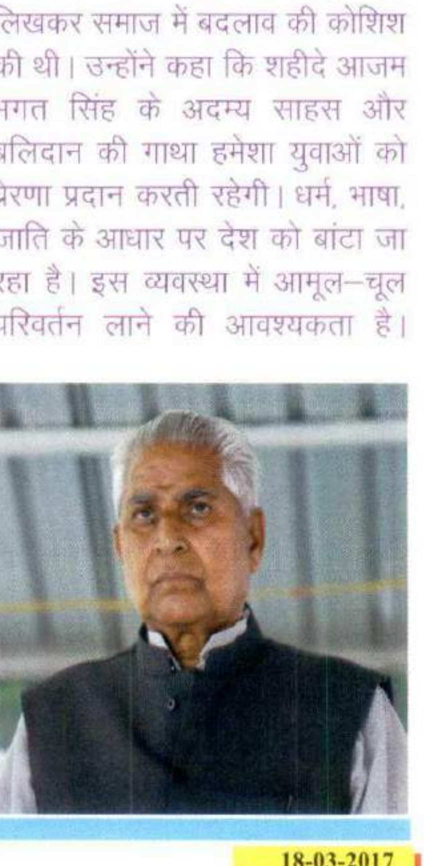

आर्य समाज सामाजिक परिवर्तन का अग्रदूत रहा है और आज भी है। उसमें वही तेजी और उत्साह का संचार हो इस पर विचार करने की आवश्यकता है।

श्री प्रभात पंत जी ने वीररस की कविता सुनाकर सबको रोमांचित कर दिया।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यकारी प्रधान श्री सत्यव्रत सामवेदी जी ने अपनी ओजस्वी वाणी में विचार प्रकट करते हुए कहा कि आर्य समाज के गौरवमय पुत्र सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी मंत्री एवं आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश तेलंगाना के प्रधान प्रो. विट्ठलराव आर्य जी ने यह ऐतिहासिक सम्मेलन आयोजित करके हैदराबाद की इस पवित्र भूमि में क्रांति की एक नई इबारत लिख दी है। हैदराबाद का यह सम्मेलन कोई संयोग नहीं है। अपितु विधाता का अदृश्य वरदान प्रतीत होता है। हैदराबाद की धरती आर्य समाज की दृष्टि से त्याग, बलिदान, समर्पण की प्रेरणा देने वाली है। मैं जब यहाँ आ रहा था तो मैं सोच रहा था कि हैदराबाद आन्दोलन की राख में से कुछ चिन्गारियाँ देखने को मिलेंगी। लेकिन मैंने यहां आकर देखा कि उस दबी हुई राख में से शोले निकल रहे हैं। उन्होंने कहा कि आर्य समाज की वर्तमान दशा वास्तव में अत्यन्त चिन्तनीय है। इस सम्मेलन में 9 विचारणीय विषय लिखे गये हैं जिसमें सर्वांगीण विकास की रूपरेखा तैयार की जा सकती है। उन्होंने कहा कि ज्ञान के साथ कर्म की आवश्यकता है। भाषण के साथ आचरण की जरूरत है और हमें यहाँ यह चिन्तन करना है कि संगठन का मतलब क्या है और संगठन का कार्य क्या है। मैं संगठन की प्रगति के लिए अनेक बार सुझाव दे चुका हूँ कि आर्य समाज के 10 या उससे शीर्षस्थ बलिदानी नेता हों जो सर्वस्व समर्पित करने के लिए तैयार हों और इन 10 शीर्षस्थ नेताओं में संगठन के लिए कम से कम एक-एक लाख रुपये एकत्रित करने एवं 10-10 सक्रिय कार्यकर्ताओं को जोड़ने की क्षमता हो। ये समर्पित 100 व्यक्ति 10-10 व्यक्तियों को जोड़कर एक हजार कार्यकर्ताओं का संगठन खड़ा कर सकते हैं और ये समर्पित कार्यकर्ता एक आवाज पर जहाँ बुलाओं वहाँ एकत्रित होने के लिए कटिबद्ध रहें। इस प्रकार की योजना बनाकर हम युवाओं का एक बड़ा संगठन खड़ा कर सकते हैं। आर्य समाज को आन्दोलन का रास्ता अपनाना पड़ेगा। सारा देश समस्याओं से ग्रसित है। किसी भी समस्या को लेकर एकजुट होकर बड़ा आन्दोलन करने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि एक बहुत बड़ा खतरा देश के सामने मंडरा रहा है। हमारे हरिजन भाई हमसे दूर जाने के लिए तैयार बैठे हैं। हमें उन लोगों को गले लगाना है और व्यवस्था परिवर्तन करने के लिए तैयार रहना है।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के मंत्री स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि हमारे पुरोधाओं ने जिस प्रकार से आर्य समाज को

हैदराबाद में राष्ट्रीय आर्य बुद्धिजीवी एवं विद्वत् सम्मेलन के अवसर पर विद्वानों, बुद्धिजीवियों, संन्यासियों तथा गणमान्य व्यक्तियों के दृश्य

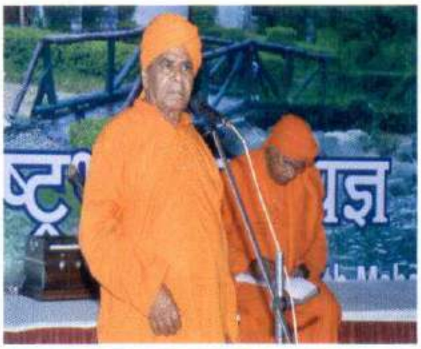
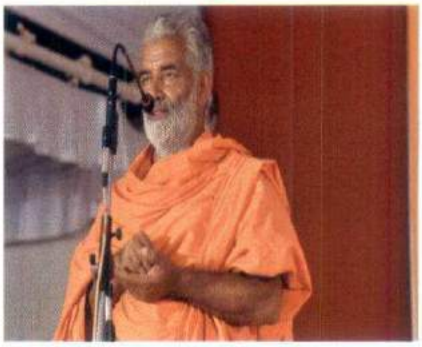

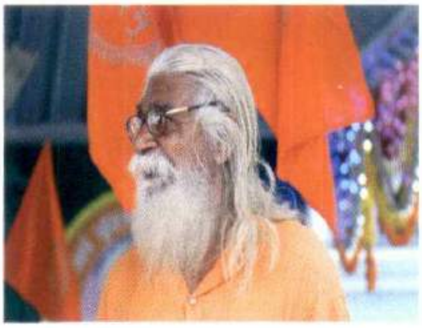

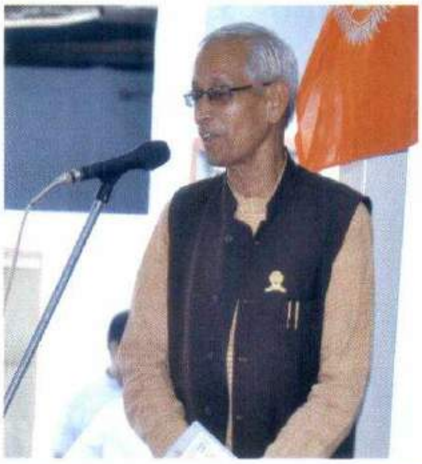
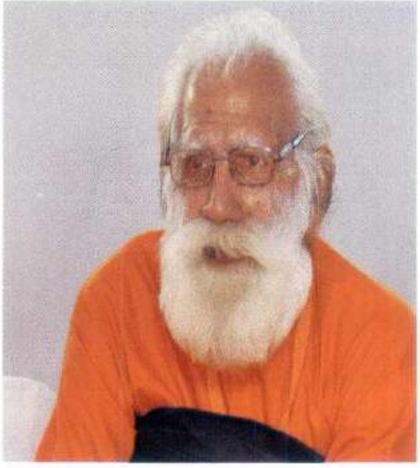

उन्नति के शिखर पर पहुँचाया था वही रणनीति अपनाने की आज जरूरत है। उन्होंने कहा कि हमारे उपदेशक

प्रशिक्षित नहीं हैं। उपदेशकों को बनाने के लिए उपदेशक विद्यालय स्थान–स्थान पर खोले जाने चाहिए। उन्होंने कहा कि मिशनरी भावना से कार्य करने की आवश्यकता है। हमारे भजनोपदेशकों ने आर्य समाज के

प्रचार–प्रसार में अपना अलग स्थान बनाया हुआ है। आज आवश्यकता इस बात की है कि हमारे भजनोपदेशक सेवा और समर्पण की भावना से कार्य करें और आर्य समाज को मजबूत बनायें।

इस अवसर पर नशाबन्दी परिषद

हरियाणा के प्रधान स्वामी रामवेश जी ने कहा कि आर्य समाज को प्रगति पथ पर पहुँचाने के लिए स्वामी इन्द्रवेश जी ने आर्य राष्ट्र का नारा दिया था। इसी नारे को लेकर गाँव–गाँव और शहर–शहर में जाकर आर्य समाज के कर्त्तव्यनिष्ठ कार्यकर्ता प्रचार करें, वेदों का प्रसार करें और युवाओं का संगठन तैयार करें। उन्होंने कहा कि प्रत्येक प्रान्तीय सभा अपने–अपने प्रान्त में 10 से लेकर 50 परिवारों का चयन करें और उनको आर्य समाज में कार्य करने के लिए प्रशिक्षित करें और अपने क्रिया– कलापों से पारिवारिक यज्ञों के द्वारा अपने व्यवहार से प्रत्येक परिवार महीने में कम से कम एक परिवार को आर्य बनाने का संकल्प लें। दृढ–संकल्पित होकर यदि यह कार्य किया जाये तो बहुत शीघ्र आर्य राष्ट्र बनाने के रास्ते पर हम चल पड़ेंगे।

संगठन शक्ति का बिखराव सभी समस्याओं की जड़ है

– सुरेश चन्द्र आर्य

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी ने स्वामी आर्यवेश जी एवं प्रो. विट्ठलराव आर्य जी का हृदय से आभार व्यक्त करते हुए कहा कि हम कौन थे, क्या हो गये और क्या होंगे अभी आओ मिलकरके विचारें ये समस्यायें सभी। उन्होंने कहा कि आर्य समाज से सम्बन्धित समस्याओं पर गहन चिन्तन की आवश्यकता है। संगठन शक्ति का बिखराव सभी समस्याओं की जड़ है और हम सभी को एकसूत्र में बंधने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि हम सब इस सम्बन्ध में प्रयासरत हैं। उन्होंने आर्य समाज के प्रभाव में कमी पर अपने विचार रखते हुए कहा कि उपदेशकों व पुरोहितों के अधिकारों एवं कर्त्तव्यों में गिरावट आ रही है। जो सम्मान इन्हें मिलना चाहिए वह नहीं मिल पा रहा है। जिसका असर प्रचार कार्य पर पड़ता है। इसके अतिरिक्त अध्यात्म तथा भक्तिभाव में श्रद्धा की कमी भी एक महत्त्वपूर्ण कारण है। उन्होंने कहा कि हमारे उपदेशक तथा पुरोहित श्रोताओं में भक्तिभावना का

उदय कर पाने में सक्षम नहीं हो पा रहे हैं। जिससे श्रद्धा एवं भक्तिभावना का अभाव होता जा रहा है। श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी ने कहा कि हम

लोग प्रिंट तथा इलेक्ट्रानिक मीडिया को प्रभावित नहीं कर पा रहे हैं जिससे हमारी खबरें मीडिया में नहीं आ पाती हैं और आम जनों को हमारी गतिविधियों की जानकारी नहीं मिल पाती है। इसके लिए प्रयास करना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि वेद, दयानन्द

और आर्य समाज को जन–जन तक पहुँचाने के लिए एक निजी टी.वी.

चैनल की अत्यधिक आवश्यकता है। छोटे–छोटे संगठनों के पास अपने निजी चैनल हैं। उन्होंने कहा कि सबसे बड़ी आवश्यकता इस बात की

है कि राजार्य सभा, विद्यार्य सभा तथा धर्मार्य सभा का फिर से गठन होना चाहिए और इसमें सुयोग्य व्यक्तियों को स्थान मिलना चाहिए। इसके अतिरिक्त वैदिक प्रचारकों को प्रशिक्षित करना पहली प्राथमिकता होनी चाहिए। उन्होंने आर्य समाजों में युवाओं की कमी पर विचार देते हुए कहा कि युवाओं की उपस्थिति बढ़ाने के लिए युवाओं की जरूरत के मुताबिक कार्यक्रम बनाने की आवश्यकता है। वार्ताओं और स्पर्धाओं का आयोजन बड़े पैमाने पर किया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त गुरुकुलों को बढ़ावा देना होगा क्योंकि गुरुकुल आर्य समाज के कारखाने हैं। आधुनिक शिक्षा के साथ–साथ आध्यात्मिक शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि उपर्युक्त क्रिया–कलापों को बढ़ावा देकर हम आर्य समाज की दशा और दिशा दोनों में बदलाव ला सकते हैं। यह सम्मेलन आर्य समाज को निशिचित रूप से एक नई दिशा प्रदान करेगा ऐसा मेरा विश्वास है।

इस अवसर पर बोलते हुए श्री मिठाई लाल सिंह जी ने कहा कि हम सबसे पहले अपने आपको देखें कि हम महर्षि के मन्तव्यों पर चल रहे हैं कि नहीं। मैं भी प्रयत्नशील हूँ कि समाज में एकता हो। उन्होंने कहा कि हम महर्षि दयानन्द को साक्षी मान लें तो आर्य समाज की एकता में कोई चीज बाधक नहीं हो सकती और आज ही एकता प्रस्ताव पारित हो जाना चाहिए।

भविष्य में समतामूलक समाज एवं वसुधैव कुटुम्बकम के संकल्प को मजबूत बनाएं –स्वामी अग्निवेश

स्वामी अग्निवेश जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि आज बहुत समय के बाद यह खुशनुमा घड़ी आई है। सार्वदेशिक सभा के तीनों पक्षों के प्रधान

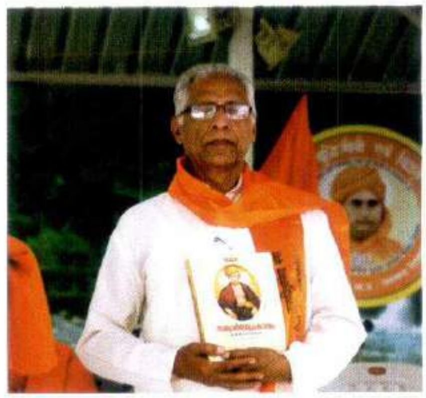

और मंत्री एक साथ एक मंच पर बैठे हुए हैं। यह एक सुखद घटना है। मैं श्री मिठाई लाल जी की बात से सहमत हूँ, आज यहाँ पर अनेकों विद्वान और गणमान्य विराजमान हैं, सबके समक्ष यहीं पर एकता का निर्णय कर

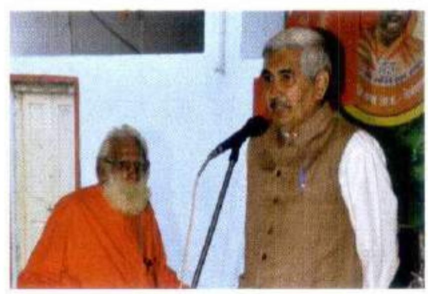

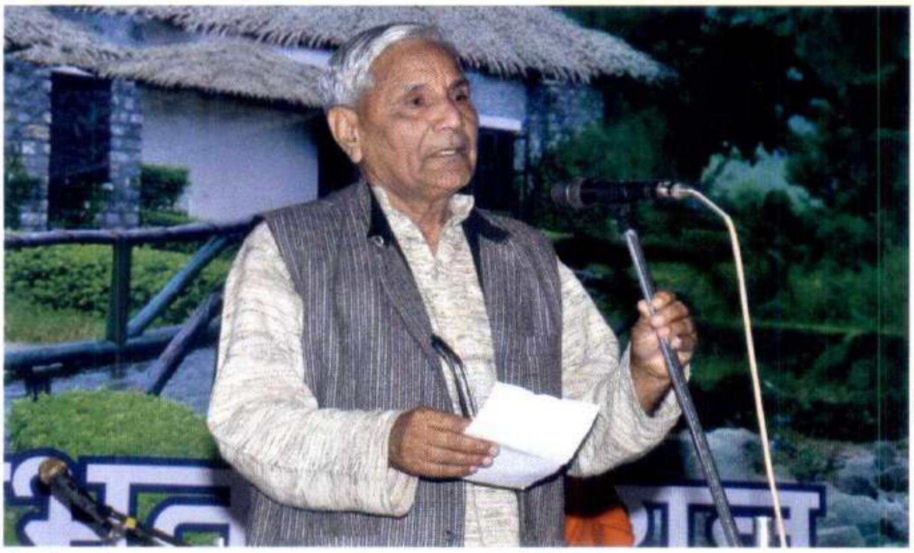

लें और जो प्रस्ताव पास करना हो कर दें। स्वामी जी ने कहा कि एक ईश्वर, एक संसार और एक परिवार के निर्माण के लिए मैंने कुछ प्रश्न रखे हैं जो मैं यहाँ पर बताना चाहता हूँ। आप सब इस पर गम्भीरता से विचार करें।

1. यदि सबका ई वर एक है तो इसकी औलादों के बीच असमानता क्यों ? क्या हममें से कुछ अयोग्य अथवा घटिया ई वर की संतानें हैं।
2. ऊँच–नीच, नस्ल, जाति अथवा वर्ण के आधार पर आखिर स्वयं को हम क्यों बांटते हैं ? अथवा धर्म, सम्प्रदाय या मज़हब के नाम पर हम समाज को क्यों बांटते हैं? क्या ये दीवारें हमने नहीं बनाई है? क्या साम्प्रदायिकता, जातिवाद अथवा राश्ट्रवाद की दीवारें गलत नहीं?
3. जेण्डर अथवा यौन अभिमुखता के आधार पर हो रहे भेदभाव को हम कैसे बर्दा त कर सकते हैं? क्या ई वर केवल पुरुश हो सकता है स्त्री नहीं? हमारे आपसी रिश्तों के निर्धारण का अधिकार पितृसत्ता के हाथ में ही क्यों रहे?
4. क्या आप मानते हैं कि कुछ को अमीर और कुछ को गरीब बनाकर पैदा करना ई वर की इच्छा है? अथवा क्या यह हमारे नीति–नियंत्ताओं के अव्यवहारिक तथा गलत आर्थिक नीतियों का परिणाम नहीं है? क्या समान स्वास्थ्य लाभ पढ़ने–लिखने का समान अधिकार तथा विकास का समान अवसर सभी बच्चों का अधिकार नहीं होना चाहिए?
5. यदि ई वर सर्वव्यापी है तो उसकी करुणा, दया अथवा सत्यता को महसूस करने के लिए क्या हमें किसी मध्यस्थता की आव यकता है? आखिर क्यों हम किसी खास धर्मग्रंथ, अवतार अथवा संदे वाहक के प्रति तार्किक नहीं हो पाते?
6. बड़े–बुजुर्गों द्वारा धार्मिक रीति–रिवाजों, कर्मकाण्डों तथा परम्पराओं आदि को अबोध बच्चों पर थोपना क्या उचित हैं? क्या हर इंसान को मनमाफिक धर्म चयन तथा उसे मानने की आजादी नहीं होनी चाहिए? धर्म के नाम पर बच्चों के व्यक्तित्व विकास को जकड़ देना क्या सही है?
7. क्या केवल स्वाद के लिए प ु–पक्षियों को मारना उचित है? व्यापार तथा उद्योग में लाभ हेतु इनका कृत्रिम यान्त्रिक प्रजनन और उनकी हत्या को क्या आप जायज़ मानते हैं? क्या ऐसी हत्याएं होनी चाहिए अथवा होने देनी चाहिए?

यदि ऊपर दिए गये सवालों के जवाब सरल और सकारात्मक हैं तो आध्यात्मिक क्रान्ति में आपका स्वागत है। दृढ़ नि चय एवं संकल्प के साथ हम सभी मिलकर वसुधैव कुटुम्बकम् अर्थात् संसार

एक, ई वर एक, परिवार एक के आद ों को साकार करें ।

1. वसुधैव कुटुम्बकम आंदोलन में न तो कोई संस्था होगी और न ही कोई संस्था प्रमुख। सभी प्रतिभागियों के हृदय ही स्वयं में संस्था एवं संस्था प्रमुख होगा/होगी।
2. वसुधैव कुटुम्बकम की सदस्यता स्वैच्छिक, अहिंसक, सकारात्मक, सक्रिय तथा व्यक्तिगत चरित्र की होगी।

आइए! हम सभी बच्चों एवं युवाओं को नयी दुनियां का जिसकी वि ोशता समानता, आध्यात्मिक एकता तथा सांझी संस्कृति हो के निर्माण का अगुआ/पथप्रद ाक बनावें। भविष्य के समतामूलक समाज एवं स ंस्कृति के आधार को मजबूत बनाएं।

शराबबन्दी के लिए विशाल आन्दोलन चलाये आर्य समाज

– डॉ. वेद प्रताप वैदिक

प्रसिद्ध पत्रकार तथा आर्य विद्वान् डॉ. वेद प्रताप वैदिक जी ने अपने सम्बोधन में कहा कि आज तो अद्भुत समा है। आज यहाँ पर आर्य समाज के तीनों सार्वदेशिक सभाओं के पदाधिकारी एक मंच पर विराजमान हैं। यह अत्यन्त उत्साहित करने वाली घटना है। उन्होंने कहा कि यह हैदराबाद की धरती यदि आज आजाद है तो उसका सारा श्रेय आर्य समाज को जाता है। आर्यों ने जो जज्बा

हैदराबाद आन्दोलन में निजाम के खिलाफ दिखाया था आज वही जज्बा इस सम्मेलन में नजर आ रहा है। मैं

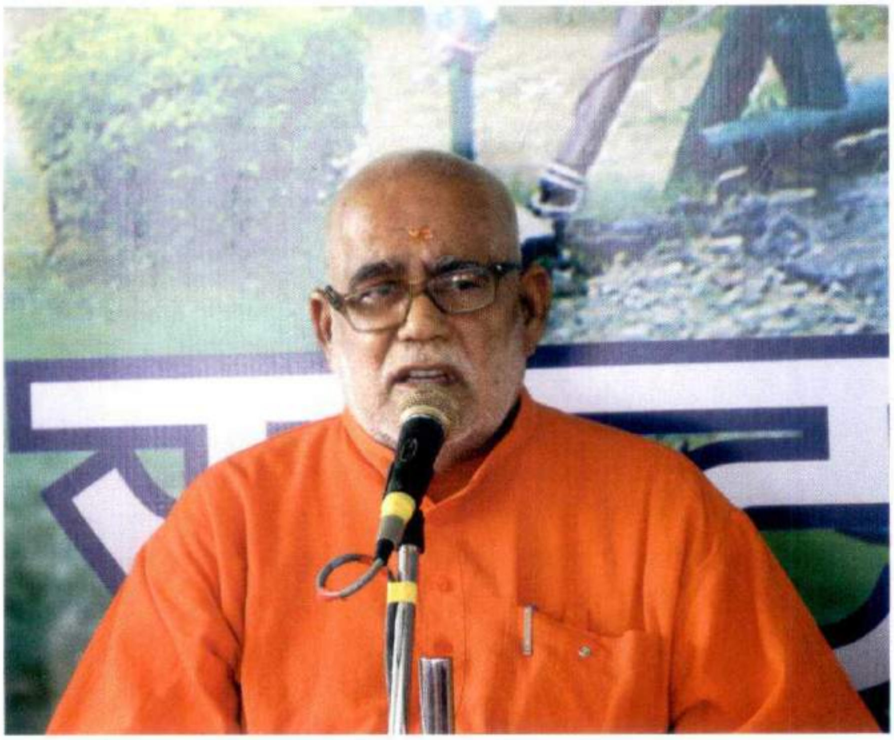

हैदराबाद के आर्यों का अपूर्व उत्साह देखकर अभिभूत हूँ। उन्होंने कहा कि यदि आर्य समाज जग गया जिसकी कल्पना मैं यहाँ आकर कर रहा हूँ तो भारत को महाशक्ति बनने से कोई रोक नहीं सकता। उन्होंने कहा कि एक विशाल जनान्दोलन आर्य समाज की तरफ से होना चाहिए जिसमें लाखों लोग हिस्सा लें और उसकी चर्चा चारों तरफ हो। आर्य समाज इस देश की ताकत रही है। उन्होंने कहा कि

शराबबन्दी का मुद्दा आज सबसे ज्वलन्त मुद्दा है इसे लेकर आन्दोलन खड़ा करना चाहिए। अदालतों में अंग्रेजी की अनिवार्यता को समाप्त करने के लिए भी आन्दोलन किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि यहाँ तीनों पक्षों के पदाधिकारी उपस्थित हैं, यहाँ केवल बातचीत नहीं होनी चाहिए बल्कि कुछ ठोस निर्णय लिये जाने चाहिए।

श्री आनन्द कुमार जी– कलकत्ता ने इस अवसर पर कहा कि आज समय आ गया है कि आर्य समाज के विद्वान्, बुद्धिजीवी और नेता संगठित होकर अपने कर्त्तव्य का पालन करें। आज इस ऐतिहासिक अवसर पर जितनी जल्दी हो सके एकता हो जाये। आज देश को आर्य समाज की महती आवश्यकता है। विभिन्न समस्याओं से देश जकड़ा हुआ है। सारी दुनिया आर्य समाज की ओर देख रही है, अब देरी नहीं होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि मैं कोई भी त्याग करने के लिए तैयार हूँ।

श्री प्रकाश आर्य जी ने अपने संबोधन में कहा कि यह महत्त्वपूर्ण सम्मेलन आर्य समाज के संगठन को सही दिशा देने के लिए रखा गया है और इसकी महती आवश्यकता भी है। उन्होंने कहा कि जिस संगठन में समर्पित कार्यकर्ता नहीं होते हैं वह संगठन आशा के अनुरूप चल नहीं पाता है। उन्होंने कहा कि आर्य समाज की एकता के लिए चिन्तन हो, मनन हो और शीघ्र निर्णय लिये जायें ऐसा मेरा मानना है। आज सबसे आवश्यक है कि हम सबकी दिनचर्या में आर्यत्व दिखाई देना चाहिए और सबसे पहले गुणवत्ता की बात होनी चाहिए। उन्होंने आशा व्यक्त करते हुए कहा कि अच्छे कार्य करने के लिए हम सब संगठित हों तो परिणाम अच्छे ही आयेंगे।

अपने उद्‌बोधन में बम्बई से पधारे श्री अरूण अबरोल जी ने कहा कि आज बड़े हर्ष का विषय है कि हमलोग जिसका इन्तजार लम्बे समय से कर रहे थे वह आज आ गया है। हम सबकी इच्छा है कि हम सबलोग संगठित होकर कार्य करें। आज इस सम्मेलन में कुछ न कुछ परिणाम अवश्य आना चाहिए। उन्होंने कहा कि संगठन सबसे पहले है और सारी बातें बाद की हैं। संगठन मजबूत हो जाये इसीलिए मैं यहाँ आया हूँ।

आई.पी.एस. डॉ. आनन्द जी ने कहा कि इस धरा को मैं प्रणाम करता हूँ। जिस धरती के आर्यो ने निजाम पर विजय पाई थी और आज फिर मैं यहाँ पर आर्यों का सैलाब देख रहा हूँ जो किसी अच्छी खबर को सुनने यहाँ आये हुए हैं। उन्होंने कहा कि हमने सत्ता के बारे में कभी नहीं सोचा लेकिन आज समय आ गया है कि

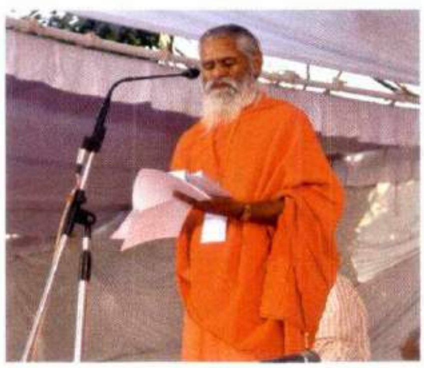

देश की सत्ता आर्यों को अपने हाथों में ले लेनी चाहिए। इस पर भी विचार होना चाहिए। उन्होंने कहा कि आर्य

समाज के कार्यों को भुलाया जा रहा है। एक ऐसा इतिहास लिखा जाना चाहिए जिसमें आर्यों का सम्पूर्ण विवरण हो जिसे सबलोग पढ़ें और जानें कि आर्य समाज कितनी महत्त्वपूर्ण संस्था है।

श्री हरिसिंह सैनी जी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि हम सबको दयानन्द जी के पास होना चाहिए। महर्षि की विचारधारा को अत्यन्त श्रद्धा और विश्वास के साथ अपनाने की जरूरत है। जिस दिन ऐसा हो जायेगा। सारी समस्याएँ अपने आप दूर हो जायेंगी। आर्य समाज का एकीकरण अत्यन्त आवश्यक कार्य है और यह होना ही चाहिए।

ठाकुर विक्रम सिंह जी ने अपने उदबोधन में कहा कि महर्षि दयानन्द जी ने जो क्रांति का बिगुल बजाया था उसे पूरी ताकत के साथ हमें आगे बढ़ाना है। आज देश में पाखण्ड, शराबखोरी, भ्रष्टाचार, नारी उत्पीड़न आदि समस्याओं का बोलबाला है। इन सब समस्याओं को हमें मिलकर दूर करना है। उन्होंने कहा कि आर्यो आगे बढ़ो और एकजुट होकर महर्षि के स्वप्नों को पूरा करो।

पलवल से पधारे स्वामी श्रद्धानन्द जी ने इस ऐतिहासिक सम्मेलन के लिए प्रो. विट्ठलराव आर्य जी को बधाई दी। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने एक कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की रचना की और इस ग्रन्थ का सारे विश्व के लोग सम्मान करते हैं। लेकिन विडम्बना यह है कि हमारे कुछ तथाकथित विद्वान इस महान ग्रन्थ में निरन्तर बदलाव करते जा रहे हैं। स्थिति यहाँ तक पहुँच गई है कि द्वितीय संस्करण जो महर्षि दयानन्द के समय में ही प्रकाशित हुआ था, उससे यह परिवर्तित संस्करण काफी अलग हो गया है। अनेकों विद्वानों द्वारा विरोध किये जाने के बाद भी ये लोग सत्यार्थ प्रकाश में निरन्तर बदलाव किये जा रहे हैं। यह अत्यन्त चिन्ता की बात है। इन लोगों ने सत्यार्थ प्रकाश के प्रारूप को बदलकर रख दिया है। आज समस्या यह पैदा हो गई है कि हम कौन सा सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें। उन्होंने कहा कि इस विशाल सम्मेलन में सत्यार्थ प्रकाश को बचाने के लिए कोई ठोस कदम उठाने का निर्णय अवश्य लिया जाये तथा द्वितीय संस्करण के अतिरिक्त अन्य किसी भी संस्करण को अमान्य किया जाये।

सत्यार्थ प्रकाश में हो रहे बदलावों को रोकने के लिए जनान्दोलन चलायें

–अशोक आर्य

उदयपुर से पधारे श्री अशोक आर्य जी ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि हैदराबाद का यह सम्मेलन आप सबके सहयोग से किसी निर्णय पर पहुँचे, ऐसी मेरी अभिलाषा है। उन्होंने कहा कि आज देश में स्थिति अच्छी नहीं है। बहुत से कार्यक्रम है जिन्हें हम सब मिलकर चला सकते हैं। जिम्मेदारियाँ अनुभवी लोगों को बांटी जायें। योग्यतानुसार कार्य सौंपे जायें तो बहुत कार्य हो सकता है। एक संगठन के नीचे अलग–अलग कार्य योग्यतम व्यक्तियों को सौंपे जायें। संगठन एक हो कार्य करने वाले अलग–अलग हों। उन्होंने कहा कि आज हम सो गये हैं, हमें जागना होगा। महर्षि के विरुद्ध लोग कुछ भी कहें हमें कोई फर्क नहीं पड़ता यह स्थिति ठीक नहीं है। हमारे अन्दर हर गलत कार्य के लिए आक्रोश होना चाहिए। उन्होंने कहा कि संगठन की एकता अत्यन्त आवश्यक है और यह कार्य होना ही चाहिए। सत्यार्थ प्रकाश की चर्चा करते हुए उन्होंने कई बदलाव जो किये गये हैं उनको विस्तार से बताया और आह्वान किया कि एक जनान्दोलन के द्वारा इस घिनौने कार्य को रोका जाना चाहिए।

इस अवसर पर श्री देवेन्द्र पाल वर्मा जी ने कहा कि हैदराबाद की इस पवित्र धरती पर हम लोग आर्य समाज को तेजस्वी स्वरूप प्रदान करने के लिए एकत्रित हुए हैं। जब सामूहिक मंथन होता है तो उसके दूरगामी परिणाम होते हैं। आर्य समाज के तेजस्वी स्वरूप को प्रकट करने के लिए एक बहुत बड़ा आन्दोलन करना होगा। उन्होंने कहा कि इस समय कई मुद्दे हैं किसी एक मुद्दे को लेकर एक बड़ा आन्दोलन किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि यहीं पर एक रूपरेखा बननी चाहिए और शराब के मुद्दे पर आन्दोलन की घोषणा होनी चाहिए। सारा देश उस आन्दोलन में हिस्सा ले तो तस्वीर बदलनी प्रारम्भ हो जायेगी।

पूर्व आई.जी. श्री वेद प्रकाश शर्मा जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि नशा और ड्रग्स आज की ज्वलन्त समस्याएँ हैं इस पर विचार होना चाहिए। उन्होंने कहा कि नशा न केवल सामाजिक

शांति भंग करता है अपितु यह अपराध की जननी भी है। मैंने इस पर बहुत कार्य किया है। यदि आर्य समाज इस पर कोई कार्य करता है तो मेरा पूर्ण सहयोग उसे प्राप्त होगा। उन्होंने कहा कि आर्य समाज को दिशा देने के लिए सेवा का माध्यम अपनाना पड़ेगा। मेरा मानना है कि नशामुक्ति अभियान का नेतृत्व आर्य समाज को अवश्य करना चाहिए।

डॉ. महावीर मीमांसक जी ने इस अवसर पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि सबसे पहले अनुकूल वातावरण बनाने की आवश्यकता है। वेद के सिद्धान्तों के अनुकूल वातावरण जब बन जायेगा तो सत्यार्थ प्रकाश के छठे समुल्लास के अनुरूप कार्य करना प्रारम्भ किया जायेगा। आर्य समाज ने छठा समुल्लास खोला ही नहीं है। उन्होंने कहा कि आज भी नौजवानों का रक्त खौल रहा है। लेकिन अनुकूल वातावरण तैयार नहीं है। समस्याएँ बहुत हैं अतः अलग–अलग विभागों के द्वारा अलग–अलग स्वतंत्र रूप से कार्य करने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि यदि आर्य समाज के तीनों पक्ष एक हो जाते हैं जिसके लिए स्वामी आर्यवेश जी अनथक प्रयास भी कर रहे हैं तो आर्य समाज में एक स्वर्णिम पृष्ठ पुनः हैदराबाद की धरती पर लिखा जायेगा।

आचार्य जयेन्द्र जी ने कहा कि आज इस ऐतिहासिक धरती पर विशाल जनसमुदाय को देखकर बहुत से भाव मेरे मस्तिष्क में चल रहे हैं और उचित समय पर मैं इन्हें रखूंगा। उन्होंने कहा कि आर्य समाज के जितने भी भवन हैं उनमें गुरुकुलों की स्थापना कर लें, सारी समस्यायें स्वतः सुलझ जायेंगी। आर्य समाज का कार्य त्यागी, तपस्वी और परिश्रमी व्यक्ति ही कर सकते हैं और ऐसे व्यक्तियों का निर्माण गुरुकुलों में ही होगा।

डॉ. पवित्रा विद्यालंकार जी ने एक कविता का पाठ किया। उन्होंने कहा कि पात्रता का ध्यान रखा जाना चाहिए तथा कार्यकर्ताओं का उचित सम्मान होना चाहिए। समस्याओं का समाधान यहीं से प्राप्त होगा।

बेटी बचाओ अभियान की अध्यक्षा सुश्री पूनम आर्या ने कहा कि हैदराबाद की इस पवित्र भूमि पर भारी जनसमूह देखकर हृदय अत्यन्त हर्षित है। यहाँ आकर एक नई प्रेरणा प्राप्त हुई है। आर्य समाज का स्वर्णिम अतीत हमें याद दिला रहा है कि आर्यो हैदराबाद की इस पवित्र भूमि से पुनः संकल्प लो और आर्य समाज को आगे बढ़ाने के लिए कटिबद्ध हो जाओ।

स्वामी धर्मानन्द जी उड़ीसा ने अपने विचार रखते हुए कहा कि आज हम सबलोग हैदराबाद की इस धरती पर उपस्थित हैं यह एक ऐतिहासिक क्षण है। इस धरती पर समय–समय पर अनेकों ऐतिहासिक कार्य सम्पन्न हुए हैं और एक अन्य ऐतिहासिक कार्य फिर से यहाँ होने जा रहा है। आर्य समाज की एकता आज हर आर्य की जुबान पर है। उन्होंने कहा कि आर्य समाज का कार्य आगे बढ़ रहा है। आदिवासी क्षेत्रों में आर्य समाज ने बहुत कार्य किया है और कर रहा है। लेकिन यदि सार्वदेशिक सभा संगठित होकर कार्य करे तो सोने पर सुहागा हो जायेगा। उन्होंने कहा कि आप सब आज यहाँ उपस्थित हैं मैं आप सबको बधाई, धन्यवाद तथा आशीर्वाद दे रहा हूँ कि आप सब सफल हों। उन्होंने कहा कि देश के सामने विपत्तियाँ आ रही हैं। देश सुरक्षित नहीं है। अतः संगठित होकर कार्य करो। उन्होंने आह्वान किया कि 50 वर्ष से ऊपर के व्यक्ति आगे आयें और आर्य समाज का कार्य आगे बढ़ायें।

आर्य विद्वत् संगोष्ठी (द्वितीय दिवस)

राष्ट्रभृत यज्ञ के उपरान्त अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम आर्य विद्वत् संगोष्ठी का आयोजन किया गया। आयोजन से पूर्व समयाभाव के कारण जाने वाले गणमान्य व्यक्तियों का सम्मान भी किया जाता रहा। सर्वश्री मिठाई लाल सिंह जी को शॉल, स्मृति चिन्ह आदि के द्वारा सम्मानित किया गया। प्रो. विट्ठलराव आर्य, श्री सत्यव्रत सामवेदी, श्री हरिकिशन वेदालंकार आदि ने इनका सम्मान किया। इसी प्रकार पं. माया प्रकाश त्यागी, श्री अरूण अबरोल, श्री देवेन्द्र पाल वर्मा, डॉ. महावीर मीमांसक, स्वामी धर्मानन्द जी, आचार्य कोमल कुमार जी, श्री नरेश दत्त आर्य भजनोपदेशक आदि का सम्मान प्रो. विट्ठलराव आर्य जी, आचार्य सोमदेव जी, श्री हरिकिशन जी आदि ने शॉल, स्मृति चिन्ह आदि प्रदान कर सम्मानित किया।

इस अवसर पर श्री अभिमन्यु कुमार खुल्लर की पुस्तक 'ऋषि समर्पण' तथा श्री सुभाष अष्टिकर की पुस्तक का विमोचन श्री मिठाई लाल जी, श्री सुरेश चन्द्र जी, प्रो. विट्ठलराव जी, स्वामी धर्मानन्द जी, श्री देवेन्द्र पाल वर्मा जी आदि ने किया।

सारे देश से भारी संख्या में

पधारे विद्वानों, बुद्धिजीवियों, आचार्यों, पुरोहितों और आर्य नेताओं को विभिन्न

दस वर्गों में बांटकर प्रत्येक विद्वान के विचारों को जानने का यह अत्यन्त महत्त्वपूर्ण निर्णय था। प्रत्येक वर्ग में 10–12 विद्वानों को स्थान दिया गया था तथा प्रत्येक वर्ग का एक संयोजक नियुक्त किया गया था। अलग–अलग स्थानों पर बैठकर विद्वानों ने निम्न बिन्दुओं पर अपने–अपने विचार प्रस्तुत किये। विचारणीय बिन्दु इस प्रकार हैं

1. राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान एवं उपायों के सम्बन्ध में आर्य समाज का दृष्टिकोण क्या हो ? वर्तमान में आर्य समाज आम जनता के जीवन को प्रभावित करने वाले राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक विषयों पर क्या कार्यशैली अपनाये ताकि आम जनता के साथ आर्य समाज सीधा जुड़ सके।
2. वर्तमान के समस्त प्रचार माध्यमों यथा प्रिन्ट मीडिया (अखबार व पत्रिकाएँ), इलेक्ट्रानिक मीडिया (टी. वी., रेडियो आदि) के द्वारा वेद, दयानन्द व आर्य समाज के सिद्धान्तों के प्रचार–प्रसार की योजना क्या हो?
3. सिद्धान्तों के गहन विषयों पर विशेष शोध एवं शंका समाधान हेतु विद्वत समिति की रूपरेखा।
4. वैदिक धर्म पारिवारिक धर्म कैसे बने विषय पर विशेष चर्चा।
5. आर्य समाजों के वार्षिकोत्सव, साप्ताहिक सत्संग व अन्य महत्त्वपूर्ण कार्यक्रमों में उपस्थिति के सम्बन्ध में प्रभावशाली योजना क्या हो?
6. आर्यों में तथा सामान्य जनता में आध्यात्मिक प्रवृत्ति को बढ़ाने की योजना क्या बने?
7. बालक, बालिकाओं व युवक–युवतियों को संस्कारित करने तथा आर्य समाज में दीक्षित करने हेतु चरित्र निर्माण शिविरों, वाद–विवाद, भाषण, लेखन आदि प्रतियोगिताओं की योजना एवं अन्य कार्यक्रम क्या हों ?
8. गुरुकुलों के स्नातकों एवं आर्य सामाजिक कार्यकर्ताओं का सम्मान एवं आर्य समाज के कार्यों में उपयोग की योजना।
9. आर्य समाज की स्थानीय इकाई को जन सामान्य के लिए उपयोगी बनाने तथा इसके माध्यम से ऐसे जनसेवा के कार्य करने जिनसे सामान्य जनता आर्य समाज से जुड़े आदि की योजना।

उपर्युक्त बिन्दुओं पर प्रत्येक विद्वान के विचारों को संग्रहित कर प्रत्येक समूह के संयोजक विद्वान द्वारा अगले सत्र में आम जनता के सामने रखा जाना था। लगभग तीन घण्टे चली इस विद्वत् संगोष्ठी में सारे देश से पधारे लगभग सभी विद्वानों तथा बुद्धिजीवियों को अपने विचार रखने का अवसर प्राप्त हुआ और सभी ने अत्यन्त विद्वतापूर्ण विचार आर्य समाज के संगठन को तेजस्वी बनाने के लिए दिये। हैदराबाद की धरती आर्य समाज

की दृष्टि से त्याग, बलिदान, समर्पण और अनवरत संघर्ष करने वाली धरती है और यहाँ पर आर्य विद्वानों ने आर्य समाज का उत्थान कैसे हो, आर्य समाज का प्रचार–प्रसार कैसे किया जाये, आर्य समाज सशक्त कैसे बनाया

जाये और कैसे विश्व क्षितिज पर आर्य समाज को चमकाया जाये इस पर गहन चिन्तन किया। विभिन्न समूहों के संयोजकों में प्रसिद्ध वैदिक विद्वान डॉ. नरेन्द्र वेदालंकार, स्वामी विदेह योगी, आचार्य धनंन्जय, श्री रामसिंह, श्री बिरजानन्द, डॉ. अनिल आर्य, श्री यशपाल 'यश', श्री सुभाष अष्टिकर, श्री अरूण अबरोल, डॉ. पवित्रा विद्यालंकार, डॉ. वसुधा शास्त्री शामिल थे।

आर्य विद्वत् सम्मेलन

बुद्धिजीवी संगोष्ठी के उपरान्त सायंकाल आर्य विद्वत् सम्मेलन का प्रारम्भ विशाल पंडाल में बने विशेष मंच से किया गया। इस सम्मेलन में प्रातःकाल आर्य विद्वत् संगोष्ठी में लिये गये निर्णयों को संयोजकों के द्वारा प्रस्तुत किया। इस श्रृंखला में सर्वप्रथम डॉ. नरेन्द्र वेदालंकार ने अपने समूह के विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि आर्य समाज को गति प्रदान करने के लिए पुरोहितों का बहुत बड़ा दायित्व है। हमारे समूह के विद्वानों ने एकमत से यह स्वीकार किया कि आर्य समाजों में पुरोहितों को उचित सम्मान प्रदान

अधिक से अधिक परिवारों में वे यज्ञ को सम्पादित करें। इन प्रक्रियाओं से आर्य समाज की विचारधारा को आमजनों तक पहुँचाने में काफी सहायता मिलेगी और आर्य समाज अपने उद्देश्यों में सफल हो पायेगा।

श्री संजय सत्यार्थी जी ने अपने समूह के विद्वानों के विचारों को संग्रहीत कर कहा कि सभाओं के माध्यम से ये जो एकता का प्रयास किया जा रहा है, यह एक तरह से हैदराबाद के स्वर्णिम इतिहास को दोहराया जा रहा है। आर्य समाज के संगठन में जो भी कमी है, उसे अविलम्ब दूर किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि हमारे समूह के सदस्यों की यह राय थी कि गुरुकुल प्रणाली को सशक्त किया जाये और आर्य समाज के माध्यम से गुरुकुलों

को बढ़ाया जाये। प्रत्येक आर्य समाज में गुरुकुल खोलने की व्यवस्था की जानी चाहिए। उन्होंने कहा कि आर्य समाज, प्रान्तीय सभाएं और सार्वदेशिक सभा एक सूत्र में बंधे होने चाहिए, तभी आर्य समाज उद्बुद्ध हो सकेगा। उन्होंने कहा कि आर्य समाज समभाव में विश्वास रखता है। आर्य समाज में कर्मठता को विशेष महत्त्व दिया जाना चाहिए और संध्या तथा ध्यान के लिए विशेष कार्यक्रम बनाये जाने चाहिए। आज सबसे बड़ी समस्या जातिवाद तथा नशाखोरी की है जिसके लिए प्रत्येक आर्य समाजी को कटिबद्ध होकर कार्य करना होगा। उन्होंने कहा कि यदि आर्य समाज के विरुद्ध आवाज उठती है तो उसका निराकरण तुरन्त

किया जाना चाहिए।

संगठन की एकता से सभी समस्याओं का समाधान हो सकता है – स्वामी विदेह योगी

स्वामी विदेह योगी ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि समूह का मानना था कि संगठन की एकता से सभी समस्याओं का समाधान हो सकता है। अतः संगठन को अत्यन्त सुदृढ़ करने की आवश्यकता है। आर्य समाज के प्रचार–प्रसार के लिए प्रचारकों व भजनोपदेशकों को ग्रामीण क्षेत्रों में भेजा जाये और प्रचार विभाग बनाकर इस कार्य को आगे बढ़ाया जाये। मीडिया में हमारे समाचार अधिक संख्या में छपे, इसके लिए एक विशेष कोष की स्थापना की जानी चाहिए। एक यह भी विचार उभरकर सामने आया कि आर्य समाजों के वार्षिकोत्सव से पहले 15 दिनों तक पारिवारिक यज्ञ और सत्संग किये जायें। छुट्टियों के दिनों में चरित्र निर्माण शिविर लगाये जायें और सभाओं को शिक्षण तथा प्रशिक्षण की व्यवस्था करनी चाहिए। प्रत्येक आर्य समाज में वानप्रस्थी तथा संन्यासी अवश्य ही रखे जाने चाहिए। आर्य समाज के पदाधिकारियों तथा कार्यकर्ताओं को सेवा सम्बन्धित कार्यों में अपने आपको लगाना चाहिए। इसके अतिरिक्त आर्य समाज संगठित होकर शराबखोरी, भ्रष्टाचार, पाखण्ड आदि बुराईयों के विरुद्ध आन्दोलन चलाये और सबसे महत्त्वपूर्ण विचार यह आया कि युवाओं को आर्य समाजों में आगे लाया जाये और उन्हें पदाधिकारी भी बनाया जाये।

आचार्य धनन्जय ने अपने समूह की तरफ से कहा कि गुरुकुल आर्य समाज की धरोहर है। प्रत्येक आर्य समाज में गुरुकुल खोले जाने चाहिए और गुरुकुलों को संभालना, उनका संचालन करना आर्य समाज के अधिकारियों की जिम्मेदारी होनी चाहिए। ऐसी व्यवस्था भी होनी चाहिए कि गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में सभी गुरुकुलों को समाविष्ट किया जाये। यह भी विचार था कि स्वस्थ शास्त्रार्थ परम्परा को पुनः प्रारम्भ किया जाना चाहिए। महत्त्वपूर्ण विचार विद्वानों ने यह रखा कि जातिसूचक सम्बोधन

को तुरन्त छोड़ देना चाहिए तथा आठ और साठ वर्षीय लोगों को घर छोड़ देना चाहिए।

श्री राम सिंह आर्य ने अपने समूह के विचारों को प्रस्तुत करते हुए कहा कि सामूहिक विचार–मंथन का यह कार्यक्रम अत्यन्त प्रशंसनीय है। आर्य समाज अन्तर्राष्ट्रीय संस्था है। आर्य समाज के पदाधिकारियों को साम्राज्यवाद, पूंजीवाद का नाश करने के लिए कटिबद्ध होना चाहिए। जाति तथा वर्ग भेद को विनष्ट करने के लिए विशेष प्रयास किये जाने चाहिए। और नारा देना चाहिए कि वेदों की ओर लौटो। सम–सामयिक विचारों पर आर्य समाज के सत्संगों में चर्चा होनी चाहिए और सबसे आवश्यक कि आर्य समाजियों को सबसे पहले अपने परिवारों को आर्य बनाना चाहिए।

श्री बिरजानन्द ने अपने समूह के विचारों को व्यक्त करते हुए कहा कि आज की सबसे बड़ी आवश्यकता युवाओं का निर्माण है। युवाओं के निर्माण के लिए क्रांतिकारी कदम उठाने की आवश्यकता है। विद्वानों ने कहा कि मनुर्भव का रास्ता अपनाना होगा। आर्य समाज के प्रचार–प्रसार के लिए

आधुनिक तकनीक का इस्तेमाल अत्यन्त आवश्यक है। इलेक्ट्रानिक मीडिया के माध्यम से आर्य समाज का प्रचार–प्रसार करने की व्यवस्था की जानी चाहिए। उन्होंने कहा कि आज की स्थिति यह है कि हम लोग अपने बच्चों को संस्कारित नहीं कर पा रहे हैं। आर्य समाजों में समय–समय पर संस्कार शिविर लगाकर बच्चों को संस्कारित करने का कार्य किया जाना चाहिए। बाल सभाओं को बढ़ावा दिया जाना चाहिए तथा इसमें प्रतियोगिताएँ आयोजित कर आकर्षक बनाना चाहिए। श्री बिरजानन्द ने कहा कि गुरुकुलों के ब्रह्मचारियों व संन्यासियों को सार्वदेशिक सभा के द्वारा उपर्युक्त काम सौंपे जाने चाहिए। उन्होंने कहा

कि आर्य समाज के भवनों का दुरुपयोग हो रहा है। उसमें स्कूल और अस्पताल खोले जा रहे हैं। इनकी जगह पर बच्चों के चरित्र निर्माण शिविर लगाये जाने को प्राथमिकता देनी चाहिए।

पर्यावरण शुद्धि के लिए यज्ञ से अच्छी कोई विधा नहीं है
– डॉ. पवित्रा विद्यालंकार

इस अवसर पर डॉ. पवित्रा विद्यालंकार आचार्या कन्या गुरुकुल हाथरस ने कहा कि पर्यावरण तथा आतंकवाद पर आर्य समाज का विशेष रुख स्पष्ट होना चाहिए। पर्यावरण शुद्धि के लिए यज्ञ से अच्छी कोई विधा नहीं है। अतः अनुसंधान केन्द्र खोलकर यज्ञ पर विशेष अनुसंधान कराने की आवश्यकता है। सामाजिक, राजनैतिक बुराईयों को दूर करने के लिए कार्यक्रम बनाकर कार्य किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि आर्य समाज से जब तक आम आदमी नहीं जुड़ेगा तब तक सफलता प्राप्त नहीं होगी। आर्य समाज को आज विवाह की संस्था बना दिया गया है। इस कलंक को भी मिटाने की आवश्यकता है।

श्री यशपाल 'यश' जी ने अपने समूह के उदगारों को प्रस्तुत करते हुए कहा कि मानवता के कल्याण के लिए कुछ कर गुजरने की अभिलाषा आर्यों में होनी चाहिए। आर्य समाजों में परिवार के सदस्यों को लाने के लिए प्रयास किये जाने चाहिए। अन्तर्जातीय विवाहों को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए तथा उनकी सुरक्षा का भी ध्यान दिया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि हमारे समूह के अधिकांश विद्वानों का कहना था कि 60 वर्ष से ज्यादा आयु के लोगों को अपनी भूमिका में बदलाव लाना चाहिए। उन्होंने कहा कि यह लोग सामाजिक सरोकारों के कार्यों में सम्मिलित हों, बच्चों को संस्कारित करने का कार्य करें तथा अन्य सामाजिक गतिविधियों में अपने को लगायें तो आर्य समाज को काफी सहायता मिल सकती है। उन्होंने कहा कि समय–समय पर आर्य समाजों में कार्यशालाएँ चलाई जायें और प्रशिक्षण प्रदान किया जाये तथा बच्चों की रुचि के अनुसार कार्यक्रम बनाये जायें।

संगोष्ठियों के संयोजकों के वक्तव्य के उपरान्त अन्य विद्वानों ने अपने विचार व्यक्त किये। जिसमें सर्वप्रथम

श्री सुभाष जी अष्टिकर ने वक्तव्य देते हुए कहा कि आज आर्य समाजियों का जीवन नहीं बोल रहा है। हमारा

वेद एक है, यज्ञ भी एक है, सबकुछ एक है तो सभाएँ अनेक क्यों हैं?

इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री श्री विनय आर्य ने अपने सम्बोधन में कहा कि आर्य समाज का प्रत्येक सदस्य आर्य समाज की समस्याओं को समझ रहा है और लोग कटिबद्ध होकर कार्य कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि मैं आपको आश्वस्त करना चाहता हूँ कि आगे आने वाला समय अत्यन्त अच्छा होगा। उन्होंने कहा कि आर्य समाज का छोटे से छोटा कार्यकर्ता बड़े से बड़े विद्वान, संन्यासी, विद्वतवर्ग अपने आप में सर्वात्मना समर्पित हैं और त्याग, तपस्या के उदाहरण हैं। इसलिए चिन्तित होने की बात नहीं है। उन्होंने कहा कि काम करने वाले लोगों की लोग बुराईयाँ करते हैं, उन्हें बुराईयाँ करने दें केवल अपने कान बन्द कर लें। उन्होंने कहा कि अधिकारियों की बुराईयाँ मत करो, इनकी हमेशा प्रशंसा करो, क्योंकि प्रशंसा से उत्साह पैदा होता है और उत्साहित व्यक्ति अच्छे–अच्छे कार्यों को करने में सफल होता है। उन्होंने कहा कि जैसे विद्वान आर्य समाज के पास हैं ऐसे विद्वान किसी के पास नहीं हैं। अपने विद्वानों का सम्मान करने के लिए हमेशा तत्पर रहना चाहिए। उन्होंने जैन संन्यासियों का उदाहरण देते हुए कहा कि जैन संन्यासी यदि आ रहा है तो पचासों लोग उसके स्वागत के लिए खड़े हो जाते हैं। उसे अपने परिवार में ले जाते हैं उसका सम्मान करते हैं। यही परम्परा हमें अपने विद्वानों, संन्यासियों के प्रति अपनानी चाहिए। उन्होंने युवाओं का आह्वान करते हुए कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द और प्रो. गुरुदत्त जैसे संन्यासियों और विद्वानों की जीवनियाँ अवश्य पढ़ी जानी चाहिए। इनका जीवन त्याग और तपस्या का अनुकरणीय उदाहरण है। जीवनियाँ पढ़ने से हमारे अन्दर भी आगे बढ़ने की ललक पैदा होती है। उन्होंने आर्यनेता प्रो. विट्ठलराव आर्य से कहा कि हैदराबाद की इस धरती पर हैदराबाद आन्दोलन की स्मृति को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए एक विशाल स्मारक आप बनवायें। जिसकी अत्यन्त आवश्यकता है। इसके लिए हमें जो दायित्व दिया जायेगा उसे पूरा करेंगे तथासाधन जुटायेंगे।

पूरे कार्यक्रम के संयोजक आचार्य सोमदेव जी शास्त्री ने अपने उद्बोधन में कहा कि आर्य समाज की स्थापना एक महान उद्देश्य को लेकर की गई थी। इसमें त्याग, तप और तपस्या जैसे गुणों से भरपूर व्यक्तियों की आवश्यकता है। आज हमलोग आर्य समाज के उद्देश्य को भूलते जा रहे हैं। हमें अपने कार्य आर्य समाज के उद्देश्यों को ध्यान में रखकर करने चाहिए। उन्होंने कहा कि महर्षि जी ने नारा दिया था – 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' सारे संसार को आर्य बनाओ। लेकिन हम लोग अपने परिवार को ही आर्य नहीं बना पाये। आर्य समाज को अपने स्वरूप को बढ़ाना होगा। विश्व की समस्याओं को ध्यान में रखते हुए अपने कार्यक्रम बनाने होंगे। उन्होंने कहा कि हमारा आध्यात्मिक पक्ष अत्यन्त कमजोर हो चुका है। संध्या तथा साधना का मार्ग छूटता जा रहा है। उन्होंने कहा कि हम सबको संकल्प लेना चाहिए कि बिना संध्या के जलपान ग्रहण नहीं करेंगे। उन्होंने कहा कि जब तक आर्य समाज को पारिवारिक धर्म नहीं बनाया जायेगा तब तक वैदिक धर्म आगे नहीं बढ़ पायेगा। उन्होंने कहा कि अपने बच्चों को संस्कारित करने की अत्यन्त आवश्यकता है। जब हम संध्या या हवन करते हैं तो अपने परिवार को, अपने बच्चों को साथ में अवश्य बैठायें। आचार्य जी ने कहा कि आज जड़ों को सींचने की आवश्यकता है, पत्तों को सींचने का कोई लाभ नहीं है। उन्होंने कहा कि मैं आर्य समाज के कार्यकर्ताओं से अपील करना चाहता हूं कि महर्षि दयानन्द, लेखराम और श्रद्धानन्द को याद करते हुए मनसा, वाचा, कर्मणा आर्य समाज का कार्य करें। उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश की चर्चा करते हुए कहा कि सत्यार्थ प्रकाश हमारी अमूल्य धरोहर है और इसे सुरक्षित रखना हम सबका कर्त्तव्य है। सत्यार्थ प्रकाश में जो लोग बदलाव कर रहे हैं उन्हें सबक सिखाने की जरूरत है और सत्यार्थ प्रकाश में बदलाव को तुरन्त बन्द किया जाना चाहिए।

सम्मान एवं समापन समारोह (तृतीय दिवस)

राष्ट्रभृत महायज्ञ की पूर्णाहुति के उपरान्त सम्मेलन में पधारे बुद्धिजीवियों, विद्वानों और संन्यासियों के सम्मान करने की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई। इसी के बीच बहुत बड़ी संख्या में आये जिन विद्वानों और बुद्धि जीवियों को अपने विचार रखने का अवसर प्राप्त नहीं हो पाया था, अतः उनके उद्बोधन भी बीच–बीच में होते रहे।

इस अवसर पर डॉ. धर्मेन्द्र कुमार जी ने अपने उद्बोधन में 5 सकार को अपनाने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि सत्संग, स्वाध्याय, सेवा की भावना,

समर्पण तथा स्मरण इन पांच सूत्रों को यदि आर्यजनता अपना ले तो आर्य

समाज को गति प्रदान करने से कोई रोक नहीं सकता। उन्होंने कहा कि

महर्षि ने जो कार्य हमलोगों के लिए छोड़े हैं उनको पूरी निष्ठा और परिश्रम के साथ आगे बढ़ाना है। उन्होंने कहा कि सबसे पहले मनुर्भव की भावना का विस्तार करना होगा।

श्री हरिशंकर जी अग्निहोत्री– आगरा ने कहा कि सबसे पहली प्राथमिकता संगठन के एकीकरण की है। संगठन एक होना चाहिए। उन्होंने कहा कि आज सारा विश्व विभिन्न प्रकार की समस्याओं से ग्रसित है। आर्य समाज को उस तरफ भी ध्यान देना चाहिए। उन्होंने कहा कि हम सबको आर्य समाज के कार्य के लिए किसी का मुँह देखने की आवश्यकता नहीं है। हमें जो करना है वो हम करने के लिए स्वतंत्र हैं। पूर्ण निष्ठा, परिश्रम और ईमानदारी के साथ हमें आर्य समाज के कार्य को करने के लिए कटिबद्ध होना पड़ेगा। आज आधुनिक युग में इलेक्ट्रनिक मीडिया का सहारा लेकर हम अपनी आवाज देश और विदेश में आसानी से पहुँचा सकते हैं। आर्य समाज के पुरोहितों का यह दायित्व होना चाहिए कि वो लोगों को प्रेरित करें कि अग्निहोत्र को जीवन में अपनाये बिना जीवन सफल नहीं हो सकता।

आध्यात्मिक दुःखों को दूर करने में वेद मंत्रों का पाठ रामबाण –डॉ. बलवीर

रोहतक विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के अध्यक्ष डॉ. बलवीर जी ने कहा कि इस प्रकार के सम्मेलनों के आयोजन से कार्यकर्ताओं में उत्साह एवं संगठन की भावना बलवती होती है। उन्होंने कहा कि यज्ञ करने से आध्यात्मिक और शारीरिक दुःखों से छुटकारा मिलता है। प्रतिदिन हम सभी को यज्ञ करना चाहिए। उन्होंने कहा कि 90 प्रतिशत बीमारियाँ आध्यात्मिक दुःखों के कारण हैं और आध्यात्मिक दुःखों को दूर करने के लिए सबसे बड़ी दवा वेद के मंत्र हैं। उन्होंने कहा कि वेदमंत्रों के पाठ से सकारात्मक ऊर्जा का हमारे अन्दर संचार होता है जो नकारात्मक ऊर्जा को दूर करने का सबसे बड़ा साधन है।

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अनिल आर्य जी ने कहा कि प्रो. विट्ठलराव आर्य जी ने

हैदराबाद की इस ऐतिहासिक धरती पर एक नये युग का इतिहास रच दिया है। उन्होंने कहा कि आर्य समाज क्या है और भविष्य का आर्य समाज कैसा होगा, इस पर विचार करने के लिए पूरे देश से विद्वान तथा बुद्धिजीवी इस सम्मेलन में पधारे हैं। चिन्तन करके हम कोई सही रास्ता तलाश लेंगे। लेकिन सबसे बड़ी आवश्यकता आज इस बात की है कि हम अतीत को छोड़कर भविष्य की ओर देखना प्रारम्भ करें। उन्होंने कहा कि आर्य समाज को प्रगति पथ पर ले जाने के लिए युवा शक्तियों को जोड़ने के लिए हमें कार्यक्रम बनाने होंगे। हिन्दू समाज को यज्ञ और योग के द्वारा जोड़ना होगा। संस्कारित युवा ही आर्य समाज में आकर देश को मझधार से निकालने का कार्य करेंगे।

प्रसिद्ध वैदिक विद्वान डॉ. रघुवीर जी वेदालंकार ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि आर्य समाज के क्रांतिकारियों के बल पर देश आजाद हो पाया था। उन्होंने कहा कि कोई भी धर्म राजनीतिक शक्ति के बिना आगे नहीं बढ़ सकता। हम लोगों ने बहुत बड़ी गलती राजनीति में न आने का निर्णय लेकर की थी, लेकिन अब इसको सुधारने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि राजनीति में प्रवेश कीजिए, सारे काम आसानी से होते चले जायेंगे। उन्होंने कहा कि आज राष्ट्र विभिन्न संकटों से जूझ रहा है और यह राष्ट्र तभी बचेगा जब आर्य राजनीति में प्रवेश करेंगे। उन्होंने कहा कि हमारी जड़ों को खोखला किया जा रहा है और प्रसिद्ध उक्ति 'एकै साधे सब सधे..' के अनुसार राजनीति में प्रवेश करते ही सारी समस्याएँ स्वतः ही समाप्त हो जायेगी। उन्होंने कहा कि आर्य समाज के पास धनबल, जनबल और बाहुबल किसी प्रकार की कमी नहीं है। राजनीति में आने के लिए बिगुल बजा दीजिए।

आचार्य दयासागर जी ने कहा कि यह सम्मेलन हम सबमें नये जोश का संचार करने में सफल हुआ है। अब नई अंगड़ाई लेकर नये उत्साह के साथ हम सबको आगे बढ़ना चाहिए। उन्होंने कहा कि आर्य समाज में एक ऐसी व्यवस्था की जानी चाहिए कि

अधिकारी बनने से पहले कम से कम 4 वर्ष का प्रशिक्षण लेना अनिवार्य हो

और जब प्रशिक्षित पदाधिकारी और कार्यकर्ता आर्य समाज का कार्य देखेंगे तो एक नई ऊर्जा का संचार होगा।

श्री मधुसूधन शास्त्री–सिलीगुड़ी ने कहा कि आज यह ऐतिहासिक दिन बहुत प्रतीक्षा के बाद आया है जबकि हमारे सभी नेता एक मंच पर यहाँ उपस्थित हैं। हम सब साथ मिलकर कार्य करें और आर्य समाज को प्रगति पथ पर आगे ले जायें। यही मेरी अभिलाषा है।

गुरुकुल दखौला के आचार्य स्वामी विश्वानन्द जी ने कहा कि दुनिया की जितनी भी समस्याएँ हैं वे सब आर्य समाज की समस्याएँ हैं क्योंकि आर्य समाज एक सार्वभौमिक संस्था है। सारे विश्व का कल्याण करने की क्षमता इस संस्था के अन्दर है। आज सारी दुनिया हमारे पीछे आने के लिए तैयार है। हमारे पास पांच यज्ञ और सोलह संस्कार की ऐसी पूंजी है कि हम सभी को अपने साथ जोड़ सकते हैं। हम अपने घरों में यज्ञ करें, सत्संग करें और परिवार के सभी सदस्यों को एक साथ बैठाकर यह कार्य किया जाना चाहिए। आर्य समाजों के साप्ताहिक सत्संग में परिवार सहित हम सबको भाग लेना चाहिए। उन्होंने कहा कि हम चाहे कितना भी ज्ञान अर्जित कर लें लेकिन उसे जीवन में नहीं उतारा तो सब व्यर्थ है।

इस अवसर पर बंधुआ मुक्ति मोर्चा के महामंत्री प्रो. श्योताज सिंह जी ने अपने सारगर्भित उद्बोधन में कहा कि प्राकृतिक साधनों के संरक्षण तथा टीकाऊपन के लिए गम्भीरता से विचार करने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि पशु–पक्षियों की हत्या आज सबसे बड़ी समस्या बनकर उभर रही है। हम अहिंसा की बात करते हैं। लेकिन करोड़ों पशु–पक्षियों की हत्या करके उनको खा लिया जाता है। बच्चों का शोषण हो रहा है, उनके अधिकार छीने जा रहे हैं, ये सब सामाजिक समस्याएं हैं। आर्य समाज को इन समस्याओं के निदान के लिए आगे आना होगा। उन्होंने कहा कि बंधुआ मुक्ति मोर्चा वर्षों से दलित, आदिवासी बच्चों को लेकर चिन्तित है और उनके उत्थान के लिए कार्यरत है।

खुर्जा से पधारे डॉ. धीरज सिंह जी ने कहा कि यह एक अनूठा सम्मेलन है। आर्य समाज को सही दिशा देने के लिए देशभर से आर्य विद्वान् तथा नेताओं ने आकर अपने विचार दिये हैं। उन्होंने कहा कि सबसे पहले हमें अपने अन्दर झांककर देखना चाहिए। आर्य समाज की विचारधारा को हमें अपने अन्दर धारण करना होगा तभी हम आम जनता को प्रभावित कर पायेंगे। उन्होंने कहा कि आर्य समाज में प्रचारकों की कमी है और इस कमी को अविलम्ब दूर किया जाना चाहिए।

विद्वानों के उद्बोधनों के बीच में पूरे देश से पधारे वरिष्ठ विद्वान् और बुद्धिजीवियों तथा सम्माननीय संन्यासियों का विधिवत सम्मान भी निरन्तर चलता रहा। इसी श्रृंखला में स्वामी अग्निवेश जी, स्वामी प्रणवानन्द जी, प्रो. विट्ठलराव जी, श्री हरिकिशन जी, आचार्य सोमदेव जी ने स्मृति चिन्ह और शॉल भेंटकर निम्नलिखित विद्वानों का सम्मान किया।

श्री विनय आर्य दिल्ली, प्रो. जयदेव वेदालंकार, डॉ. धीरज सिंह, श्री गोविन्द सिंह भंडारी, श्री दयाकृष्ण काण्डपाल, श्री सत्यव्रत सामवेदी, आचार्य हरिशंकर

अग्निहोत्री, पं. धर्मपाल शास्त्री, डॉ. आनन्द कुमार (आई.पी.एस.), प्रो. श्योताज सिंह, श्री हवासिंह आर्य एडवोकेट, श्री ओमप्रकाश वर्मा, श्री रामसिंह आर्य, श्री रामेन्द्र जी गुप्ता, श्री रामानन्द प्रसाद आर्य, श्री सुभाष अष्टिकर, श्री महेन्द्र सिंह शास्त्री, श्री रमाकान्त सारस्वत, श्री सोमदत्त शास्त्री, श्री जगदीश सूर्यवंशी, श्री संजय सत्यार्थी, श्री शिवाजीराव शिंदे, श्री मधुसूदन शास्त्री, श्री लक्ष्मीनारायण भार्गव, श्री यशपाल 'यश', डॉ. अनिल आर्य, श्री महेन्द्र भाई, श्री रामकुमार आर्य, श्री धर्मवीर शास्त्री, आचार्य सुभाष, प्रिं. सदाविजय आर्य, श्रीमती मधुश्री आर्या, स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी, स्वामी रामवेश, स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती, ठाकुर विक्रम सिंह, श्रीमती सरोज वर्मा, डॉ. बलवीर आचार्य, श्री महिपाल सिंह ढुल, स्वामी चन्द्रवेश, स्वामी विश्वानन्द, स्वामी सवितानन्द, श्री खुशहाल चन्द्र आर्य, श्री रामस्वरूप रक्षक, श्री इन्द्र सिंह आर्य, श्री राजवीर आर्य, विदुषी वसुधा शास्त्री, श्री अरविन्द शास्त्री, श्री रमेश आर्य, श्री रामपाल शास्त्री, मेजर विजय आर्य, श्री प्रभात पंत, श्री सत्येन्द्र चौधरी, पं. शिवनारायण उपाध्याय, महात्मा ज्ञानभिक्षु, सुबेदार प्रयाग सिंह –बागेश्वर, आचार्य संतराम, डॉ. कपिल देव शर्मा, श्री अशोक आर्य–ओमान, मास्टर सत्यवीर आर्य, श्री सहसरपाल आर्य, श्री सोनू आर्य, ब्र. दीक्षेन्द्र आर्य, श्री जीतेन्द्र पुरुषार्थी, श्री हेमन्त तिवारी, श्री मित्र महेश आर्य, श्री वीरपाल विद्यालंकार, स्वामी सम्यक क्रांतिवेश, श्री वीरेन्द्र खण्डेलवाल, श्री अर्जुनदेव महाजन, डॉ. राजपाल आर्य, श्री बिजेन्द्र सिंह मलिक, आचार्य सोमदेव शास्त्री, स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती, डॉ. दीनदयाल–नैरोबी, श्री चन्द्रभूषण, श्री विपीन कुमार, आचार्या सविता, मैत्रेयी शास्त्री, श्रीमती प्रवीण आर्या, आस्था आर्या, आचार्य श्याम प्रसाद, धर्मवती शास्त्री, सुमेधा शास्त्री, श्री प्रद्युम्न शास्त्री, श्री हरदेव सिंह आर्य, श्री धर्मेन्द्र पहलवान, श्री दीनबन्धु, डॉ. विद्यानन्द आर्य, डॉ. यशस्वी, श्री राजवीर वशिष्ठ, श्री अजय आर्य, श्री अशोक वशिष्ठ, महात्मा देवमुनि, स्वामी सोम्यानन्द, स्वामी शिवानन्द, स्वामी सर्वानन्द, स्वामी प्रकाशानन्द, स्वामी

निर्भयानन्द, स्वामी हरिश्वरा नन्द, स्वामी स्वतंत्रानन्द, मा. सुवेग सिंह, श्री बाबूलाल आर्य, श्री दयानन्द आर्य, श्री रणवीर आर्य, श्री नरेश आर्य, श्री रामपाल शास्त्री, श्री नाथू सिंह आर्य, श्री दलपत सिंह आर्य, श्री शिवदत्त आर्य, श्री विनोद सिंह आर्य–जालौर, श्री शिव प्रकाश सोनी, श्री हरिसिंह आर्य–जोधपुर, श्री अरूण आर्य–दिल्ली, श्री कंवरपाल शास्त्री, श्री सुधीर कुमार घई, श्री देशबन्धु, श्री नरेन्द्र, श्री मिथलेश, श्री धर्मधर शास्त्री मुम्बई, श्री लक्ष्मण माने, आचार्य आनन्द प्रकाश, स्वामी ब्रह्मानन्द, आचार्य भवभूति, श्री एस. पी. कुमार बंगलौर, श्री बालचन्द स्वामी मैसूर, श्री अभिमन्यु कुमार खुल्लर, श्रीमती सुदेश आर्या, कविता आर्या, श्री आनन्द प्रकाश हापुड़, डॉ. धर्मेन्द्र कुमार आदि का सम्मान किया गया।

कार्यक्रम के संयोजक आचार्य सोमदेव जी शास्त्री ने सत्यार्थ प्रकाश में किये जा रहे बदलाव के सम्बन्ध में एक प्रस्ताव रखा जिसे सर्वसम्मति से पास किया गया प्रस्ताव।

इस अवसर पर श्री कपिल देव शर्मा वेदालंकार पं. धर्मपाल शास्त्री, श्री दयाकृष्ण काण्डपाल, श्री सवितानन्द सरस्वती, स्वामी चन्द्रवेश, श्री महिपाल सिंह ढुल, स्वामी सच्चिदानन्द सरस्वती, डॉ. देवशर्मा, मेजर विजय आर्य, श्री दामोदर आर्य, श्री राजवीर आर्य, डॉ. दीनदयाल, श्री महेन्द्र सिंह शास्त्री सहित अनेकों विद्वानों ने अपने उद्‌गार प्रकट किये।

इस तीन दिवसीय महासम्मेलन का समापन अत्यन्त उत्साह एवं नई आशा के साथ हजारों आर्यजनों की उपस्थिति में किया गया। महासम्मेलन की व्यवस्था में जिन महानुभावों ने अपना सहयोग दिया उनके धन्यवाद ज्ञापन एवं आर्यजगत के समस्त शीर्ष नेताओं, विद्वानों, संन्यासियों, उपदेशकों, पुरोहितों, आचार्य एवं आचार्याओं तथा भजनोपदेशकों के धन्यवाद के साथ हैदराबाद की ऐतिहासिक धरती से एक नया संकल्प लेकर सम्पूर्ण आर्य जगत को नई ऊर्जा, संगठन शक्ति एवं भावी कार्यक्रम के द्वारा तेजस्वी स्वरूप प्रदान करने की उत्कट भावना के साथ सम्पन्न हुआ। शांति पाठ के पश्चात् वैदिक धर्म की जय और महर्षि दयानन्द के जयकारों से आसमान गूंज उठा और अपने हृदयों में संकल्प की अग्नि प्रज्ज्वलित करके प्रत्येक आर्य उत्साह एवं उल्लास के साथ विदा हुआ।

हैदराबाद में राष्ट्रीय आर्य बुद्धिजीवी एवं विद्वत सम्मेलन यदि हम भगतसिंह के पदचिह्नों पर चले होते तो भारत आर्य राष्ट्र बन जाता

- सत्यव्रत सामवेदी

आर्य समाज भगतसिंह का सपना साकार करने के लिए संघठित प्रयास करे

भगतसिंह के भतीजे - किरणजीत सिंह

हैदराबाद में सर्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली एवं आर्य प्रतिनिधि सभा आंध्रप्रदेश-तेलंगाना के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित तीन दिवसीय राष्ट्रीय आर्य बुद्धिजीवी एवं विद्वत सम्मेलन का उद्घाटन शहीद-ए-आजम भगतसिंह के भतीजे किरणजीत सिंह ने किया। किरयणजीत सिंह को देखने के लिए हैदराबाद की जनता उमड़ पड़ी। सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए किरणजीत सिंह ने कहा कि आज इस सम्मेलन में अंतराल के बाद अपने परिवार के सदस्यों से मिल रहा हूँ। मैं आपके प्रति आभार व्यक्त करता हूँ कि आपने इस अवसर पर मुझे आमंत्रित किया। सरदार अर्जुन सिंह ने महर्षि दयानन्द के दर्शन किए तो मुग्ध हो गए और उनका भाषण सुना तो नवजागरण की सामाजिक सेना में भर्ती होकर आर्य समाजी बन गए। वे उन थोड़े सेलोगों में थे जिन्हें ऋषि दयानन्द दीक्षा दी थी यज्ञोपवीत अपने हाथ से पहनाया था। यह सरदार अर्जुन सिंह का सांस्कृतिक पुनर्जनम था। मांस खाना उन्होंने छोड़ दिया, शराब की बोतल नाली में फेंक दी, हवन कुंड उनका साथी हो गया और संध्या प्रार्थना सहचरी। उनका जीवन पूरी तरह बदल गया था और यह बदल एक क्रांतिकारी छलांग थी। इस छलांग की शक्ति का सही अंदाजा वे ही लगा सकते हैं जो उस युग की सामाजिक जकड़न और राजनीतिक सून्यता एवं अवसाद को सही-सही आंक सकते हैं। उस युग में सरदार अर्जुन सिंह का आर्य समाजी होना भी एक बड़ा क्रांतिकारी कदम था। उस युग में किसी हिन्दू का आर्य समाजी हो जाना ही बड़ी बात थी, पर सरदार अर्जुन सिंह तो सिख से आर्य समाजी हुए थे। मंदिर से ही आर्य समाज का भवन काफी दूर था पर वे तो गुरुद्वारे से चलकर आर्य समाज भवन पहुंचे थे जो और भी दूर था।

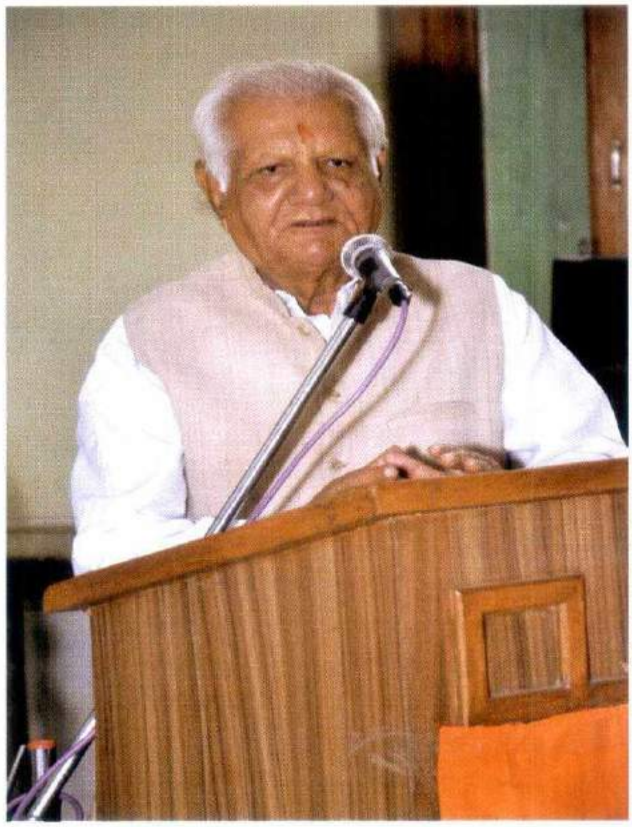

वे पहले जाट सिख थे, जिन्होंने बड़े और मंझले बेटे किशन सिंह और अजीत सिंह को सांईदास एंग्लो संस्कृत हाई स्कूल, जालंधर में शिक्षा प्राप्त करने भेजा और स्वयं भी वही रायजादा भगतराम वकील के मुंशी हो गए। ऋषि दयानन्द ने उन्हें दीक्षित किया और अब वे इस योग्य हो गए कि दूसरों को भी दीक्षित करने लगे। वे ऋषि दयानन्द की पूरी तरह समझ गए थे और यह मानने लगे थे कि ऋषि दयानन्द के विचारों के प्रचार से ही भारतवर्ष हजारों साल की कुरीतियों, पराधीनता, अंधविश्वास, पाखंड से मुक्ति प्राप्त कर सकता है। सरदार अर्जुन सिंह ने सारा आर्ष साहित्य पढ़ा और वे उसके प्रचारक हो गए। सरदार अर्जुन सिंह पराणिकों और सनातनधर्मी पंडितों के साथ मूर्ति पूजा, श्राद्ध, जातिवाद आदि अनेक विषयों पर शास्त्रार्थ करते थे और बड़े-बड़े सम्मेलनों में भाषण देने जाया करते थे।

आर्य समाज के इस जागरण आंदोलन से ब्रिटिश सरकार बहुत भयभीत ि और उन्हें पूरा विश्वास हो गया था कि यदि आर्य समाज का जन जागरण अभियान सफल होगया तो ब्रिटिश साम्राज्य का अंत अवशयंभावी है। ब्रिटिश सरकार इस आंदोलन को कुचलना चाहती थी परंतु सरकार की कठिनाई यचो थी कि इस आंदोलन की जड़ धर्म थी और उस वृक्ष का तना एवं शाखाएं प्रशाखाएं समाज सुधार की थीं। भारतवर्ष की जनता धर्म के नाम पर अपने प्राण देने के लिए तैयार रहती है जिसे १८५७ की क्रांति ने स्पष्ट कर दिया था। अतः आर्य समाज को कुलचने के लिए ही ब्रिटिश सरकार फूंक -फूंक कर कदम रखती थी। आर्य समाज की अजेय शक्ति को कम करने के लिए ब्रिटिश सरकार ने हिन्दुओं में आपस में फूट डालने का षडयंत्र किया। ब्रिटिश सरकार ने सत्यार्थ प्रकाश के उन प्रकरणों को सिखों के सामने रखा जिसमें गुरुग्रंथ साहिब की आलोचना की गई थी। पटियाला के आर्य समाजियों पर यह मुकदमा चलाा गया कि वे सिखों के गुरुग्रंथ साहिब का अपमान करते हैं। आपको जानकर प्रसन्नता होगी कि इस मुकदमे के बचाव पक्ष के प्रवक्ता सरदार अर्जुन सिंह थे। सरदार अर्जुन सिंह कहते थे कि आर्य समाज के जनजागरण अभियान से ब्रिटिश सरकार भयभीत हो गई है और सत्यार्थ प्रकाश की आड़ में हमें आपस में लड़वा कर आर्य समाज की आग को बुझाना चाहती है। सरदार अर्जुन सिंह कितने अध्ययनशील थे कि सारे आर्ष ग्रंथ और वेद तथा गुरुग्रंथ साहिब पढ़कर उन्होंने ७०० श्लोक की पस्तिका निकाली जिसमें यह सिद्ध किया गया कि गुरुग्रंथ साहिब के माध्यम से वेदों का ही प्रचार किया गया और उस पुस्तिका के अंत में ह लिखा कि 'हमारे गुरु साहेबान वेदों के पैरोकार थे'। सरदार अर्जुन सिंह ने महर्षि से अंधविश्वास और पाखंड के उन्मूलन की प्रेरणा के अतिरिक्त देशभक्ति

की प्रेरणा ली और वे देशभक्ति की ाग में जलने लगे और अपने गांव में एक यज्ञ आयोजित किया जिसमें अपने पुत्रों को राष्ट्र के लिए समर्पित करने की घोषणा की । जब उनके बड़े पोतों जगतसिंह और भगतसिंह का यज्ञोपवीत संस्कार हुआ तो उन्होंने एक को अपनी बांई भुजा में और दूसरे को दांई भुजा में भरकर यह संकल्प किया- 'मैं अपने दोनों वंशधरों को इस यज्ञवेदी पर ही खड़े देश की बलिवेदी के लिए दान करता हूँ ।' उनकी देशभक्ति का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि अपने पोतों की देश की बलिवेदी पर आहुति देते समय एक पुत्र भरी जवानी में ही शहीद हो गया था, दूसरा देश से जलावतन हो गया था और तीसरा हथकड़ियों की चौसर और बेड़ियों की शतरंज खेल रहा था ।

भगतसिंह को फांसी की सजा की घोषणा हो गई, फांसी के समय उनकी आयु २३ वर्ष ५ महिने २६ दिन थी । भगतसिंह के दादा-दादी, पिता-माँ, ाचियां फांसी से पहले भगतसिंह से मिलने आते हैं तो जेलर कहता है कि केवल माता-पिता को ही मिलने की इजाजत दी जा सकती हैं, और कोई नहीं मिल सकता । यह अजीब आदेश था । दादा-दादी खामोश खड़े हैं, चाचियां रो रही हैं क्योंकि भगतसिंह उनकी गोद में ही पला था । क्या वे अंतिम समय अपने लाडले का दर्शन भी नहीं कर सकती । ब्रिटिश सरकार की यह क्रूरता की पराकाष्ठा है । क्या विश्व के किसी भी क्रांतिकारी के परिवार के साथ ऐसी घटना घटित हुई । जो सहृदय हैं वे इस चित्र की कल्पना करके आंसू बहाने लगेंगे, रोमांचित हो जाएंगे । इस घटना को जो द्रवित नहीं होते वे निष्ठुर हैं, पाषाण हृदय हैं, संवेदनहीन है । दादा-दादी, चाचियां सारी जनता कह रही है कि तुम माँ-बाप हो, तुम तो मिल आओ । किशनसिंह गरज उठता है कि जिस जनविरोधी कानून की मैंने धज्जियां उड़ाई है, जिनके खिलाफ मैं सारी उम्र लड़ा हूँ आज उस कानून के सामने मैं अपना मस्तक कैसे झुका सकता हूँ । किशन सिंह कहता है कि यदि मेरे माँ-बाप को मेरे भाईयों की पत्नियों को नहीं मिलने दिया जाता तो हम दोनों भी नहीं मिलने जाएंगे । किशन सिंह अपने परिवार और बनता को साथ लेकर वापिस चल पड़ता है और सारा आकाश भगतसिंह जिंदाबाद के नारों से गूंज रहा है । जरा कल्पना कीजिए कि भगतसिंह की माँ विद्यावती पर क्या गुजरी होगी जब फांसी पर चढ़ने वाले अपने बेटे को बिना देखे अपने परिवार के साथ वापिस लौट गई । जनता उग्र हो गई परंतु किशन सिंह ने समझाया कि जोश के साथ होश से काम लो । तुम्हारी उग्रता से न जाने कितने भगतसिंह मौत के घाट उतार दिए जाएंगे । किशन सिंह एवं उसका क्रांतिकारी परिवार आगे-आगे चल रहा है और पीछे अपार जनता का समुद्र लहरा रहा है । यह जुलूस मोरीगेट पर पहुंचा जो एक सभा में परिवर्तित हो गया । उस अपार जनसमूह में किशनसिंह सिंह गर्जना कर रहा है । उसकी आवाज में कंपन नहीं है, कोई भय नहीं है, कोई निराशा नहीं है । वह गर्वोन्मत होकर दहाड़ रहा है । इसी समय वह ग्वाला जो जेल में दूध देता था आया और कहा-फांसी लग गई है जाकर लाश ले आओ । किशनसिंह ने जनसमूह को सम्बोधित करते हुए कहा- खबर मिली है कि भगतसिंह को फांसी दे दी गई है मैं खबर या लाश लेने जेल जा रहा हूँ आप सब अपनी-अपनी जगह बैठे रहें । मैं कहता हूँ, कोई जेल की तरफ न जाए ऐसा न हो कि हम एक भगतसिंह को लेने जाएं और सैकड़ों भगतसिंह देकर आएं ।

लोगों में खलबली मच गई बहुत कहने पर भी बहुत लोग उनके साथ हो लिए । जेल पर सन्नाटा था । वे दरवाजे पर पहुंचे । सरदार किशनसिंह ने जोर-जोर से आवाजें लगाई, दरवाजे को बेहद खड़खड़ाया, पर कोई नहीं बोली । खबर मिली कि भगतसिंह और उनकी लाशों को जलाने के लिए कहीं बाहर भेज दिया गया है । भगतसिंह के माँ-

शेष पेज ३८ पर...

हम फांसी के तख्ते से भी पुकारते रहेंगे इंकलाब जिंदाबाद

-सत्यव्रत सामवेदी

सार्वदेशिक सभा के तीनों पक्ष के पदाधिकारी- बाएं से स्वामी आर्यवेश, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री सुरेश अग्रवाल, श्री किरणजीत सिंह, स्वामी अग्निवेश, स्वामी प्रणवानन्द, स्वामी धर्मानन्द, श्री प्रकाश आर्य, श्री अरूण अबरोल, श्री वेदप्रताप वैदिक, श्री सत्यव्रत सामवेदी, श्री मायाप्रकाश त्यागी।

सम्मेलन के दूसरे दिन ३ फरवरी को उपस्थित श्रोताओं को सम्बोधित करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यकारी प्रधान सत्यव्रत सामवेदी ने कहा कि आज का ऐतिहासिक सम्मलन ईश्वरीय विधान के अनुसार है। क्या यह संयोग है कि १९३९ में २ फरवरी को आर्यवीर निजाम के विरुद्ध हैदराबाद की सड़कों पर नारे लगा रहे थे और निजाम के सत्यचारों के विरुद्ध सिंहगर्जना कर रहे थे तथा हैदराबाद की जनता- लाखों नर-नारियां, युवक-युवतियां- आर्यवीरों पर पुष्पवर्षा कर रही थी। हैदराबाद में निजाम के विरुद्ध आंदोलन प्रारंभ करने से पर्व आर्य समाज के अधिकारी ब्रिटिश सरकार के पॉलिटिकल एजेंट बर्टन्ड ग्लेन्स से मिले तो ग्लेन्स ने कहा कि दुनिया की सबसे बड़ी और शक्तिशाली मुस्लिम रियासत के खिलाफ मुट्ठी भर लोग कैसे लड़ेंगे। आर्य नेता ने हा कि यह तो समय बतोगा कि हमारी विजय होती है या नहीं। हैदराबाद में निजाम का दमन था। हिन्दू कोई धार्मिक कृत्य नहीं कर सकते थे। आर्य समाज नहीं बनाया जा सकता था, संध्या हवन भी नहीं किया जा सकता था, पारिवारिक सत्संग भी नहीं हो सकते थे, जलसों पर भी प्रतिबंध था, हिन्दूओं की बहु-बेटियों की इज्जत खतरे में थी। इन स्थितियों में आंदोलन प्रारंभ हुआ। इस आंदोलन में १० हजार से अधिक लोगों ने भाग लिया। ३० आर्यवीर शहीद हो गए और १० व्यक्तियों को जेल में इतनी यातना दी कि जेल से छूटने के द उन्होंने भी अपने प्राण त्याग दिए। सर्वप्रथम हैदराद में मैं उन शहीदों को नमन करता हूँ जो हमें देश और धर्म के लिए अपने प्राणों की आहुति देने की प्रेरणा दे रहे हैं।

इस स्ममेलन की दूसरी महत्वपूर्ण घटना यह है कि इसका उद्घाटन शहीद-ए-आजम भगतसिंह के भतीजे किरणजीत सिंह ने किया। जैसा कि आपको श्री किरणजीत सिंह ने बताया कि हमारे परिवार ने महर्षि दयानन्द से प्रेरणा लेकर धर्म और देश के लिए अपना सर्वस्व समर्पित कर दिया। अगर हम भगतसिंह के पदचिह्नों पर चले होते तो भारत आर्य राष्ट्र बन गया होता। भगतसिंह के परिवार ने दयानन्द से सबसे पहली प्रेरणा अस्पृश्यता और छूआछूत के विरुद्ध ली। फांसी से पहले जेलर ने भगतसिंह से पूछा कि तुम्हारी अंतिम इच्छा क्या है क्योंकि जेल में जिन कैदियों को फांसी मिलती है उनकी अंतिम इच्छा पूरी करने का प्रयास किया जाता है। भगतसिंह ने कहा कि मैं बेबे जी के हाथ का बना भोजन खाना चाहता हूँ। जेलर ने कहा कि तुम्हारी बेबे जी यहां कहां हैं और बेबे जी को बुलाकर खाना तैयार करना संभव नहीं है। भगतसिंह ने कहा कि मेरी बेबे जी यहीं हैं। जेलर को आश्चर्य हुआ। उसी समय भगतसिंह की तरफ भंगी आ रहा था। भगतसिंह ने जेलर से कहा कि देखो वह मेरी बेबे जी है। मेरे मल-मूत्र को या तो मेरी माँ ने साफ किया था और यह बेबे जी तो आज तक मेरा मल-मूत्र साफ कर रहा है। भगतसिंह अंतिम समय भंगी के हाथ का बना हुआ खाना खाकर फांसी के तख्ते की ओर चला। आज आजादी के ७० साल बाद भी हरिजनों की अनुसूचित जातियों की वही शोचनीय अवस्था है, वही छूआछूत है। स्वामी श्रद्धानन्द ने १९२० में अमृतसर में ऐतिहासिक भाषण दिया था कि जिन्हें आप अछूत समझते हैं या अस्पृश्य मानते हैं उन्हें गलो लगा लो वरना वे गैरों के घर जाएंगे। इसी दक्षिण के प्रांतों में स्वामी श्रद्धानन्द ने घोषणा की थी- Blot out the curse of unouchability. स्वामी श्रद्धानन्द ने इन्ही दक्षिण प्रांतों में गर्जना की थी और अछूतों से कहा था कि सवर्णों को छूकर उन्हें भी आप अछूत बना दें जैसा वे आपको अछूत मानते हैं परंतु हमने स्वामी श्रद्धानन्द, भगतसिंह, अर्जुन सिंह, किशनसिंह की आवाज को नहीं सुना। आज हम जिन्हें अछूत कहते हैं वे हमसे अग हो गए हैं। इसी हैदराबाद में ही १७ जनवरी २०१५ को रोहित वेमुला ने आत्महत्या की थी और आत्महत्या का कारण था अछूतों और शोषितों के प्रति भेदभाव। रोहित वेमुला ने कहा कि हम हिन्दु नहीं है, हम दलित हैं। आज जातिवाद समाप्त करने के लिए दलित जातियां आवाज लगा रही हैं कि रोहित एक्ट को पास करो। तो हम जातिवाद समाप्त करने के लिए दलितों आवाज में आवाज क्यों नहीं मिलाते। यदि आप दलितों का झण्डा लेकर खड़े हो जाएं तो देश की आधी जनता आपके साथ हो सकती है और आप आर्य राष्ट्र बना सकते हैं। ये दलित हमारी पूंजी थी। हमने अपनी पूंजी पर ध्यान नहीं दिया और इस पूंजी को अम्बेडकर, काशीराम, मायावती एवं द्रविड़ मुनेत्र कड़गम ले गए। दलितों के इन नए मसीहाओं को यह भी नहीं मालूम कि यदि आर्य समाज ने सहयोग नहीं दिया होता तो अम्बेडकर का नामोनिशान नहीं होता। ये मसीहा नहीं जानते कि दलित जातियों के उत्थान के लिए सर्वप्रथम महर्षि दयानन्द और उनके अनुयायियों ने झण्डा उठाया था।

इसी प्रकार भगतसिंह ने समाजवाद की घोषणा क थी और साण्डर्स के वध के बात जो पोस्टर लाहौर की दीवारों पर चिपकाया गया था उसमें लिखा था-

'अत्याचारी सरकार सावधान इस देश के

दलित और पीड़ित जनता की भावनाओं को ठेस मत लगाओ अपनी शैतान हरकतें बंद करो । हमारे अपने लोग हमारी निंदा और अपमान करें, विदेशी सरकार चाहे हमारा कितना भी दमन कर ले परंतु हम राष्ट्रीय सम्मान की रक्षा के लिए और विदेशी अत्याचारियों को सबक सिखाने के लिए सदा तत्पर रहेंगे, हम सब विरोध और दमन के बावजूद क्रांति की पुकार को बुलद रखेंगे और फांसी के तख्तों से भी पुकारते रहेंगे- इंकलाब जिंदाबाद ।

मनुष्य का रक्त बहाने के लिए हमें खेद है परंतु क्रांति की वेदी पर रक्त बहाना अनिवार्य हो जाता है । हमारा उद्देश्य ऐसी क्रांति से है जो मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण का अंत कर देगी ।'

भगतसिंह एक विचारक था । भगतसिंह का यह विचार सारी दुनिया जानती है- **'पिस्तौल और बम कभी इंकलाब नहीं लाते बल्कि इंकलाब की तलवार विचारों की सान पर तेज होती है ।'**

भगतसिंह किसानों और मजदूरों का शासन चाहते थे । ट्रिब्यूनल में अपने बचाव में बहस करते हुए भगतसिंह ने कहा कि जो किसान अन्न उगाकर सारे देश की भूख मिटाता है वह स्वयं भूखा है, जो किसान कपास उगा कर सारे देश को महंगे वस्त्र देता है वह नंगा है, वह राजगीर जो गगनचुंबी महल बनाता है उसके पास झोंपड़ा भी नहीं है । भगतसिंह ने कहा कि हमारा संघर्ष ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध नहीं है, हमारा संघर्ष व्यवस्था के विरुद्ध है, विषमता के विरुद्ध है । आजादी के बाद यदि हमारी सरकार भी पूंजीवाद को चढ़ावा देगी तो हम उसके विरुद्ध भी उसी प्रकार संघर्ष करेंगे जिस प्रकार ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध कर रहे हैं । आज साढ़े तीन लाख किसान आत्महत्या कर चुके हैं । देश की ५८ प्रतिशत सम्पत्ति भारत की एक प्रतिशत जनता के पास है और राषट्र की ७० प्रतिशत सम्पत्ति ५७ लोगों के पास है । किसान आत्महत्या कर रहा है और विदेशों से अनाज मंगाने के लि आयात शुल्क समाप्त कर दिया गया है ताकि विदेशी कसानों का अनाज सस्ता मिले और भारत के किसान आत्महत्या करते रहें । यदि भगतसिंह आज जिंदा होता तो इस पूंजीवाद के विरुद्ध दावानल सुलग रहा होता । हम आज इस सम्मेलन में पूंजीवाद के विरुद्ध सतत् संघर्ष करने का संकल्प लेकर जाएं । इसके बाद उंघता हुआ पांडाल शेर की तरह दहाड़ने लगा-

इंकलाब जिंदाबाद

इस सम्मेलन को भारतवर्ष के प्रसिद्ध पत्रकार वैद प्रताप वैदिक ने सम्बोधित करते हुए कहा कि हमें नशाबंदी तथा रिश्तखोरी के विरुद्ध आंदोलन करना चाहिए । उन्होंने अपने सभी कार्यों में हिन्दी भाषा का प्रयोग करने के साथ-साथ सरकारी काम-काज में हिन्दी भाषा का प्रयोग करने पर जोर दिया । इस सम्मेलन का प्रमुख विषय था सर्वांगीण मानवीय विश्व में धर्म की भूमिका । इस विषय पर विस्तार से विचार विमर्श किया गया । स्वामी अग्निवेश ने अपने सम्बोधन में बताया कि सम्प्रदायों के धर्म मानकर विभिन्न विचारधाराएं प्रचलित की गई जिससे समाज में वैमनस्य और फूट के कारण हिंसा को बढ़ावा मिला । उन्होंने कहा कि धर्म केवल मानव धर्म है अर्थात् मानवता ही है । मानवीय गुणों के विकास से ही सारे विश्व में शांति और प्रगति संभव है । सम्मेलन में देश के विभिन्न भागों से आए विद्वानों, आर्य कार्यकर्ताओं ने आर्य समाज के क्रियाकलापों को सुचारू रूप से आगे बढ़ाने के लिए विभिन्न कार्यक्रमों एवं आंदोलन के सम्बन्ध में सामुहिक चर्चा की तथा अनेक प्रस्ताव भी पारित किए गए । समारोह के अंतिम दिन समापन समारोह में प्रधान सार्वदेशिक सभा स्वामी आर्यवेश जी एवं अग्निवेश जी के सारगर्भित भाषण हुए । उन्होंने आर्य बंधुओं को प्रेरणा दी कि उन्हें जीवन में वैदिक मान्यताओं को प्रधानता देनी चाहिए तथा समाज से अंधविश्वास के निर्मूलन के लिए अङ्गयाय और अत्याचार तथा हिंसा मिटाने के लिए संघर्ष करना चाहिए । उन्होंने कहा कि आर्यों को चाहिए कि वानप्रस्थी और संन्यासी बनकर समाज सेवा के कार्यों में निस्वार्थ रूप से भाग लें ।

इस सम्मेलन में ध्वजारोहण कई गुरुकुलों के संस्थापक स्वामी प्रणवानन्द जी ने किया । इस अवसर पर स्वामी आर्यवेश, स्वामी धर्मानन्द (उड़ीसा), स्वामी रामवेश, स्वामी सच्चिदानन्द, चौधरी हरिसिंह सैनी, डा. आनन्द कुमार (आईपीएस), देवेन्द्र पाल वर्मा (उत्तरप्रदेश), आनन्द कुमार (कोलकता), अशोक आर्य (उदयपुर), ठाकुर विक्रम सिंह, माया प्रकाश त्यागी (गाजियाबाद), रामानन्द आर्य (बिहार) आदि उपस्थित थे ।

कार्यक्रम में राष्ट्रभृत महायज्ञ मुंबई से पधारे वैदिक मिशन के प्रधान डॉ. सोमदेव शास्त्री के ब्रह्मत्व में आयोजित किया गया ।

...पेज ३६ का शेष

बाप, दादा-दादी, चाचियां कोई भी भगतसिंह की लाश को नहीं देख सका । भगतसिंह से परिवार वाले अंतिम बार ३ मार्च, १९३१ को मिले ।

इतिहास की दृष्टि से भगतसिंह का महत्व यह है कि उन्होंने सर्वप्रथम समाजाद की घोषणा की कि हम आजादी के बाद समाजवाद चाहते हैं । उन्होंने हिन्दुस्तान समाजवादी प्रजातंत्र सेना का गठन किया और साण्डर्स वध से पहले लाहौर की दीवारों पर जो पोस्टर लगे थे उन पर नोटिस के ऊपर लिखा था

हिन्दुस्तान समाजवादी प्रजातंत्र सेना

पर आज समाजवाद कहां है । आज पूंजीवाद का परचम लहरा रहा है । हमारे देश में ही नहीं सारे संसार में । अमीर अमीर होता जा रहा है और गरीब गरीब होता जा रहा है। भगतसिंह अंधविश्वास, पाखंड, अज्ञानता, शोषण, जातिवाद के विरुद्ध थे और व्यवस्था परिवर्तन चाहते थे । आजादी के ७० वर्ष बाद भी अंदविश्वास, पाखंड, जातिवाद, शोषण का बोलबाला है । भगतसिंह के सपनों को आग लग गई है । भगतसिंह के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि यही है कि आज हम सारे भारतवर्ष से जो यहां एकचित्र हुए हैं संकल्प लें कि हम भगतसिंह के सपनों को साार करेंगे । भगतसिंह के वंशज अपनी आंखों से उन सपनों को साकार होते देखना चाहते हैं । मेरी आपसी यही प्रार्थना है कि आज आप अंधविश्वास, पाखंड, जातिवाद, शोषण को समाप्त करने का और मानव धर्म का परचम फहराने का संकल्प लेकर यहां से जाएं ।

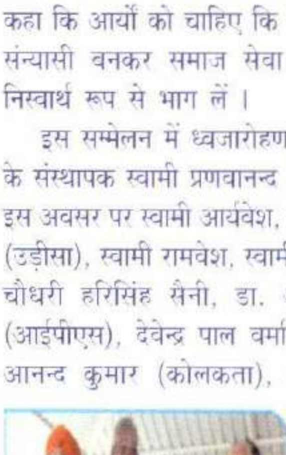

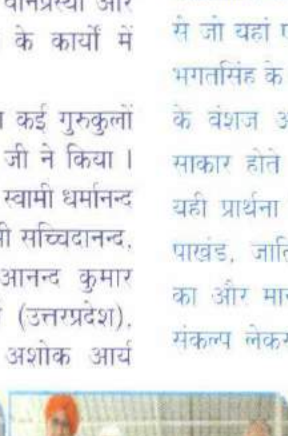

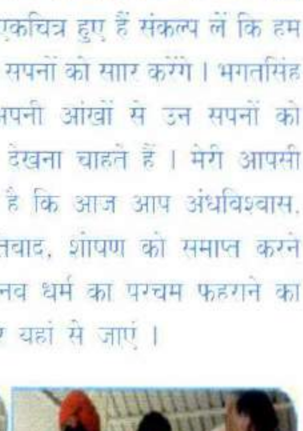

राष्ट्रीय आर्य विद्वत् महा सम्मेलन के दान दाताओं की सूची

1. आर्य समाज नलगोण्डा	200000-00
2. आर्य समाज दयानन्द गोशाला बोधन	110000-00
3. आर्य समाज निज़ामाबाद	101000-00
4. श्रीमती धनलक्ष्मी राजाराम जी	100001-00
5. श्री हरिसिंह जी सैनी हिसार, हरियाणा	100000-00
6. श्री सुरेशजी अग्रवाल गुजरात **(घोषित)**	**51000-00**
7. श्री ठाकुर विक्रम सिंह ट्रस्ट, नई दिल्ली	51000-00
8. श्री माया प्रकाश जी त्यागी	51000-00
9. आर्य समाज चेंगिचर्ला	51000-00
10. आर्य समाज बाँसवाड़ा	51000-00
11. श्री मिठाईलाल सिंह जी, मुम्बई	51000-00
12. श्री दत्तात्रेय बसप्पा कल्याणी जी	51000-00
13. श्री विठ्ठलराव जी आर्य	51000-00
14. श्री एम. वेणुगोपाल जड़चर्ला	51000-00
15. आर्य समाज जहीराबाद	51000-00
15/1. आर्य समाज ज़ीरा, आर.पी. रोड़, सिकन्द्राबाद	51000-00
16. आर्य समाज लालागुड़ा	40000-00
17. श्री विठ्ठल रेड्डी जी, अमीरपेट (१० थैले चावल)	40000-00
18. श्री हरिनारायण जी भट्टड	31000-00
19. आर्य समाज शालिबंडा	30000-00
20. आर्य समाज बलकमपेट	26000-00
21. आर्य समाज सुचित्रा	25000-00
22. आर्य समाज बलकमपेट	25000-00
23. आर्य समाज धुलपेट	25000-00
24. आर्य समाज बिचकुन्दा	25000-00
25. श्री ठाकुर लक्ष्मण सिंह जी	21000-00
26. श्रीमती मीरागौरी जी बहादुरपल्ली	21000-00
27. श्री अमर सिंह जी आर्य	20000-00
28. श्री के.वी. रेड्डी जी	21000-00
29. आर्य समाज मादन्नापेट	21000-00
30. श्री आर. रामचन्द्र कुमार जी	11000-00
31. श्री राजेश्वजी आर्य	11000-00
32. आर्य समाज सीताफलमण्डी	11000-00
33. श्री गुरु नारायण जी	11000-00
34. श्री श्रीनिवासजी जी (सभा कार्यालय)	11000-00
35. श्री एन. गायत्री देवी जी गज्वेल	11000-00
36. श्रीमती गुंटी वत्सलाजी	11000-00
37. श्री एम. कृष्णभगवान जी	11000-00
38. श्री गुंटी विश्वम्भरजी	11000-00
39. डॉ. सुनिता जोशीजी	11000-00
40. श्री गंगाबाई चिन्तलबस्ती	11000-00
41. श्री धर्मवीर जी आर्य	11000-00
42. श्री अमरदेवजी शास्त्री, दिल्ली	11000-00
43. आर्य समाज सुल्तान बाज़ार	11000-00
44. श्री अशोक कुमार जी श्रीवास्तव	11000-00
45. श्री आनन्दस्वरूप जी, आनन्द मसाला	11000-00
46. आर्य समाज चौदरगुड़ा	11000-00
47. डॉ. वसुधा अरविन्द जी शास्त्री	11000-00
48. श्री शरतचन्द्र जी गोधा	10000-00
49. श्री करीपे सुर्यप्रकाशजी, निज़ामाबाद	10000-00
50. आर्य समाज कुचुपुडी	10000-00
51. श्री एम. भारद्वाज	10000-00
52. श्री अशोक कुमार जी अड्वोकेट	10000-00
53. डॉ. अशोक कुमार जी सैदाबाद	10000-00
54. श्री बी. भद्रय्या जी	10000-00
55. श्री पी. ज्ञानेश्वर जी	10000-00
56. आर्य समाज सैदाबाद	10000-00
57. श्री मामिडी श्रीनिवास जी	10000-00
58. कु. श्रीलक्ष्मीजी वेलिंगटन, न्यूज़ीलेण्ड	7727-32
59. श्री रविकण्टि रामदेवजी	7000-00
60. श्री वी पम्पय्या जी	6501-00
61. श्री के. नारायणा जी	6101-00
62. श्री एम. सूर्यनारायण जी	6000-00
63. साई जूनियर कॉलेज	6000-00
64. श्रीमती सत्तीदेवी जी, पद्मारावनगर	6000-00
65. आर्य समाज भरतहळ्ळी बेंगलोर	5100-00
66. सुश्री नागम्मा जी	5001-00
67. श्री विजयकुमार सरोदे जी	5001-00
68. श्री पी. प्रभाकर जी	5011-00
69. श्री जी. नारायणा जी	5000-00
70. श्री नरसिम्हलु जी	5000-00
71. श्री एम. रामचरण जी	5000-00
72. श्री ओम् प्रकाश जी	5011-00
73. वनिता हॉस्पिटल	5000-00
74. डॉ. विश्वनाथ जी	5000-00
75. श्री अर्जुन कुमार जायस्वाल जी	5112-00
76. श्री सी.एच. चन्द्रय्या जी	5000-00
77. श्री आर सत्यनारायण जी अड्वोकेट	5001-00
78. आर्य समाज चादरघाट	5000-00
79. आर्य समाज मदनुर	5000-00

80.	श्री कैलाश मेडिकल हॉल	5000-00
81.	श्री पी. सत्यनारायणजी	5000-00
82.	श्री अरगे नरसिम्हलु जी	5000-00
83.	श्रीमती सुशिलादेविजी मन्नाईखेळी	5000-00
84.	श्री गडीला आन्जनेयुलु जी	5000-00
85.	श्रीमती ओरुगंटी लक्ष्मीदेवी जी	5000-00
86.	श्री डॉ. आर. विरेन्द्रकुमार जी	5000-00
87.	श्री देवरकोंडा दत्तात्रेय जी	5000-00
88.	श्री भक्तराम जी	5001-00
89.	आर्य समाज गोषामहल	5000-00
90.	श्री ई. वेदसिंधु जी	5000-00
91.	आर्य समाज हसनपर्ति	5000-00
92.	श्री संजय सिंह	5000-00
93.	आर्य समाज दयालबावली	5000-00
94.	श्री सदा विजय जी आर्य	5000-00
95.	श्री कन्टे रमेश जी	5000-00
96.	प्रो. प्रा. धीरज दी	5000-00
97.	श्री वेंकटनरसय्या जी, निज़ामाबाद	5100-00
98.	श्री डॉ. अरविंद जी	5001-00
99.	श्री वि. रविन्द्रराव जी	5000-00
100.	डॉ. सुधीर गोजे जी बोधन	5000-00
101.	श्री वेंकट रेड्डी जी बोधन	5100-00
102.	श्री डॉ. मुरलीधर रावजी	5000-00
103.	श्री एम. वेदप्रकाश जी	5000-00
104.	श्री सन्दीप सिंह जी	5000-00
105.	श्री हरिश्चन्द्र जी विद्यार्थी	5000-00
106.	ठा. नन्द कीशोर जी	5000-00
107.	श्री बिजयानंद जी टोलीचौकी	5000-00
108.	श्रीमती मधुरानी ठाकुर जी	5000-00
109.	श्री टी. समीर सिंह जी	5000-00
110.	श्रीमती डॉ. विजयलक्ष्मी जड़चर्ला	5000-00
111.	श्रीमती C/o. जड़चर्ला	5100-00
112.	डॉ. विष्णु जनार्धन जी	5000-00
113.	श्री वी. मनोहर रेड्डी जी	5000-00
114.	श्रीमती विजयलक्ष्मी जी, श्री नारायण रेड्डी	5000-00
115.	आचार्या धीरेन्द्र कुमार जी	5000-00
116.	श्री बी. कृष्णा जी, गोषामहल	5000-00
117.	श्री ओम् प्रकाश जी जायसवाल, यज्ञपुरा	5001-00
118.	श्री मोहित जडेज़ा जी, काचिगुड़ा	5000-00
119.	श्री माले नागभूषणम् जी, दिलसुखनगर	5000-00
120.	श्री के. एस. रविकुमार जी	5000-00
121.	श्रीमती पार्वतम्मा बुच्चय्या जी	5000-00
122.	श्री तेरला प्रदीप गुप्ता जी	5000-00
123.	श्री ठा. गोविंदसिंह जी	5001-00
124.	श्री ईश्वरय्या जी	5001-00
125.	आर्य समाज अमिस्तापुर	5116-00
126.	श्री सजनलाल जी	5000-00
127.	श्री ठा. राजकुंवर सिंह जी	5000-00
128.	आर्य समाज तेनाली	5000-00
129.	श्री कोटी धर्मतेजा जी	4000-00
130.	श्री रामप्रसाद बांगड	4000-00
131.	श्री के. दत्तुराव जी, मलकपेट	4000-00
132.	श्री राजकिरण जी	2100-00
133.	श्री जी.पी. राजु जी	2001-00
134.	श्री आचार्य वेदालोक जी	2100-00
135.	श्री डी. हरिकिशन जी सैनिकपुरी	1011-00
136.	श्री वेंकट रामुलू उटकुर	3000-00
137.	आर्य समाज कोत्तागुडेम	2000-00
138.	श्री अर्जुनदेव महाजन आगरा	1111-00
139.	श्री गणेशजी आर्य	500-00
140.	श्री सत्यदेव जी शेट्टी	1100-00
141.	श्री रमेशचन्द्र पटवारी मथुरा	500-00
142.	श्री पी. नारायण आर्य	1000-00
143.	श्री ज्ञानभिक्षु वानप्रस्थी	1100-00
144.	श्री एन. लक्ष्मण मूर्ति जी	200-00
145.	श्री घनश्यामदेव जी म.नगर	500-00
146.	श्री बलराम गौड जी	500-00
147.	श्री महानंदय्या जी	200-00
148.	आर्य समाज ऊटकुर	2010-00
149.	श्री कैलाश यलगोंडा वरंगल	300-00
150.	श्री किशनगोपाल जी गिल्डा	1100-00
151.	श्री ललिता बाई नागेश्वर जी	200-00
152.	श्री राममोहनराव जी नेताली	500-00
153.	श्री एम.जगदीश्वरजी गोषामहल	1000-00
154.	श्री यशपाल यश जयपुर	2100-00
155.	श्री श्रीधर बाबु तेनाली	200-00
156.	श्री चिन्नयाजी वानप्रस्थी	1000-00
157.	श्री उप्पल नागय्या जी	2100-00
158.	श्री वेदप्रकाश शर्मा जी	1100-00
159.	श्री दत्ता कुमार जी	1000-00
160.	श्री सिद्धनाथजी समाधान	200-00
161.	श्री ब्रजभूषण गुप्ता दिल्ली	1000-00
162.	श्री आनन्दप्रकाश आर्य हापुड	1000-00
163.	श्री हरिओम् जी अग्रवाल	1000-00

164. आर्य समाज किशनपोल, राजस्थान	1000-00	206. श्री वी. सत्यनारायण जी	2000-00
165. श्री दुष्यंत प्रसाद आर्य	101-00	207. श्री गौरिशंकर श्रीधर, श्रीहरीकोटा नेल्लोर	1000-00
166. श्री विश्वनाथम आर्य	1000-00	208. श्रीमती संजन्ना गौड़ जी	1000-00
167. आर्य समाज सेक्टर 22/A चंदीगढ़	2100-00	209. श्री रामुलु मुसापेट उटकूर	200-00
168. C/o. वी. राव	1000-00	210. श्री टी. लक्ष्मी सोमय्या जी वरंगल	200-00
169. श्री सुबेसिंह जी जीन्द	1100-00	211. श्री सुचित्रचंद्र नल्लाकुंटा	1000-00
170. श्री ओम प्रकाश जीन्द	1100-00	212. श्री रामरेड्डी LIC एजन्ट	201-00
171. श्री भीम सिंह मोर जीन्द	1100-00	213. श्री विश्वनाथ आर्य जोगीपेट	411-00
172. श्री अनुराधा परमार बेगमपेट	2000-00	214. श्री शांत मन्नाईखेळी	500-00
173. श्रीमती सुमेधा संदीप जी अकोला	500-00	215. श्री रविन्द्रजी खमितकर BDL	500-00
174. श्री महन्त भाई तिवारी जी	210-00	216. श्री एम रामू चौदरगुड़ा	105-00
175. श्रीमती विमलाबाई बसवकल्याण	200-00	217. डॉ. दासिराज मल्लया वरंगल	500-00
176. श्रीमती पद्माकुमारी जी दीनानगर	1000-00	218. श्री बी. देवदास जी	1100-00
177. श्री बी. विजयकुमार कुर्मागुड़ा	1100-00	219. श्री के. शरबंदराज चौदरगुड़ा	101-00
178. श्री डी. गोपाल जी मादन्नापेट	1100-00	220. आर्य समाज करीमनगर	500-00
179. श्री के. गणेश कुमार जी	1000-00	221. श्री अन्ना दयानंदजी एल्लारेड्डी	2001-00
180. श्री प्रभुजी मन्नाईखेळी	100-00	222. श्री अंगुलुरी प्रकाश आर्य	501-00
181. श्री के. आन्जनेयुलू जी	300-00	223. श्री योगसिद्धि रामुलूजी निज़ाबाबाद	500-00
182. श्री दयानन्द जी विचकुंदा	500-00	224. श्री विजयवीर आर्य	1001-00
183. श्री शशिकान्त कुलकर्णी	2100-00	225. श्री दामोदर हल्लीखेड़	200-00
184. स्वामी आग्नेयानन्दी जी	500-00	226. श्री अंबरनाथजी कोत्तापेट	500-00
185. श्री बी. सत्तय्या जी	1100-00	227. श्री सोमदत्तजी शास्त्री	500-00
186. डी. पंढरी सुखदा मल्लय्या उप्पुगुड़ा	1000-00	228. श्री अंबटी नरसिंहा (पौत्र)	1100-00
187. श्री एम. राधाकृष्ण मूर्ति जी	2000-00	229. आर्य समाज हल्लिखेड़	1100-00
188. श्री संयुक्ता जी	100-00	230. श्री टी. कृष्णा उटकुर	200-00
189. श्री लक्ष्मीदेवीजी दत्त	1000-00	231. श्री विष्णुकांत आर्य लालागुड़ा	501-00
190. श्री टी. पृथ्वीराज इन्दुर	1116-00	232. श्री लीलाधरजी वशिष्ठ	301-00
191. श्री विजयलक्ष्मी सिकन्द्राबाद	200-00	233. श्री डॉ. ए. कृष्णा जी	3000-00
192. श्री टप्पा रोशनप्पाजी उटकुर	2011-00	234. श्री वी.ए. नायुडु जी	2000-00
193. श्री पुंडलिक मन्नाईखेळी	101-00	235. श्री तोटा ओमप्रकाश जी सुष्मा	500-00
194. श्री अशोक बाबुराव लातूर	2000-00	236. श्री कुशलचन्द्रजी आर्य खंडवा	2100-00
195. श्री डी. जयराज आर्य	1116-00	237. श्री अशोक कुमार वनवारीलाल	500-00
196. श्री यज्ञमान नादीया ग्राम	200-00	238. श्री टी. कृष्णकुमार कुचीपुडी	500-00
197. श्री सुरेश कुमार मनिकोण्डा	501-00	239. श्री नरेन्द्र कुमार आर्य	100-00
198. श्री कीरे तिरुवंती शंकरय्या जी	2000-00	240. श्री जी. नरसिंहा आर्य जी	1100-00
199. श्री एन. लिंगप्पा जी महबूबनगर	1000-00	241. श्री चन्द्रपालजी	500-00
200. श्री नागेन्द्र महबूबनगर	500-00	242. श्री सूर्यनारायण जी	200-00
201. श्री अरविंद गोजे जी	1100-00	243. आर्य समाज चिटगुप्पा	2000-00
202. आर्य समाज हुमनाबाद	2100-00	244. श्री इन्दर सिंहजी भिवानी	1100-00
203. श्री ईश्वरकुमार चंढीगड	500-00	245. श्री चिप्पे बालरेड्डी जी	2100-00
204. आर्य समाज महबूबाबाद	1000-00	246. आर्य समाज मैसुर	500-00
205. श्री वेंकट एवं नारायण शिवनखेड़	200-00	247. श्री प्रभाकर राव चौहान परगी	100-00

248. श्री राजवीर वशिष्ठ टिटौली	500-00
249. श्री नारायण सिंह टिटौली	500-00
250. श्री जगवीर सिहाग जुलाणा	500-00
251. श्री नरेश आर्य जुलाणा	500-00
252. आर्य समाज देवगलनवी	2100-00
253. श्री रामचन्द्र आर्य लालागुड़ा	500-00
254. श्री सरसम रामचन्द्रा रेड्डी	1111-00
255. श्री बी. ब्रम्हय्याजी आचार्य	500-00
256. श्री आई. नरेन्द्राचार्य हनमकोण्डा	2000-00
257. आर्य समाज मुधोल	2000-00
258. श्री नंदकिशोर आर्य अजमेर	500-00
259. आर्य समाज कळंब	1100-00
260. श्री गुरुकुल रामलिंग एडशी	1100-00
261. श्री देवराव जाधवराव परभणी	100-00
262. श्री परमानंद आर्य भोपाल	200-00
263. श्री सुबेदार मेजर ओमप्रकाश शर्मा आगरा	200-00
264. श्रीमती अंजुजी नई दिल्ली	500-00
265. श्रीमती इंद्राजी वत्स	500-00
266. श्रीमती ए.लक्ष्मी जड़चर्ला	1100-00
267. श्रीमती C/o. जड़चर्ला	1000-00
268. श्री दारा नरसिम्हय्याजी जड़चर्ला	1000-00
269. श्री बी. भास्कर जी	1001-00
270. श्री सन्दीप राजु खैरताबाद	1000-00
271. श्री डी. वेंकटेश्वर जी	1000-00
272. वेदप्रचार कुटीर रहीमपुरा	1000-00
273. श्री नगरी प्रकाश जी	2500-00
274. श्री नगरी राधाकिशन जी	2001-00
275. श्री नगरी पुरुषोत्तम जी	1500-00
276. श्री नगरी विशाल जी	3000-00
277. श्री नगरी गजेन्द्र जी	2000-00
278. श्री सज्जनलाल जी	2501-00
279. श्री कृपानन्द जी	1000-00
280. श्री बी. सन्तोष जी	1100-00
281. श्री टंक प्रकाश जी सिकन्द्राबाद	3000-00
282. श्री पवार गणपती जी	1000-00
283. कु. प्राची जी	2000-00
284. श्री राकेश ठाकुर जी	3000-00
285. श्रीमती हंसाबाई जी	3000-00
286. श्री विनयसिंह जी चौहान	3000-00
287. आर्य समाज कोटा (राजस्थान)	2500-00
288. श्री चौटी नारायण जी	500-00
289. श्री चैतन्या जी	100-00
290. श्री मधुसूधन शास्त्री जी	201-00
291. श्री मल्लीकार्जुन जी	1100-00
292. चि. नैनिका जी	500-00
293. श्री विक्रम जी	1000-00
294. श्रीमती सुशीला जी आर्य	300-00
295. श्री रमेन्द्रजी गुप्ता, बिहार	2000-00
296. श्री बी. रामा स्वामी, नरेडा	500-00
297. श्री आर्य पुत्र जी	200-00
298. श्री महिपाल सिंह जी	1100-00
299. आचार्य गीता झा जी	500-00
300. श्री पृथ्वीराज जी	500-00
301. श्री गोविन्द सिंह जी भण्डारी, उत्तराखण्ड	2100-00
302. श्री हनुमनलू एल्लारेड्डी	200-00
303. आर्य समाज यज्ञपुरा	101-00
304. श्री विंगी जंगय्या जी	1100-00
305. श्री प्रद्युम्न शास्त्री जी	1600-00
306. श्री हळ्ळे प्रेमकुमार जी	1100-00
307. श्री गिरि माधव कुमार शास्त्री जी	1100-00
308. श्री पँवार अतुल्या कुमार शास्त्री जी	1100-00
309. श्री उप्पल यादगिरि जी	500-00
310. श्री बी. मल्लय्या जी	200-00
311. श्री एम. रघुनन्दन जी	100-00
312. श्री आनन्द दत्ता जी	500-00
313. श्री डी. गंगाधर जी	2500-00
314. श्री प्रदीप गुप्ता जी बोधन	2100-00
315. श्री लक्ष्मण राव गोजे बोधन	2100-00
316. श्री शंकर राव पटेल बोधन	2100-00
317. श्री जी. गंगा राजुलू बोधन	2100-00
318. श्री संजय जी बोधन	2100-00
319. श्री डी. के. गंगाधर बोधन	1500-00
320. श्री गोपी किशनजी बोधन	1500-00
321. श्री रामदासचारी बोधन	1100-00
322. श्री सी. लक्ष्मण जी	1100-00
323. श्री राम कृष्णा गौड़ जी	1100-00
324. श्री शंकर जी गौड़	1000-00
325. श्रीमती माधवी जी योगाचार्या	500-00
326. श्री दिगम्बर पटेल जी	500-00
327. श्री टी. राजेश्वर जी	500-00
328. श्री मन्चा लक्ष्मण जी	1100-00
329. श्री बद्री प्रसाद सोनी, जालना	500-00
330. श्री विभू ग्रोवर जी, उत्तराखण्ड	1100-00
331. श्री अवधेश कुमार जी, आगरा	500-00

332. श्री दामोदर वर्मा जी, बिहार	200-00
333. श्री विनय कुमार नवादा, बिहार	200-00
334. श्री एम. धर्मवीर आर्य जी, लालागुड़ा	500-00
335. श्री आर.सी. चंदेल आर्य समाज सिरोन	500-00
336. श्री अभिमन्यु खुल्लर जी	2000-00
337. श्री श्यामजी पटेल, महबूबाबाद	500-00
338. आर्य समाज ताण्डुर	2000-00
339. श्री युगल किशोर नवादा	250-00
340. श्री डी. नरसय्या जी, सीताफलमण्डी	1100-00
341. श्री निरंजन सिंह जी, मीरपेट	100-00
342. आर्य भूषण जी मुनि	1100-00
343. श्रीमती जयलक्ष्मी जी, मलकपेट	2100-00
344. श्री बाबुलाल जी आर्य भीवानी	500-00
345. श्री धर्मवीर सिंह जी, विलासपुर	500-00
346. श्री मेडा रामचन्द्रा रेड्डी जी	1116-00
347. आर्य समाज डांगनिया रायपुर	1100-00
348. श्री गोविन्द बोडेवार मुदखेड़	300-00
349. आर्य समाज कारवान	1100-00
350. श्री जोन्नल बसी रेड्डी जी	2100-00
351. गुप्तदान (दानपेटी)	270-00
352. श्री जी. वेंकटरमणा जी महबूबनगर	1900-00
353. श्री जी. शिवप्रसाद जी "	1800-00
354. श्री प्रवीण जी	1700-00
355. श्री आदिनारायण जी	1116-00
356. श्री मनुदेव जी	1000-00
357. श्री के. चन्द्रमौळी जी, श्री यादय्या गुप्ताजी	2000-00
358. श्री अशोक साखरे जी	1500-00
359. श्री आंजनेयुलु जी	516-00
360. श्री जानकी रामुलु जी	500-00
361. श्री शिवपाल जी ब्रदर्स	1000-00
362. श्री दत्ताप्रसाद जी	1000-00
363. श्री डी. रामुलु जी	501-00
364. श्रीमती अन्जनाबाई पण्डरीनाथ जी	1100-00
365. श्री राजिव कुमार चौह्वान जी, वकील	500-00
366. श्री सत्यनारायण जी	2500-00
367. आर्य समाज जाजापूर	2500-00
368. श्री कंचे जनार्धन जी	2100-00
369. श्री गोपाल गौड़ जी	2100-00
370. श्रीमती वनजा जी	225-00
371. श्रीमती तिरुपतम्मा जी	225-00
372. श्री कु. भाग्यम्मा जी	225-00
373. श्रीमती गौरी जी	225-00
374. श्रीमती यशोदा जी	225-00
375. श्री कु. सिन्धु जी	225-00
376. कु. गंगम्मा जी	225-00
377. श्री जयन्त रेड्डी जी जोन्नल	1100-00
378. श्रीमती वै. कमलम्मा जी	1000-00
379. श्री सुमन मलिक जी, वैदिक सत्संग	2100-00
380. श्री एम.एस. राव जी, वैदिक सत्संग	500-00
381. श्री सी. सत्यनारायणा जी	100-00
382. मेसर्स हनुमान ट्रेडिंग कंपनी, मलकपेट गंज	3500-00
383. श्री दादुवाई किष्टय्या एण्ड कम्पनी, मलकपेट	2100-00
384. श्री बी. विवेकानन्द जी, मलकपेट गंज	2100-00
385. श्री देवार राजेश्वर जी, संतोषनगर	2100-00
386. श्री वेंकटाचलम् जी, जिल्लेलगुड़ा	1116-00
387. डॉ. के. माधवरेड्डी जी, सैदाबाद	1000-00
388. श्री दशरथ आर्या जी, प्रेस कॉलोनी	3000-00
389. श्रीमती सुखदा जी, प्रेस कॉलोनी	1500-00
390. श्री पी.एन.वी. कोटेश्वर राव जी, संतोषनगर	101-00
391. श्रीमती पी. इन्दिरादेवी जी, संतोषनगर	2010-00
392. श्रीमती सी.एच. ऑण्डालू जी	105-00
393. श्री एन. नरसिम्हाचारी जी, संतोषनगर	2500-00
394. श्री कट्टा मल्लय्या जी, मलकपेट	2100-00
395. श्री कोनजेटी श्रीनिवास जी, मलकपेट	1000-00
396. श्री हरिकिरन जी, मीरपेट	100-00
397. श्री रामु जी, मीरपेट	110-00
398. श्री महेन्दर रेड्डी जी, शिवरामपल्ली	100-00
399. श्री दड़वाई दयानन्द जी, मीरपेट	500-00
400. श्री जी. लक्ष्मण जी, जिल्लेलगुड़ा	200-00
401. श्री बी.वी. रमणा रेड्डी जी, सैदाबाद	500-00
402. श्रीमती आयुष्मती जी, नारायणगुड़ा	201-00
403. श्री शिवासिंह जी, अलियाबाद	500-00
404. श्री जी. विद्यानन्द जी, जंगमपेट	500-00
405. श्रीमती नलिनीबाई जी, अलियाबाद	500-00
406. श्री ए. प्रदीप जयम्मा जी, अलियाबाद	501-00
407. श्री वी. पेन्टय्याजी, अलियाबाद	101-00
408. श्री पाण्डूरंगाराव जी, पवनपुरी कॉलोनी	1116-00
409. श्रीमती शन्नो देवीजी, बोईनपल्ली	500-00
410. श्री किशनलाल आर्य भोपाल	200-00

नोट : गलती से किसी दान-दाता का नाम छूट गया हो तो उसके लिए हमें खेद है । याद दिलाने पर अगले अंक में गलती सुधार कर ली जाएगी ।

आर्य प्रतिनिधि सभा के चुनाव सम्पन्न
सर्व सम्मति से ठाकुर लक्ष्मण सिंह जी प्रधान
और विट्ठल राव आर्य मंत्री निर्वाचित

आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्रप्रदेश, सुल्तान बाज़ार, हैदराबाद के चुनाव पूर्ण प्रजातांत्रिक पद्धति से दिनांक ५-२-२०१७ रविवार के दिन चुनाव अधिकारी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के यशस्वी प्रधान स्वामी आर्यवेशजी तथा सहायक चुनाव अधिकारी पं. धर्मपाल शास्त्री जी के नेतृत्व में वैदिक आश्रम कन्या गुरुकुल बेगमपेट, हैदराबाद में सम्पन्न हुआ ।

चुनाव की प्रक्रिया सभा की अंतरंग बैठक १९ जून २०१६ में लिए गए निर्णय के अनुसार सभा से संबधित समस्त आर्य समाजों को २० सितम्बर २०१६ के परिपत्र द्वारा सूचना देकर आरम्भ की गयी । अंतरंग सभा की बैठक २ अक्तुबर २०१६ तथा २० अक्तुबर २०१६ में लिए गए निर्णय अनुसार सभा का चुनाव पूर्ण वैधानिक ढंग स प्रक्रिया को पूरा करके सम्पन्न करवाने का निर्णय लिया गया । इन बैठकों में लिए गए निर्णय तथा २५ दिसम्बर २०१६ की साधारण सभा में लिए गए निर्णय अनुसार चुनाव की प्रक्रिया निम्नलिखित ढंग से तय की गयी । अधिसूचना की तिथि २२-१०-२०१६, प्रतिनिधि आवेदन पत्रों को स्वीकृत करने की अंतीम तिथि २५-१२-२०१६, सभी प्राप्त आवेदन पत्रों को १८-१२-२०१६ की अंतरंग में स्वीकृत करने के बावजूद २५-१२-२०१६ की साधारण सभा तक प्राप्त और आवेदन पत्रों को स्वीकृत करने की अनुमति ली गई ।

२५-१२-२०१६ की साधारण सभा की बैठक में विधिवत प्राप्त सभी प्रतिनिधि आवेदन पत्रों को स्वीकार किया गया ।

२-१०-२०१६, २०-१०-२०१६ और १८-१२-२०१६ की अंतरंग बैठको में लिए गए निर्णयानुसार तथा २५-१२-२०१६ की साधारण सभा की बैठक में लिए गए निर्णयानुसार चुनाव सम्पन्न करवाने के लिए सार्वदेशिक सभा के लिए नियुक्त कोर्ट कमिश्नर्स से प्रार्थना की गई । उनसे सम्भव न होने पर सार्वदेशिक सभा के अध्यक्ष की देख-रेख में करवाए जाने का निर्णय लिया गया । उसी के अनुसार कोर्ट कमिश्नर्स से आज्ञा माँगी गई पश्चात उनके निर्देशानुसार तीनों पक्षों के अध्यक्षों से अनुमति मांगी गई । तीनों में से मात्र स्वामी आर्यवेश जी प्रधान सार्वदेशिक सभा ३/५ आसफअली रोड़, रामलीला मैदान, नई दिल्ली ने मात्र चुनाव सम्पन्न करवाने के लिए अपनी सहमति दी । सभा के संविधान में प्रदत्त अधिकारों के अनुसार आर्य प्रतिनिधि सभा ने अपनी बैठकों में लिए गए निर्णयानुसार स्वामी आर्यवेश जी को चुनाव अधिकारी तथा पं. धर्मपाल शास्त्री जी को सहचुनाव अधिकारी नियुक्त कर चुनाव सम्पन्न करवाने के लिए प्रार्थना की गई ।

नामांकन पत्र प्राप्त करने की तिथि : २९-१-२०१७ प्रातः ११-०० बजे से १-०० बजे से तय की गई ।

नामांकन पत्रों की जांच की तिथि : ३०-१-२०१७ "

नामांकन पत्र वापस लेने की तिथि : ३१-१-२०१७ प्रातः ११-०० बजे से २-०० बजे तक

चुनाव की तिथि : ५-२-२०१७ प्रातः १०-०० बजे से ११-०० बजे तक

५-२-२०१७ का अधिवेशन प्रातः ८-३० बजे यज्ञ से प्रारम्भ करने का निर्णय लिया गया । यह भी निर्णय लिया गया कि आवश्यकता होने पर चुनाव हाथ उठवा करके या मतदान के द्वारा करवाया जाए ।

निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार सहचुनाव अधिकारी ने नामांकन से लेकर नामांकन पत्र वापसी तक की पूर्ण प्रक्रिया नियमानुसार बिना किसी गलती के कर ली । जाँच व नाम वापसी के बाद निर्धारित पदों से भी कम या बराबर नामांकन पत्र सही पाए जाने के कारण, निर्विरोध निर्वाचित होने की सूचना दी गई । चुनाव अधिकारी स्वामी आर्यवेशजी के द्वारा निर्वाचित अधिकारी तथा अंतरंग सदस्यों की विधिवत घोषणा ५-२-२०१७ रविवार के दिन अधिवशन की प्रक्रिया को पूरा करके की गई तथा प्रमाण स्वीकार भी कराया गया । पश्चात सभी का सम्मान भी किया गया । त्री वर्षीय सत्र अर्थात वर्ष २०१७-२०२० के लिए निम्नलिखित महानुभाव निर्विरोध निर्वाचित हुए ।

१) प्रधान - श्री ठा. लक्ष्मण सिंह जी
२) उपप्रधान - डॉ. वसुधा शास्त्री जी
३) उपप्रधान - श्री हरिकिशन जी वेदालंकार
४) उपप्रधान - श्री शिवकुमार जी
५) उपप्रधान - डॉ. सी.एच. चन्द्रय्याजी
६) उपप्रधान - श्री गुरुनारायण जी
७) मंत्री - श्री विट्ठल राव आर्य जी
८) उपमंत्री - श्री आर.रामचन्द्र कुमार जी
९) उपमंत्री - श्री पी. सत्यनारायण जी
१०) उपमंत्री - डॉ. सुनीता जी
११) उपमंत्री - श्री कृष्ण भगवान जी
१२) कोषाध्यक्ष - श्री बसीरेड्डी जी
(बाद में इन्होंने इस पद से त्याग पत्र दिया)
१३) पुस्तकाध्यक्ष - श्री बसीरेड्डी जी

१४) अंतरंग सदस्य - श्री जी. मल्लीकार्जुन जी
१५) अंतरंग सदस्य - श्री ब्रह्मानन्द रेड्डी जी
१६) अंतरंग सदस्य - श्री अरविंद कुमार शास्त्री जी
१७) अंतरंग सदस्य - श्री कृष्णदेव जी
१८) अंतरंग सदस्य - सुश्री नागम्मा जी, डॉ. सी.एच. चन्द्रय्या जी, डॉ. सुनीता जी

(डॉ. सुनीता जी और डॉ. सी.एच. चन्द्रय्या जी ने बाद में अपने अंतरंग पदों से त्याग पत्र दिया)

१९) सार्वदेशिक सभा के लिए प्रतिनिधि : १) श्री विठ्ठल राव आर्य २) ठा. लक्ष्मण सिंहजी ३) डॉ. सी.एच. चन्द्रय्या ४) श्री गुरुनारायण जी ५) श्री बी. भद्रय्या जी । अन्य दस पदों के लिए पुनः निर्वाचन करने की घोषणा की गई । इसी तरह खाली अंतरंग पदों के लिए व अन्य अधिकार पदों के लिए संविधान के अनुसार नामांकित करने का अधिकार सभा की अंतरंग को दिया गया । सभा की अंतरंग बैठक दिनांक ११-२-२०१७ को सभा प्रधान ठा. लक्ष्मण सिंह जी की अध्यक्षता में ली गई । बैठक में निम्नलिखित महानुभावों को सर्व सम्मति से नामांकित किया गया

उपमंत्री : श्री जगनमोहन जी नलगोण्डा
कोषाध्यक्ष : श्री अशोक कुमार श्रीवास्तव जी
अंतरंग सदस्य : श्री एम. सुदर्शन जी
अंतरंग सदस्य : श्री गोपालरेड्डी जी नलगोण्डा
अंतरंग सदस्य : श्री वेणुगोपाल जी वरंगल
अंतरंग सदस्य : श्री रामचन्द्र जी ज़हीराबाद
अंतरंग सदस्य : श्री के. सूर्य प्रकाश जी निज़ामाबाद
अंतरंग सदस्य : श्री वेंकट नरसय्या जी निज़ामाबाद
अंतरंग सदस्य : श्री जी. वेंकट रेड्डी जी बोधन
अंतरंग सदस्य : श्री रवीन्द्र गोजे जी बिचकुंदा
अंतरंग सदस्य : श्री सुधाकर पवार जी बिचकुंदा
अंतरंग सदस्य : श्री रमेश तम्मेवार जी मदनूर
अंतरंग सदस्य : श्री पं. गणेशकुमार जी शास्त्री चंगीचर्ला
अंतरंग सदस्य : श्री वेणुगोपालजी जड़चर्ला
अंतरंग सदस्य : डॉ. मुरलीधर राव जी महबूबनगर
अंतरंग सदस्य : श्री यस. लक्ष्मीनारायण जी चौदरगुड़ा
अंतरंग सदस्य : श्री बृहस्पति जी बोईनपल्ली
अंतरंग सदस्य : श्री धर्मवीर जी लालागुड़ा
अंतरंग सदस्य : श्री विश्वश्रवा जी लालागुड़ा
अंतरंग सदस्य : श्री मामिड़ी श्रीनिवास जी आर.पी.रोड़
अंतरंग सदस्य : श्री एस. कृष्णा जी आर.पी.रोड़
अंतरंग सदस्य : श्री जी. आंजनेयुलू कवाड़ीगुड़ा
अंतरंग सदस्य : श्री देवीदासजी चादरघाट
अंतरंग सदस्य : श्री वीरेन्द्र जी सैदाबाद
अंतरंग सदस्य : श्री डी. गोपाल जी मादन्नापेट
अंतरंग सदस्य : श्री श्रद्धानन्द जी शालीबण्डा
अंतरंग सदस्य : श्री दिनेश सिंह जी धूलपेठ
अंतरंग सदस्य : श्री नगरी धर्मपाल जी धूलपेठ
अंतरंग सदस्य : श्री सी. बालरेड्डी जी गुडिमल्कापुर
अंतरंग सदस्य : श्री रघुरामुलू जी एड्वोकेट
अंतरंग सदस्य : श्री एन. अशोक कुमार जी एड्वोकेट
अंतरंग सदस्य : डॉ. सुलोचना जी
अंतरंग सदस्य : श्री जयव्रत जी गोशामहल
अंतरंग सदस्य : श्री बी. विजय कुमारजी कुर्मागुड़ा
विशेष आमंत्रित : डॉ. मसनचनप्पा जी
विशेष आमंत्रित : श्री डॉ. विद्यानंद जी
विशेष आमंत्रित : श्री अर्जुन कुमार जायसवाल
विशेष आमंत्रित : श्री प्रदीप गुप्ता जी बोधन
विशेष आमंत्रित : श्री नागभूषणम जी बाँसवाड़ा
विशेष आमंत्रित : श्री राजेन्द्रजी गोजे बाँसवाड़ा
विशेष आमंत्रित : श्रीमती विमलम्मा जी पिटलम
विशेष आमंत्रित : श्री नारायण प्रकाश लोया महबूबाबाद
विशेष आमंत्रित : श्री जयराजजी व्यासनगर
विशेष आमंत्रित : श्री डी. नरसय्या जी सीताफलमण्डी
विशेष आमंत्रित : श्री एम.पी. राजू जी सुल्तान बाज़ार
विशेष आमंत्रित : श्री सोमनाथ जी सुल्तान बाज़ार
विशेष आमंत्रित : श्री इन्द्रवर्धन जी उमदा बाज़ार
नामांकित सदस्य : श्री सत्यनारायणजी एड्वोकेट
नामांकित सदस्य : आचार्या सविता जी
नामांकित सदस्य : आचार्या मैत्रेयी जी
नामांकित सदस्य : आचार्या ज्योतिश्री जी
नामांकित सदस्य : आचार्य केशवनारायण जी
संरक्षक सदस्य : स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती जी
संरक्षक सदस्य : श्री के.वी. रेड्डी जी
संरक्षक सदस्य : श्री डी.बी. कल्याणी जी
संरक्षक सदस्य : डॉ. टी.वी. नारायण जी
संरक्षक सदस्य : श्री क्रांतिकुमार कोरटकर जी
संरक्षक सदस्य : श्री चलवादि सोमय्या जी
संरक्षक सदस्य : श्री अनंतय्या जी
संरक्षक सदस्य : श्री एन. वेंकटेशम जी
संरक्षक सदस्य : श्री एम. पण्ढरी जी
संरक्षक सदस्य : श्री एन. कृष्णमूर्ति जी गौलिगुड़ा

(आवश्यकता अनुसार और भी महानुभावों को जोड़ा जा सकता है)

हैदराबाद में

राष्ट्रीय आर्य बुद्धिजीवी एवं विद्वत् सम्मेलन

सफलता पूर्वक सम्पन्न होने के संदर्भ में

होली की पूर्व संध्या पर

प्रान्त के विद्वानों का सम्मान समारोह एवं आर्य बंधुओं का स्नेह मिलन

वैदिक आश्रम बेगमपेट में राष्ट्रीय बुद्धिजीवी एवं विद्वत् सम्मेलन की सफलता के संदर्भ में ११ मार्च २०१७ शनिवार के दिन बृहद् यज्ञ का आयोजन कर प्रान्त के विद्वानों का, दान दाताओं का सम्मान किया गया ।

यज्ञ और सम्मान समारोह में विशेषकर पंडित धर्मपाल जी शास्त्री मेरठ उपस्थित रहे । स्थानीय विद्वानों में स्वामी ब्रह्मानंद जी सरस्वती, सुश्री माता निर्मला योग भारती जी, डॉ. मसन चेन्नप्पा जी, आचार्य भवभूती जी, श्री पं. गणेश कुमार शास्त्री जी,श्री के.वी. रेड्डी जी, आचार्या मैत्रेयी जी, आचार्या ज्योतिश्री जी, आचार्या सुनीति जी, आचार्या सविता जी, आचार्य वेदमित्र जी, डॉ. विद्यानंद जी, आचार्य विश्वश्रवा जी, आचार्य प्रद्युम्न जी, आचार्य वेदालोक जी, आचार्य मर्री कृष्णा रेड्डी जी, आचार्य अरुण जी, आचार्य वेदश्रवा जी, श्री पं. सत्यदेव जी आदि उपस्थित रहे। डॉ. वसुधा शास्त्री जी एवं अरविंद शास्त्री जी ने यज्ञ सम्पन्न करवाया । यज्ञ में चारों वेदों से संग्रहित वेदमंत्रों से राष्ट्रभृत् यज्ञ भी सम्पन्न करवाया गया । यज्ञ को सम्पन्न करवाने में पं. प्रियदत्त शास्त्री जी एवं पं. हरिकिशन वेदालंकार जी ने पूर्ण सहयोग प्रदान किया । यज्ञ के पश्चात विद्वानों के उपदेश हुए और मध्य में होली मिलन के संदर्भ में आचार्या धर्मवती जी ने बहुत ही मधुर व सुन्दर होली मिलन गीत गाया । गीत के साथ तबला की आवाज देने वाले ब्रह्मचारी ब्रह्मदेव थे । बहुत ही सुंदर ढंग से कार्यक्रम सम्पन्न हुआ इस संदर्भ में यजमान बने दम्पत्तियों का अर्थात श्रीमती धनलक्ष्मी - राजाराम जी, श्रीमान प्रवीण भार्गव जी, श्री विट्ठल रेड्डी जी, श्री जयराज जी, श्री अशोक कुमार जी एड्वोकेट और श्री अतुल जी का सम्मान किया गया । पश्चात उपस्थित सभी दान-दाताओं का सम्मान किया गया । इस अवसर पर विशेषकर निज़ामाबाद, बोधन, बाँसवाड़ा, बिचकुंदा, मदनूर, जंगमपल्ली, हसनपर्ति, गज्वेल, वेन्नाचेड़, चेंगीचर्ला, राष्ट्रपति रोड़, बोईनपल्ली, मेडीबावी, बलकमपेट, सीताफलमंडी, लालागुड़ा, सुल्तान बाज़ार, चादरघाट, सैदाबाद, कुर्मागुड़ा, धूलपेट, वैदिक बज़ार, उमदा बाज़ार, गोशामहल एवं दयालबावली तथा आर्य समाज चौदरगुड़ा, जड़चर्ला, महबूबनगर, उटकूर, नारायणपेट, मरिकल तथा आत्माकूर के अधिकारी एवं कार्यकर्ताओं ने समारोह में भाग लिया । इस अवसर पर नव निर्वाचित प्रधान टा. लक्ष्मण सिंह जी और मंत्री श्री विट्ठल राव आर्य जी का सम्मान आर्य समाज धूलपेट, बलकमपेट व समस्त आर्य समाजों के अधिकारियों ने भव्य रूप से किया । स्नेह मिलन के बाद प्रीतिभोज में सभी लोग सम्मिलित रहें ।

राष्ट्रीय बुद्धिजीवी एवं विद्वत् सम्मेलन की सफलता के लिए उत्तर भारत से पधारे समस्त संन्यासीगण, विद्वान, पुरोहित, भजनोपदेशक, नेता व कार्यकर्ता तथा प्रांतीय विद्वान व कार्यकर्ता तथा समस्त आर्य समाज के अधिकारियों को आर्य प्रतिनिधि सभा आ.प्र.-तेलंगाना और सार्वदेशिक सभा की ओर से बहुत बहुत धन्यवाद । सम्मेलन की सफलता के लिए आर्य समाजों के अतिरिक्ति कई महानुभावों ने दान देकर सहयोग प्रदान किया है अतः उन्हें भी बहुत बहुत धन्यवाद । आशा है नई शक्ति और दिशा के साथ आर्य समाज खड़ा होगा । शांति पाठ से समारोह समाप्त हुआ । - प्रो. विट्ठल राव आर्य

प्रान्त के विद्वानों का सम्मान समारोह एवं आर्यों के स्नेह मिलन तथा यज्ञ के चित्र

प्रान्त के विद्वानों का सम्मान समारोह एवं आर्यों के स्नेह मिलन तथा यज्ञ के चित्र

प्रान्त के विद्वानों का सम्मान समारोह एवं आर्यों के स्नेह मिलन तथा यज्ञ के चित्र

प्रान्त के विद्वानों का सम्मान समारोह एवं आर्यों के स्नेह मिलन तथा यज्ञ के चित्र

प्रान्त के विद्वानों का सम्मान समारोह एवं आर्यों के स्नेह मिलन तथा यज्ञ के चित्र

www.thearyasamaj.org

प्रान्त के विद्वानों का सम्मान समारोह एवं आर्यों के स्नेह मिलन तथा यज्ञ के चित्र

प्रान्त के विद्वानों का सम्मान समारोह एवं आर्यों के स्नेह मिलन तथा यज्ञ के चित्र

प्रान्त के विद्वानों का सम्मान समारोह एवं आर्यों के स्नेह मिलन तथा यज्ञ के चित्र

प्रान्त के विद्वानों का सम्मान समारोह एवं आर्यों के स्नेह मिलन तथा यज्ञ के चित्र

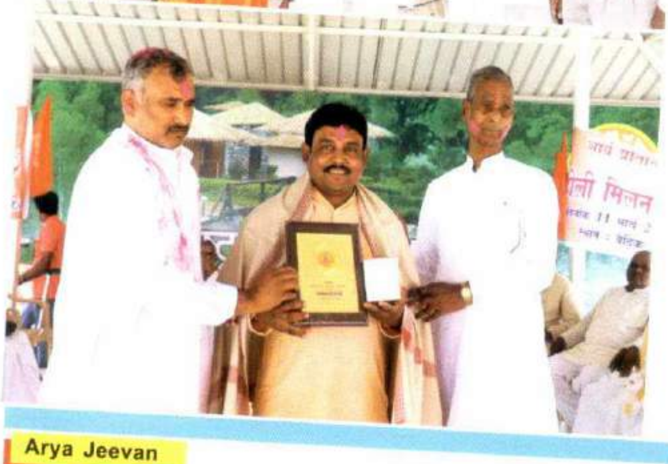

www.thearyasamaj.org

सभा प्रधान ठा. लक्ष्मण सिंह जी का सम्मान करते हुए
पं. धर्मपाल शास्त्री

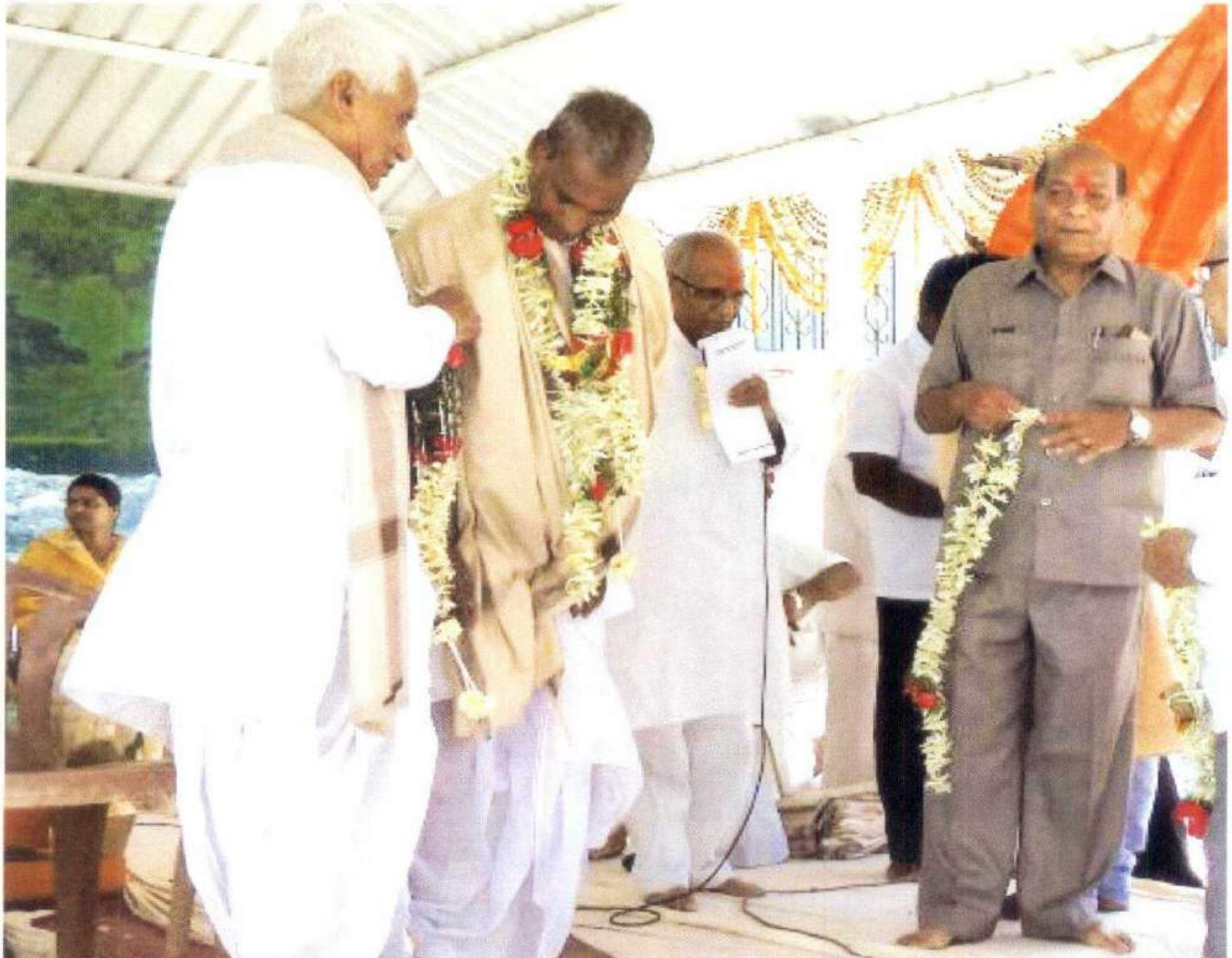

सभा मंत्री श्री विट्ठल राव आर्य जी का सम्मान करते हुए डॉ. मसन चेन्नप्पा जी, श्री शिव कुमार जी उपप्रधान डॉ. वसुधा अरविंद शास्त्री जी, एवं ठा. लक्ष्मण सिंह जी प्रधान

प्रान्त के विद्वानों का सम्मान समारोह एवं आर्यों के स्नेह मिलन तथा यज्ञ के चित्र

ध्वजारोहण

स्वामी प्रणवानन्द जी ने ध्वजारोहण कर ओ३म पताका फहराई

www.thearyasamaj.org

Date of Publication 2nd & 17th of every Month, Date of posting 3rd and 18th of every month

आर्य जीवन 18-03-2017 Registered-Reg. No. HD/783/2015-17 RNI.No.52990/93

To,

ఆర్య జీవన్

संस्कृति संरक्षण व सामाजिक परिवर्तन का संकल्प

హిందీ - తెలుగు ద్విభాషా పక్ష పత్రిక

Editor : Vithal Rao Arya M.Sc., LL.B., Sahityaratna
Arya Prathinidhi Sabha AP-Telangana,
Sultan Bazar, Hyderabad-500 095.
Phone No. 040-24753827, 66758707, Fax: 040-24557946

Annual subscription Rs. 250/- సంపాదకులు - విఠల్‌రావు ఆర్య మంత్రి సభ

आर्य प्रतिनिधि सभा के चुनाव सम्पन्न

सर्व सम्मति से ठाकुर लक्ष्मण सिंह जी प्रधान और विट्ठल राव आर्य मंत्री

राष्ट्रीय आर्य बुद्धिजीवी एवं विद्वत् सम्मेलन हैदराबाद की घोषणा

सत्यार्थ प्रकाश के सम्बन्ध में सर्वसम्मत प्रस्ताव पारित

सत्यार्थ प्रकाश का द्वितीय संस्करण ही मान्य

हैदराबाद का राष्ट्रीय आर्य बुद्धिजीवी एवं विद्वत् सम्मेलन महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा रचित कालजयी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में किसी प्रकार के बदलाव की घोर निन्दा करता है और इस प्रकार के कुकृत्य को अविलम्ब बन्द करने की मांग करता है। सम्मेलन में सत्यार्थ प्रकाश के द्वितीय संस्करण को ही मान्यता प्रदान करते हुए अन्य संस्करणों को अवैध घोषित किया गया। यह भी निश्चय किया गया कि सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार के लिए पूरे देश में विशेष अभियान चलाया जाए। सम्मेलन के संयोजक आचार्य सोमदेव शास्त्री जी द्वारा प्रस्तुत प्रस्ताव सर्वसम्मति से पास किया गया।

THE VIEWS & THE NEWS PUBLISHED IN THIS ISSUE MAY NOT NECESSARILY BE AGREEABLE TO THE EDITOR

Editor Vithal Rao Arya ● aryapratinidhisabhaaptelangana@gmail.com, acharyavithal@gmail.com, Mobile : 09849560691

సంపాదకులు : శ్రీ విఠల్‌రావు ఆర్య, ప్రధాన్, ఆర్యప్రతినిధి సభ ఆ.ప్ర.-తెలంగాణ, సుల్తాన్‌బజార్, హైదరాబాదు-95. Ph: 040-24753827, 66758707

Arya Jeevan | संपादक: श्री विट्ठलराव आर्य मंत्री सभा ने सभा की ओर से आकृति प्रेस चिक्कडपल्ली में मुद्रित करवा कर प्रकाशित किया । | Date: 18-03-2017

प्रकाशक: आर्य प्रतिनिधि सभा आं.प्र.-तेलंगाना, सुल्तान बाज़ार, हैदराबाद तेलंगाना-95.